मंगलाचरण

मंगलं भगवान्नर्हन् मंगलं सुसिद्धेश्वरः,
मंगलं श्रमणाचार्यो मंगलं साधुपाठकौ।
मंगलं जिननामानि मंगलं नवदेवता,
मंगलं शाश्वतमंत्रं मंगलं जिनशासनं॥

विनय पाठ

(दोहा)

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़े जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ॥१॥
अनन्त चतुष्टय के धनी, तुम ही हो सिरताज।
मुक्तिवधु के कंत तुम, तीन भुवन के राज॥२॥
तिहुँ जग की पीड़ा हरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार॥३॥
हरता अघ अंधियार के, करता धर्म-प्रकाश।
थिरता-पद दातार हो, धरता निजगुण रास॥४॥
धर्मामृत उर जलधि सों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण-सरोज को, नावत तिहुँ-जग-भूप॥५॥
मैं वन्दौं जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्म-बन्ध के छेदने, और न कछु उपाव॥६॥
भविजन को भव-कूप तैं, तुम ही काढ़नहार।
दीन-दयाल अनाथपति, आतम गुण भण्डार॥७॥
चिदानन्द निर्मल कियो, धोय कर्म-रज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिव-गैल॥८॥

तुम पद-पंकज पूजतैं, विघ्न-रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरैं, विष निरविषता थाय॥९॥
चक्री खगधर इन्द्र पद, मिलैं आपतैं आप।
अनुक्रम करि शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप॥१०॥
तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन॥११॥
पतित बहुत पावन किए, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे कुधी, जय जय जय जिनदेव॥१२॥
थकी नाव भवदधि विषैं, तुम प्रभु पार करेय।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥१३॥
राग सहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेंट्यो अबै, मेटो राग कुटेव॥१४॥
कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यंच अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान॥१५॥
तुमको पूजैं सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव॥१६॥
अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भव सिन्धु में, खेव लगाओ पार॥१७॥
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान्।
अपनो विरद निहारिकैं, कीजे आप समान॥१८॥
तुम्हरी नेक सुदृष्टि तैं, जग उतरत है पार।
हा! हा! डूब्यो जात हों, नेक निहार निकार ॥१९॥

जो मैं कहहूँ और सों, तो न मिटै उरझार।
मेरी तो तोसों बनी, यातैं करौं पुकार॥२०॥
वन्दों पाँचों परमगुरु, सुरगुरु वंदत जास।
विघनहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश॥२१॥
चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यों पाठ सुखदाय॥२२॥

मंगल पाठ

मंगल मूर्ति परम पद, पंच धरो नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान्॥२३॥
मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अरहन्त देव।
मंगलकारी सिद्धपद, सो वन्दों स्वयमेव॥२४॥
मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वन्दों मन-वच-काय॥२५॥
मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगलमय मंगलकरण, हरो असाता कर्म॥२६॥
या विधि मंगल करनतें, जग में मंगल होत।
मंगल 'नाथूराम' यह, भवसागर दृढ़ पोत॥२७॥

(पुष्पांजलिं...) (नौ बार णमोकार)

पूजन पीठिका

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥

ॐ ह्रीं अनादि मूल मंत्रेभ्यो नमः।(पुष्पांजलिं...)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्त मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहू मंगलं,
केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहन्त लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहू
लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहन्त सरणं पव्वज्जामि, सिद्ध सरणं
पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि,
केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं...)

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्याएत्पंच-नमस्कारं, सर्व-पापैः प्रमुच्यते॥१॥
अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं, स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः॥२॥
अपराजित-मंत्रोऽयं, सर्व-विघ्न विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु, प्रथमं मंगलं मतः॥३॥
येसो पंच णमोयारो, सव्व-पावप्प-णासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होईमंगलम्॥४॥
अर्हं-मित्यक्षरं ब्रह्म, वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्ध चक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहं॥५॥
कर्माष्टक-विनिर्मुक्तं, मोक्ष लक्ष्मी निकेतनं।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतं, सिद्धचक्रम् नमाम्यहं॥६॥
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनी-भूत-पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे॥७॥

(पुष्पांजलिं...)

पंचकल्याणक अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिनकल्याणक महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पंचकल्याणकेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचपरमेष्ठी अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिन इष्ट (नाथ) महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनसहस्रनाम अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिननाम महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तर सहस्र नामेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तत्त्वार्थसूत्र जी अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिनसूत्र महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री उमास्वामीजी विरचित तत्त्वार्थसूत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

भक्तामर स्तोत्र एवं अन्य समस्त स्तोत्र अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिनस्तोत्र महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री मानतुंगाचार्य जी विरचित भक्तामर स्तोत्राय एवं समस्त जिन-स्तोत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तीन कम नौ कोटि मुनिराज अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे मुनिराज महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिन्यून-नवकोटि-मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

श्रीमज्जिनेन्द्र-मभिवंद्य जगत्-त्रयेशं,
स्याद्वाद्-नायक-मनन्त-चतुष्टयार्हम्।
श्री मूलसंघ सुदृशां सुकृतैक हेतुः,
जैनेन्द्र यज्ञ विधिरेष मयाऽभ्यधायि॥ १॥

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

स्वस्ति त्रिलोक-गुरवे जिन-पुंगवाय,
स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।
स्वस्ति प्रकाश सहजोर्ज्जित-दृङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्-भुत-वैभवाय॥ २॥
स्वस्त्युच् छल-द्विमल-बोध-सुधा-प्लवाय,
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय।
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक-चिदुद् गमाय,
स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय॥ ३॥
द्रव्यस्य शुद्धि-मधिगम्ययथानुरूपं,
भावस्य शुद्धि-मधिकामधि-गंतुकामः।
आलम्बनानि विविधान्य-वलम्ब्य वल्गन्,
भूतार्थयज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञम्॥ ४॥
अर्हत्पुराण-पुरुषोत्तम-पावनानि,
वस्तून् यनून मखिलान्य यमेक येव।
अस्मिञ्ज्वलद् विमल-केवल-बोध-वह्नौ,
पुण्यं समग्र मह मेक मना जुहोमि॥ ५॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं...।

स्वस्ति मंगल-पाठ

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

श्रीवृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअजितः।
श्रीशम्भवः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअभिनन्दनः।
श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः।
श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः।
श्रीपुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः।
श्रीश्रेयान् स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः।
श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनन्तः।
श्रीधर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशान्तिः।
श्रीकुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः।
श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः।
श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः।

(पुष्पांजलिं...)

परमर्षि स्वस्ति मंगल-पाठ

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

नित्या-प्रकंपाद्-भुत केवलौघाः, स्फुरन्मनः पर्यय शुद्ध बोधाः।
दिव्यावधिज्ञान बल प्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ १॥
कोष्ठस्थ धान्योप-ममेक बीजं, संभिन्न संश्रोतृ पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ २॥
संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरा, दास्वाद-नघ्राण विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञान बलाद्वहन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ३॥
प्रज्ञा प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः, प्रत्येक बुद्धाः दशसर्व पूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांग निमित्त विज्ञाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ४॥

जंघानल श्रेणी फलांबु तंतु, प्रसून बीजांकुर चारणाह्वाः।
नभोऽगण स्वैर विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ५॥
अणिम्नि दक्षा कुशला महिम्नि, लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो वपु र्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ६॥
सकाम रूपित्व वशित्व मैश्यं, प्राकाम्य मन्तर्द्धि मथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघात गुण प्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ७॥
दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं, घोरं तपो घोर परा क्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोर गुणाश्चरन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ८॥
आमर्ष-सर्वौषधयस्तथाशी-र्विषाविषाः दृष्टिविषाविषाश्च।
सखिल्ल विड्जल्ल मलौषधीशाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ९॥
क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवंतो, मधु स्रवंतो ऽप्य मृतं स्रवंतः।
अक्षीण संवास महान साश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ १०॥

(इति परमर्षिस्वस्ति मंगल विधानं परि पुष्पांजलिं...)

समुच्चय पूजन

स्थापना (दोहा)

देव शास्त्र गुरु साथ में, तीर्थंकर प्रभु बीस।
सिद्धचक्र भी पूज लें, कर नमोऽस्तु नत शीश॥

(ज्ञानोदय)

है संसार मोह का दल-दल, जिनशासन का महल मिले।
देवशास्त्रगुरु बीसों जिनवर, सिद्धचक्र का कमल खिले॥
चरणकमल की करने पूजा, हृदय कमल पर बुला रहे।
कर-कमलों का आशिष पाने, कर नमोऽस्तु सिर झुका रहे॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठी जिन समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

अनादिकाल से सागर तपते, नदी बहे बादल बरसे।
फिर भी देह न शुद्ध हुई सो, रत्नत्रय जल को तरसे॥
निर्मल रत्नत्रय जल पाने, वन्दन देव शास्त्र गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर अनन्तानन्त सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

राग-द्वेष से झुलस रहे हम, तुम बिन कौन बचाएंगे।
अगर बचाया तो चंदन सम, हम शीतल हो जाएंगे॥
जिनशासन की छाया पाने, वन्दन देव शास्त्र गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर अनन्तानन्त सिद्ध-परमेष्ठिभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

जग में ऐसे जीव गुमे ज्यों, गुमे मरुस्थल में जीरा।
हमें थाम के नाथ! बचा लो, बन जाएँ अक्षत हीरा।
आत्मज्ञान का वैभव पाने, वन्दन देव शास्त्र गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर अनन्तानन्त सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

भोग वासनाओं में अब तक, शान्ति किसी को मिली नहीं।
बिना साधनाओं के जग में, आत्म कली भी खिली नहीं॥
काम भोग का राग त्यागने, वन्दन देव शास्त्र गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर अनन्तानन्त सिद्ध-परमेष्ठिभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

कितने भोजन पान किए पर, भूख मिटी ना तृप्त हुए।
फिर भी भोजन त्याग सके ना, ना निज में अनुरक्त हुए॥
भूख मिटाने निज रस पाने, वन्दन देव शास्त्र गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर अनन्तानन्त सिद्ध-परमेष्ठिभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

हम क्यों भटके हम क्यों भूले, कारण मोह अँधेरा है।
शरणागत को राह दिखा दो, फिर तो ज्ञान सबेरा है॥
मोह मिटाने दीप जला के, वन्दन देव शास्त्र गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर अनन्तानन्त सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

धूप अनल में खेकर हमको, कर्म जलाने पंथ मिलें।
राग द्वेष जल जाएंगे तो, मोक्षदातृ अरिहन्त मिलें॥
कर्म जलाने धूप चढ़ाके, वन्दन देव शास्त्र गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर जिन अनन्तानन्त सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

जड़-फल जब निस्सार लगे तो, इन्हें चढ़ाने आ धमके।
'पुण्यफला अरिहन्ता' बनके, चखें मोक्ष फल आतम के॥
दुर्लभ महामोक्ष फल पाने, वन्दन देव शास्त्र गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर अनन्तानन्त सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

अष्टम वसुधा जिनने पाई, अष्ट द्रव्य वो चढ़ा चुके।

सो अष्टम वसुधा पाने हम, अष्ट द्रव्य ले झुके-झुके॥
अर्घ्य चढ़ाकर अनर्घ बनने, वन्दन देव शास्त्र गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर अनन्तानन्त सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

देव-शास्त्र-गुरु बीस जिन, सिद्धचक्र भगवंत।
जिन्हें पृथक वा साथ में, नमोऽस्तु नन्तानन्त॥

(भुजंगप्रयात)

महादेव अरिहन्त स्वामी हमारे, नशा घातिया कर्म संसार तारें।
सभी सिद्ध स्वामी, बने मोक्षधामी, जिन्हें पूजके भक्त हों मोक्षगामी॥१॥
यही वीतरागी गुणी हैं हितैषी, नहीं कामि क्रोधी, नहीं रागि द्वेषी।
अतः शान्ति के मंत्र दे भक्त तारें, हमें क्यों विसारे, हमें शीघ्र तारें॥२॥
कहें देव अरिहन्त जो तत्त्व साँचे, उन्हें गूँथ के ग्रन्थ आचार्य वाँचें।
अनेकान्त रूपी स्याद्वाद वाणी, इसे थाम खोजें चिदानन्द प्राणी॥३॥
उपाध्याय आचार्य निर्ग्रन्थ साधू, करें संयमी रोज अध्यात्म जादू।
ये रत्नत्रयी हैं दिगम्बर विहारी, करें पार नैया विरागी हमारी॥४॥
विदेही विराजे सु-बीसों जिनेशा, हमें दर्श हों भावना है हमेशा।
यही भावना है यही कामना है, कटें पाप सारे यही प्रार्थना है॥५॥

(अर्ध ज्ञानोदय)

देव शास्त्र गुरु बीसों जिनवर, सिद्ध अनन्तानन्त भजें।
सुव्रत बनके संत दिगम्बर, मुक्तिवधू के संग सजें॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर जिन अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

देव शास्त्र गुरु प्रभु करें, विश्व शान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, देवशास्त्र गुरु राय॥

(पुष्पांजलिं...)

कृत्रिमाकृत्रिम चैत्यालय अर्घ्य

(अर्ध ज्ञानोदय)

पूज्य तीस चौबीसी वाले, सभी सात सौ बीस जिनं।
तीन लोक के तीन काल के, करके नमोऽस्तु पूजें हम॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिकाल सम्बन्धी कृत्रिमाकृत्रिम चैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं...।

(ज्ञानोदय)

कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य भक्ति का, हम सब करके कायोत्सर्ग।
आलोचन कर पाप नशाएँ, ले चैत्यालय का संसर्ग॥
यथाशक्ति हम भी तो पूजें, जगत पूज्य जिन चैत्यों को
करके नमोऽस्तु अर्घ्य चढ़ाएँ, ऋद्धि-सिद्धि हो भक्तों को॥

ॐ ह्रीं श्री कृत्रिमाकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धी जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं...।

सुबह दोपहर संध्या वेला, देव वन्दना भक्त करें।
पूर्वाचार्यों के अनुचर हों, पंच महागुरु भक्ति करें॥
कायोत्सर्ग ध्यान से करके, णमोकार की जाप करें।
वीतराग अरिहन्त सिद्ध हों, हम भी भव दुख पाप हरें॥

(पुष्पांजलिं...कायोत्सर्गं...)

❑ ❑ ❑

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहन्त सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥

तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आंसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के कांटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।

वे घर-घर हमें फिराएँ, पीछे से चाकू घौंपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥
अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहन्त प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥१॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥२॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।

यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥३॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥४॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥५॥
यही देवता हैं नवो पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥६॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥७॥
हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवो देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहन्त फिर सिद्ध हम भी॥८॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥९॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अरिहन्तों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

सिद्धपरमेष्ठी का अर्घ्य (सखी)

कर नष्ट अष्ट कर्मों को, तुमने निज नगर वसाया।
तब मुक्तिवधू ने तुमको, झट अपने गले लगाया॥
इस देह नगर की दुनियाँ, अपने सम दूर करा दो।
अर्घ्यार्पण करें नमोऽस्तु, हमको भी सिद्ध बना लो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

चौबीसी का अर्घ्य

(लय—चौबीसीवत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तीस चौबीसी का अर्घ्य

(सखी)

नहिं केवल अर्घ चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी सम्बन्धी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्रीआदिनाथ स्वामी अर्घ्य

(शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्रीअजितनाथ स्वामी अर्घ्य

(हरिगीतिका)

पर के कभी कर्त्ता बने, भोक्ता बने स्वामी बने।
अभिमान के ऊँचे हिमालय, पर वसे ऊँचे तने॥
कैसे चढ़ायें अर्घ स्वामी, अर्चना कैसे करें।
हे जिन! करो तुम भक्त निज सम, प्रार्थना इससे करें॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥

अष्टम वसुधा मिलती, अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री शान्तिनाथ स्वामी अर्घ्य (मालती)

जब-जब शान्ति विधान किया ना, तब-तब है हर क्रिया अधूरी।
जब-जब है हर क्रिया अधूरी, तब-तब न कम हो आपस की दूरी॥
जैसे ही शान्ति विधान रचाए, अंदर से मुक्ति का पाया इशारा।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में अर्पित अर्घ्य हमारा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री नेमिनाथ स्वामी अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बन्धन।
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री महावीर स्वामी अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

बाहुबली भगवान का अर्घ्य

(शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अम्बर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

सोलहकारण का अर्घ्य

(आंचलीबद्ध चौपाई)

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना करलें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पाएँ निर्वाण॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचमेरू का अर्घ्य

पंचमेरू जिनशासन पर्व, भक्त चढ़ाके जिनको अर्घ्य।
करें त्यौहार, कर लें प्रभु सा निज उद्धार॥

पंचमेरू मंदिर जिन ईश, आठ हजार छह सौ चालीस।
भजें सुर लोग, कर नमोऽस्तु पूजें हम लोग॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

नन्दीश्वर का अर्घ्य

यह अर्घ्य दिखे कमजोर, पर बलवान बड़े।
जो खींचे प्रभु की ओर, सो हम आन खड़े॥
हम दुख संकट लें जीत, निज पर राज करें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नन्दीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

दसलक्षण का अर्घ्य

(सखी)

यह अर्घ चढ़ा हो जादू, झट धर्म बना दे साधु।
ले पिछी कमण्डल डोलें, पट मोक्षमहल के खोलें॥
दसलक्षण के केशरिया, हम रंग में रंगने आए।
पूजा में करके नमोऽस्तु, दस धर्म मनाने आए॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

रत्नत्रय का अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

उपसर्गों से परीषहों से, डरकर रत्नत्रय न लिया।
हीरे जैसा मानव जीवन, कौड़ी जैसा गवां दिया॥
जड़ द्रव्यों के विकल्प तज के, चेतन धाम मिले हमको।
सो यह अर्घ्य करें हम अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी का अर्घ्य

(त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदैव्यै अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सप्तर्षि का अर्घ्य (दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारणऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य (शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य (शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

महार्घ्य

(हरिगीतिका)

अरिहन्त सिद्धाचार्य आदि, देव परमेष्ठी भजें।
रत्नत्रयी दसधर्म पूजें, भावना सोलह भजें॥
कृत्रिम अकृत्रिम बिम्ब आलय, हम भजें त्रयलोक के।
अनुयोग चारों तीर्थ पाँचों, पूजते हम ढोक दे॥
प्रभु नाम कल्याणक भजें, नन्दीश्वरा मेरु भजें।
श्री सिद्ध-अतिशयक्षेत्र पूजें, तीस चौबीसी भजें॥
मन से वचन से काय से हम, जैनशासन पूजते।
जिन पूजकर निज प्राप्ति हेतु, चेतना सुख खोजते॥

(दोहा)

सर्व पूज्य को हम भजें, आत्मसिद्धि के काज।
महा अर्घ्य ले पूजते, करके नमोऽस्तु आज॥

ॐ ह्रीं भावपूजा-भाववन्दना-त्रिकालपूजा-त्रिकालवन्दना-कृत-कारित-अनुमोदना-विषये श्री अर्हंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-रूप-पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोग-रूप-द्वादशांग-जिनागमेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि-दशलक्षण-धर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। उर्ध्वलोक-मध्यलोक-अधोलोक-संबंधिनः-त्रिलोक-स्थित-कृत्रिम-

अकृत्रिम-जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र-स्थित-विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः। पंचभरत-पंचऐरावत-दशक्षेत्र-संबंधिनः त्रिंशत्-चतुर्विंशति-संबंधिनः-सप्तशतक-विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीप-संबंधिनः-द्विपञ्चाशत्-जिनालयस्थ-पंचसहस्त्र-षट्शतक-षोडश-जिनबिम्बेभ्यो नमः। पंचमेरु-सम्बधी-अशीति जिनालयस्थ-अष्टसहस्त्र-षट्शतक-चत्वारिंशत्-जिनबिम्बेभ्यो नमः। श्रीसम्मेदशिखर-अष्टापद-गिरनार-चम्पापुर-पावापुर-कुंडलपुर- पवाजी-सोनागिरादि-सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री-मूढ़बद्री-हस्तिनापुर-तिजारा-पद्मपुरा-महावीरजी-हाटकापुरा-खंदारजी-चौबीसी-चंदेरी आदि-अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः। श्रीवृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरादि-नवदेवता-जिन-समूहेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमतं भगवंतं कृपालसंतं श्री वृषभादि-वीरांतान् चतुर्विंशति तीर्थंकर आद्यानांआद्ये जम्बूद्वीपे - भरतक्षेत्रे - आर्यखण्डे - भारतदेशे-मध्यप्रदेशे......जिलान्तर्गत.....मासोत्तममासे.....मासे..... पक्षे.... तिथौ.... वासरे....मुनि-आर्यिकाणां-श्रावकश्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं जलादि-महाऽर्घ्यं...।

शान्तिपाठ (हरीगीतिका)

हम इन्द्र चक्री तो नहीं बस, मूढ़ जैसे भक्त हैं।
धन ज्ञान वा सम्यक् क्रिया की, शास्त्र विधि से रिक्त हैं॥
बस आपके श्रद्धालु हैं हम, भक्ति को मजबूर हों।
सो गल्तियाँ होना सहज हैं, जो क्षमा से दूर हों॥
तुम तो क्षमा अवतार हो, प्रभु दान दो उत्तम क्षमा।
तो हम क्षमाधारी बनें कुछ, पुण्य पूजा से कमा॥
जब तक क्षमा का धाम निज में, ना मिले विश्राम तो।
तब तक मिले अरिहन्त शरणा, सिद्ध प्रभु का ध्यान हो॥

(दोहा)

परमेष्ठी नवदेवता, चौबीसों भगवान।
पाप हरें सुख शान्ति दें, करें विश्व कल्याण॥

(जल धारा...)

अपने उर में बह उठे, विश्व शान्ति की धार।
कर्मों के ग्रह शान्ति को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

(चंदन धारा...)

(हरीगीतिका)

अभ्यास शास्त्रों का करें, निर्ग्रन्थ गुरु की अर्चना।
हो विश्व शान्ति आत्म शान्ति, पूर्ण हो यह प्रार्थना॥
हों रोग ना व्याधि किसी को, खेद ना दुख कष्ट हों।
मौसम सदा अनुकूल होवे, जीव ना पथ भ्रष्ट हों॥

(दोहा)

परमेष्ठी का मंत्र जो, महामंत्र णमोकार।
हम सब मिलकर अब यहाँ, मत्र जपें नौ बार॥

(पुष्पांजलिं... कायोत्सर्गं...)

विजर्सन पाठ

ज्ञान और अज्ञान से, रही भूल जो नाथ।
आगम-विधि वो पूर्ण हो, पाकर तेरा हाथ॥
मंत्रादिक से हीन मैं, नहिं पूजन का ज्ञान।
मुझे क्षमा कर दीजिये, चरण शरण का दान॥
शीश झुकाऊँ आज मैं, हो पूजा सम्पन्न।
पाप हरो मंगल करो, करो मुझे प्रभु धन्य॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः अर्हदादि परमेष्ठिनः पूजन विधिं विसर्जनं करोमि। अपराध क्षमापणं भवतु। (कायोत्सर्गं...)

❑ ❑ ❑

सिद्धभक्ति (प्राकृत गाथा)

असरीरा जीवघणा, उवजुत्ता दंसणेय णाणेय।
सायार मणायारा, लक्खणमेयं तु सिद्धाणं॥
मूलोत्तर पयडीणं, बन्धोदयसत्त-कम्म उम्मुक्का।
मंगलभूदा सिद्धा, अट्ठगुणा तीद संसारा॥
अट्ठ वियकम्म वियला, सीदीभूदा णिरंजणा णिच्चा।
अट्ठ गुणा किदकिच्चा, लोयग्गणिवासिणो सिद्धा॥
सिद्धा णट्ठट्ठ मला, विसुद्ध बुद्धीय लद्धि सब्भावा।
तिहुअणसिर-सेहरया, पसियंतु भडायरा सव्वे॥
गमणागमण विमुक्के, विहडियकम्मपयडि संघारा।
सासह सुह संपत्ते, ते सिद्धा वंदिमो णिच्चं॥
जय मंगल भूदाणं, विमलाणं णाणदंसणमयाणं।
तइलोइसेहराणं, णमो सदा सव्व सिद्धाणं॥
सम्मत्त-णाणदंसण-वीरिय सुहुमं तहेव अवगहणं।
अगुरुलघु मव्वावाहं, अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं॥
तवसिद्धे णयसिद्धे, संजमसिद्धे चरित्रसिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य, सिद्धे सिरसा णमस्सामि॥

इच्छामि भंते! सिद्धभत्तिकाउस्सग्गोकओ तस्सालोचेउं सम्मणाण सम्मदंसण सम्मचरित्त जुत्ताणं अट्ठविह कम्म-विप्पमुक्काणं अट्ठगुण-संपण्णाणं उड्ढलोयमत्थयम्मि पइट्ठियाणं तवसिद्धाणं णयसिद्धाणं संजमसिद्धाणं चरित्तसिद्धाणं अतीताणागदवट्टमाणकालत्तय सिद्धाणं सव्वसिद्धाणं णिच्चकालं अंचेमि पुज्जेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बेहिलाओ सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसम्पत्ति होउ मज्झं।

मंगलाचरण

(विष्णु)

ओम् नमः सिद्धेभ्यः। ओम् नमः सिद्धेभ्यः। -४
श्री जिन शासन में परमेष्ठी, पाँचो निज स्वादु।
श्री अरिहन्त सिद्ध आचारज उपाध्याय साधु॥
जिसमें श्री अरिहन्त सिद्ध जी देव कहाते है।
फिर भी श्री अरिहन्त प्रभु जी तीर्थ चलाते हैं॥ ओम्...
विश्व तत्त्व के जो ज्ञाता हैं, मोक्ष मार्ग नेता।
रोग शोक भय दुख संकट व कर्मो के भेत्ता॥
छ्यालीस मूलगुणों के धारी समवसरण स्वामी।
णमोकार में प्रथम पूज्य हैं परमेष्ठी ध्यानी॥ ओम्...
यद्यपि दूजे परमेष्ठी हैं फिर भी हम पहले।
ओम् णमो अरिहन्ताणं को जपकर करे भले॥
तीन काल के तीन लोक के जिनवर अरिहन्ता।
श्री अरिहन्तचक्र विधान से पूजे भगवंता॥ ओम्...
जिसको कोई शरण न मिलती कष्टों ने घेरा।
रोग संकटों ने जीवन में डाला हो डेरा॥
तो न डरो न धर्म तजो रे, प्रभु अरिहन्त भजो।
तो छोटे मुँह बड़ी बात क्या, खुद अरिहन्त बनो॥ ओम्...
श्री अरिहन्तचक्र की महिमा, पूरी कौन कहे।
पर जिनशासन का अनुयायी, कैसे मौन रहे॥
सो यह महा अर्चना करके, यशधन प्राप्त करें।
'सुव्रत' विद्यासागर भजकर, कर्म समाप्त करें॥

(पुष्पांजलिं...)

===

विधान प्रारम्भ

यंत्र पूजन

स्थापना (दोहा)

मंगल उत्तम शरण हैं, पंच परम भगवान।
श्री अरिहन्त विधान को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

(ज्ञानोदय)

घाति विजेता जय अरिहन्ता, सिद्ध सिद्धि सम्राट हुए।
जिनशासन की शान श्रमण मुनि, भजकर अपने ठाठ हुए॥
आतम-रत्नों से झिलमिल ये, दुख चिन्ता के मेघ हरें।
श्री अरिहन्तचक्र विधान को, नमोऽस्तु हम सिर टेक करें॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहन्तचक्रे विनायकयंत्र अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी/चाल)

प्रभु ज्ञान सुधा की धारा, संसार सुखा दे खारा।
अरिहन्तचक्र परमातम, हम करें नमोऽस्तु वन्दन॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहन्तचक्रे विनायकयंत्रेभ्यो जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

प्रभु छाँव अनाकुल पाए, हम ताप मिटाने आए।
अरिहन्तचक्र परमातम, हम करें नमोऽस्तु वन्दन॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहन्तचक्रे विनायकयंत्रेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

प्रभु ने की आत्म प्रतिष्ठा , हम चाहें अक्षय निष्ठा।
अरिहन्तचक्र परमातम, हम करें नमोऽस्तु वन्दन॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहन्तचक्रे विनायकयंत्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

चारित्र हार ज्यों पहना, सो मुक्ति हुई नत नयना।
अरिहन्तचक्र परमातम, हम करें नमोऽस्तु वन्दन॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहन्तचक्रे विनायकयंत्रेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

तुम बने रसिक आतम के, वह चखने हम आ धमके॥
अरिहन्तचक्र परमातम, हम करें नमोऽस्तु वन्दन॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहन्तचक्रे विनायकयंत्रेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

प्रभु आतम दीप जलाएँ, दीवाली भक्त मनाएँ।
अरिहन्तचक्र परमातम, हम करें नमोऽस्तु वन्दन॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहन्तचक्रे विनायकयंत्रेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं...।

प्रभु कर्म बीज को झौंके, हम जीवन तुमको सौंपे॥
अरिहन्तचक्र परमातम, हम करें नमोऽस्तु वन्दन॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहन्तचक्रे विनायकयंत्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

रत्नत्रय फल के गुच्छे, तुम सम पाएँ हम बच्चे।
अरिहन्तचक्र परमातम, हम करें नमोऽस्तु वन्दन॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहन्तचक्रे विनायकयंत्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

तुम आतम अर्घ्य सजाए, हम भी उस पर ललचाए।
अरिहन्तचक्र परमातम, हम करें नमोऽस्तु वन्दन॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहन्तचक्रे विनायकयंत्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अर्घ्यावली

(जोगीरासा)

भवसागर में डूबे जन के, तारण तरण बचैया।
मोक्ष महल तक जो पहुँचाते, अर्हत् राम रमैया॥
ऐसे प्रभु अरिहन्त पूज के, विधान हम विस्तारें।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, स्वामी हमको तारें॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहन्तचक्रे अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१॥

कर्म हनन कर जगत भ्रमण तज, चेतन रूप सजाए।
तभी अष्ठ गुण व्यवहारिक पा, निश्चय अनन्त पाए॥

चित् चैतन्य सिद्ध प्रभु भज के, विधान हम विस्तारें।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, स्वामी हमको तारें॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहन्तचक्रे सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥२॥

मूलगुणों से जो श्रृंगारित, आत्म किले में सोहें।
शिक्षा दीक्षा दण्ड दान दें, फिर भी जग को मोहें॥
श्री आचार्य पूज कर अब तो, विधान हम विस्तारें।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, स्वामी हमको तारें॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहन्तचक्रे आचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥३॥

अंगपूर्व का ज्ञान दीप ले, अघ अज्ञान मिटाते।
शंका की लंका को ढहकर, आतम नगर वसाते॥
उपाध्याय निर्ग्रंथ पूजकर, विधान हम विस्तारें।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, स्वामी हमको तारें॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहन्तचक्रे उपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥४॥

जिनशासन के पता पताका, शुद्धातम को ध्याएँ।
चलते फिरते तीर्थ सभी पर, शान्ति सुधा बरसाये।
सर्व साधुओं की पूजा कर, विधान हम विस्तारें।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, स्वामी हमको तारें॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहन्तचक्रे साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥५॥

(हाकलिका)

जग में पहले मंगल जो, हरते पाप अमंगल वो।
मंगलमय अरिहन्त नमो, करके नमोऽस्तु सुखी बनो॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहन्तचक्रे अर्हन्मंगलाय अर्घ्यं...॥६॥

हरें कर्म का जो दलदल, भक्तों का करते मंगल।
मंगलमय प्रभु सिद्ध नमो, करके नमोऽस्तु शुद्ध बनो॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहन्तचक्रे सिद्धमंगलाय अर्घ्यं...॥७॥

सर्व साधु पाठक सूरि, परम दिगम्बर धर्म धुरी।
मंगलमय मुनि साधु नमो, करके नमोऽस्तु गुणी बनो॥
ॐ ह्रीं श्री अरिहन्तचक्रे साधुमंगलाय अर्घ्यं...॥८॥

धर्म केवली प्रणीत जो, वत्थु सहावो धर्म भजो।
अंतिम मंगल नमो नमो, करके नमोऽस्तु स्वस्थ बनो॥
ॐ ह्रीं श्री अरिहन्तचक्रे केवलिप्रज्ञप्तधर्ममंगलाय अर्घ्यं...॥९॥

उत्तम में सर्वोत्तम जो, हरते सभी अनुत्तम वो।
लोकोत्तम अरिहन्त नमो, करके नमोऽस्तु श्रेष्ठ बनो॥
ॐ ह्रीं श्री अरिहन्तचक्रे अर्हल्लोकोत्तमाय अर्घ्यं...॥१०॥

लोक शिखर के जो वासी, हम सब भी हैं प्रत्याशी।
लोकोत्तम प्रभु सिद्ध नमो, करके नमोऽस्तु सिद्ध बनो॥
ॐ ह्रीं श्री अरिहन्तचक्रे सिद्धलोकोत्तमाय अर्घ्यं...॥११॥

मुद्रा धरें दिगम्बर जो, चलते मुक्ति स्वयंवर को।
अंतिम उत्तम साधु नमो, करके नमोऽस्तु शांत बनो॥
ॐ ह्रीं श्री अरिहन्तचक्रे साधुलोकोत्तमाय अर्घ्यं...॥१२॥

धर्म केवली प्रणीत जो, चारित्तं खलु धम्मो वो।
लोकोत्तम जिन धर्म नमो, करके नमोऽस्तु धर्मि बनो॥
ॐ ह्रीं श्री अरिहन्तचक्रे केवलिप्रज्ञप्तधर्मलोकोत्तमाय अर्घ्यं...॥१३॥

शरणों के हैं शरणा जो, हरें हमारी भ्रमणा वो।
प्रथम शरण अरिहन्त नमो, करके नमोऽस्तु शिष्य बनो॥
ॐ ह्रीं श्री अरिहन्तचक्रे अर्हत्शरणाय अर्घ्यं...॥१४॥

नन्त गुणी शुद्धातम जो, साँची शरण वही समझो।
सिद्धालय के सिद्ध नमो, करके नमोऽस्तु भक्त बनो॥
ॐ ह्रीं श्री अरिहन्तचक्रे सिद्धशरणाय अर्घ्यं...॥१५॥

सर्व साधु पाठक आचार्य, यथाजात गुरु तारण हार।
सत्य शरण मुनि साधु नमो, करके नमोऽस्तु संत बनो॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहन्तचक्रे साधुशरणाय अर्घ्यं...॥१६॥

'धम्मो दया विसुद्धो' जो, शरण सहायी हमको हो।
अंतिम शरणा धर्म नमो, करके नमोऽस्तु शिष्ट बनो॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहन्तचक्रे केवलिप्रज्ञप्तधर्मशरणाय अर्घ्यं...॥१७॥

पूर्णार्घ्य

(सोरठा)

पंच परम परमेष्ट, मंगल उत्तम हैं शरण ।
पर्व प्रतिष्ठा श्रेष्ठ, करने पड़ते हम चरण ॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहन्तचक्रे अर्हत्परमेष्ठिप्रभृतिधर्मशरणांत सप्तदश-जिनाधीशाय पूर्णार्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

पंच मंगलोत्तम शरण, प्रभु अरिहन्त श्रीश।
ऋद्धीश्वर जिनबिम्ब के, गुण गाएँ नत शीश॥

(जोगीरासा)

श्री अरिहन्त सिद्ध आचारज, उपाध्याय मुनि ध्याएँ।
पूज्य परम पद पाँचों ध्या के, कष्ट मिटें सुख पाएँ॥
चारों मंगल उत्तम शरणा, भव से हमें बचाएँ।
त्रैकालिक चौबीस जिनेश्वर, हमको पार लगाएँ॥१॥

सीमंधर आदिक प्रभु बीसों, करें विदेही ध्यानी।
दीक्षा दे आचार्य सँभालें, पाठक कर दें ज्ञानी॥
धर्म धुरंधर पूर्ण दिगम्बर, ऋद्धीश्वर मुनि साधु।

अकृत्रिम जिनबिम्ब जिनालय, करते हम पर जादू॥२॥
चौबीसों के गणधर सब मुनि, हमको दिए सहारे।
जिनवाणी मैया की नैया, हमको पार उतारे॥
धर्मज्ञान से मोक्ष धाम की, हमको मिले सवारी।
श्री अरिहन्तचक्र के द्वारा, सुख पाएँ अति भारी॥३॥
करें विनायक यंत्र अर्चना, शुद्धि विशुद्धि बढ़ाएँ।
श्री अरिहन्तचक्र विधान कर, निजी प्रतिष्ठा पाएँ॥
सिद्धों जैसी लोक शिखर पर, करें प्रतिष्ठित आतम।
इसी भावना से 'मुनिसुव्रत', पूज रहे परमातम॥४॥

(दोहा)

दे अरिहन्तचक्र हमें, आत्मशक्ति निज ज्ञान।
भजें विनायक यंत्र हम, करके नमोऽस्तु ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहन्तचक्रे अर्हत्परमेष्ठिप्रभृतिधर्मशरणांत सप्तदश-जिनाधीशाय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(हरीगीतिका)

अरिहन्तचक्र विधान कर जो, यंत्रमय पूजा करें।
वो रोग भय दुख पाप हरके, शान्ति से झूमा करें॥
सुख सम्पदा तज कर विभावी, चेतना मुक्ति वरें।
'सुव्रत' तभी कल्याण हेतु, शुद्धि को भक्ति करें॥

(पुष्पांजलिं...)

===

विधान अर्घ्यावली

प्रथम पूजन अर्घ्य

(सखी)

हम जिस जिस को अपनाये, दुख-दर्द उसी से पाए।
पर राग मोह तो देखो, हम चेतन रत्न गवांए॥
अरिहन्त शरण अब पा के, चरणों में अर्घ्य चढ़ा के।
कुछ अपनापन सा झलका, चरणों में शीश झुका के॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं अष्टगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

द्वितीय पूजन अर्घ्य

(आंचलीबद्ध चौपाई)

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना करलें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पाएँ निर्वाण॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं षोडशगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

तृतीय पूजन अर्घ्य

(हरिगीतिका)

संसार की आसक्तियों से, जीव सारे त्रस्त हैं।
अरिहन्त प्रभु की भक्तियों से, भक्त होते मुक्त हैं॥
अरिहन्त प्रभु सम मुक्त हों सो, अर्घ्य सौपें आज हम।
बत्तीस इन्द्रों से सुपूजित, पूज लें अरिहन्त हम॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं द्वात्रिंशद्गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

चतुर्थ पूजन अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

नग्न दिगम्बर ऋषियों के बिन, रत्नत्रय-जिनशासन क्या।
जिनशासन बिन शुद्धातम सुख, किसके पाया कहो सखा॥
अतः सभी दरबार छोड़कर, अनर्घ तीरथ खोज रहे।
चौंषठ ऋद्धि ऋषिराजों को, करके नमोऽस्तु पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं चतुषष्टि-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचम पूजन अर्घ्य

(जोगीरासा)

अरिहन्तों बिन जिनशासन का, रथ न बढ़ेगा आगे।
हम भी जिस पर- सवार होने, पीछे-पीछे भागे॥
अरिहन्तों का शासन पाने, अर्घ्य चढ़ाएँ प्यारा।
अरिहन्तों को करना नमोऽस्तु, है सौभाग्य हमारा॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं अष्टाविंशत्यधिकशतगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

षष्ठम पूजन अर्घ्य

(शंभु)

अरिहन्तों के बेटे हम हैं, अतः करें उनकी सेवा।
सो प्रसन्न होकर स्वामी को, हमें सम्पदा दे मेवा॥
हम अनाथ हमको स्वीकारो, अर्घ्य चढ़ा हम पूज रहे।
अरिहन्तों को करके नमोऽस्तु, जय जयकारे गूँज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं षट्पञ्चाशदधिकद्विशतगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सप्तम पूजन अर्घ्य

(शद्ध गीता)

प्रभु हम अर्घ्य बन जाएँ, चरण बस आप दे देना।
भगत भव पार हो जाएँ, शरण बस आप दे देना
यही बस प्रार्थना सुन लो, इसी से गीत गाते हैं।
करें सादर नमोऽस्तु हम, प्रभु अरिहन्त ध्याते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं द्वादशाधिक-पंचशतगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

अष्टम पूजन अर्घ्य

(जोगीरासा)

इस दुनियाँ में प्रभु से बढ़कर, प्रभु के नाम सहारे।
उसका होगा बाल न बाँका, जो प्रभु नाम पुकारे॥
प्रभु का नाम न छूटे चाहे, प्राण निकलते जाएँ।
सहस्रनाम को करके नमोऽस्तु, सादर अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं चतुर्विंशत्यधिकसहस्त्रगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

प्रथम पूजन

स्थापना (शंभू)

अरिहन्त प्रभु! अरिहन्त प्रभु!, हो समवसरण आसीन तुम्हीं।
हे! वीतराग सर्वज्ञ प्रभु, हितकारी कमलासीन तुम्हीं॥
सो मुक्तिवधू आमंत्रण दे, पर हम तो पूजा रचा रहे।
दुख दर्द हरो सुख शान्ति करो, हम नमोऽस्तु कर सिर झुका रहे॥

(दोहा)

नमोऽस्तु कर जिनधर्म को, सिद्ध प्रभु को ध्याएँ।
अरिहन्तचक्र की अर्चना, हम तो सादर गाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं अष्टगुणी अरिहन्तचक्र अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

ओ! समवसरण के स्वामी, शुद्धात्म सिद्ध आगामी।
हरो जन्म मरण की पीड़ा, हम जल से पूजें ज्ञानी॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं अष्टगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

प्रभु परम पिता कहलाए, संसारी आश्रय पाए।
करो चिन्ता दूर हमारी, हम चंदन चरण चढ़ाए॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं अष्टगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

अरिहन्त देव हैं अक्षय, जो इनकी बोले जय-जय।
वे अक्षत पुंज चढ़ाके, अरिहन्त बनें खुद अक्षय॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं अष्टगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

अध्यात्म बाग लहराए, चैतन्य चिदातम पाए।
अरिहन्त समान खिलें हम, सो प्रासुक पुष्प चढ़ाए॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं अष्टगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

ओ! आतम रस के स्वादु, क्या कर डाले प्रभु जादू।
नैवेद्य चढ़ाकर चाहें, निज रस बनकर हम साधु॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं अष्टगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

कैवल्य ज्ञान जो चमका, सो काम रहा क्या तम का।
अब भक्त दीप यह दमका, बस महल दिखे आतम का॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं अष्टगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

अरिहन्त सिद्ध के बेटे, शुद्धात्म किले में बैठे।
तो कर्म शत्रु घबराए, हम धूप चढ़ा सिर टेकें॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं अष्टगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

अरिहन्त अवस्था पाई, फलदान हुआ सुखदाई।
फिर मुक्तिवधू झट आई, वरमाला कर शरमाई॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणंअष्टगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

हम जिस जिस को अपनाये, दुख दर्द उसी से पाए।
पर राग मोह तो देखो, हम चेतन रत्न गवांए॥
अरिहन्त शरण अब पा के, चरणों में अर्घ्य चढ़ाके।
कुछ अपनापन सा झलके, चरणों में शीश झुकाके॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं अष्टगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

अर्घ्यावली

तीर्थंकरकेवली (जोगीरासा)

पाँच तीन दो कल्याणक व, समवसरण के स्वामी।
जिनशासन के धर्म प्रवर्तक, प्रभु परमातम ज्ञानी॥
तीर्थंकर अरिहन्त केवली, भक्तों को स्वीकारें।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, स्वामी हमको तारें॥

ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थंकर केवली अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१॥

सामान्यकेवली

जिनके हुए न कल्याणक पर, बने केवली जो हैं।
घातिकर्म के पूर्ण विजेता, गन्धकुटी में सोहें॥
तीर्थंकर सामान्य केवली, चित् चैतन्य निहारें।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, स्वामी हमको तारें॥

ॐ ह्रीं अर्हं सामान्य केवली अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२॥

अंतःकृतकेवली

उपसर्गों के होने पर जब, मृत्यु निकट आ जाए।
तब लघु अंतर्मुहूर्त में यदि, ज्ञान ज्योति जल जाए॥
वो अंतःकृत हुए केवली, निज आतम श्रृंगारें।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, स्वामी हमको तारें॥

ॐ ह्रीं अर्हं अंतःकृत केवली अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३॥

उपसर्गकेवली

उपसर्गों को सहकर जो मुनि, बनते केवलज्ञानी।
तत्त्व देशना देकर फिर वो, बनते आतम ध्यानी॥
वो अरिहन्त उपसर्ग केवली, कष्ट हमारे टारें।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, स्वामी हमको तारें॥

ॐ ह्रीं अर्हं उपसर्ग केवली अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४॥

मूककेवली

साधक बनकर मौन ध्यानकर, केवलज्ञान जिन्हें हो।
दिव्यध्वनि ना खिरती चाहे, शिव निर्वाण उन्हें हो॥
वो अरिहन्त मूककेवली, ज्ञान ज्योति उजियारें।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, स्वामी हमको तारें॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूक केवली अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५॥

अनुबद्धकेवली

तीर्थंकर या अन्य केवली, जिस दिन हो निर्वाणी।
अगर अन्य साधक मुनि उस दिन, होते केवलज्ञानी॥
बिन अंतर अनुबद्ध केवली, लोकालोक निहारें।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, स्वामी हमको तारें॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनुबद्ध केवली अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६॥

समुद्घातकेवली

आयु कर्म को छोड़ अन्य को, आयु तुल्य कर पाना।
आत्म प्रदेशों को फैलाकर, कर्म समान बनाना॥
समुद्घात अरिहन्त केवली, दे दो मोक्ष बहारें।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, स्वामी हमको तारें॥

ॐ ह्रीं अर्हं समुद्घात केवली अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७॥

अननुबद्धकेवली

मोक्ष किसी को हो जाने पर, अन्य केवली जो न हुए।
अगले दिन यदि हुए केवली, अंतर पढ़कर वही हुए ॥
अननुबद्ध अरिहन्त केवली, सम्यक् धर्म संवारें।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, स्वामी हमको तारें॥

ॐ ह्रीं अर्हं अननुबद्ध केवली अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८॥

पूर्णार्घ्य

सभी केवली अरिहन्ता प्रभु, जिनशासन के तीरा।
चिदानन्द चैतन्य चिदातम, सचमुच ये तो हीरा॥
हम जैसे पत्थर को परखो, और बना लो हीरा।
जैसे भव से आप तिरे हो, हमें तिरा दो तीरा॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं अष्टगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

(जाप्य मंत्र)

ॐ ह्रीं श्री अरिहन्तचक्रेभ्यो नमः। अथवा
ॐ ह्रीं णमो अरिहन्ताणं। अथवा **ॐ ह्रीं अर्हं नमः।**

जयमाला (दोहा)

मंगल उत्तम शरण हैं, प्रभु अरिहन्त महान।
प्राप्त दशा अरिहन्त हो, अतः करें गुणगान॥

(शेर चाल)

जय जय श्री अरिहन्त देव नाथ हमारे।
जय घातिया को घात सकल विश्व उवारें॥
जिनका स्वभाव देख के हम भक्त हो गए।
अपना विभाव नाशने अनुरक्त हो गए॥१॥
जो पिछले जन्म भावना सोलह विचार के।
बाँधे थे पुण्य कर्म प्रभु पद निहार के॥
फिर गर्भ जन्म तपो ज्ञान मोक्ष के महा।
होते है पाँच कल्याणक पर्व भी यहाँ॥२॥
किन्तु जिनके पंच-पंच होत न कल्याण।
वो केवली सामान्य होते भक्त जन के प्राण॥
कल्याण जिनके दो या तीन पर्व हो रहे।
सो गर्भ जन्म होते न आगे के हो रहे॥३॥

वैराग्य जब हुआ तो केशलौंच हो गए।
संसार भोग त्याग नग्न संत हो गए॥
कैवल्य जब हुआ तो गंधकुटी लग गई।
फिर दिव्यध्वनि खिरी धर्म सभा सज गई॥४॥
हम धर्मसभा की कथाएँ कह न सकेंगे।
जिनवर श्री सामान्य केवली को भजेंगे॥
छ्यालीस मूलगुणी तो अरिहन्त हो गए।
हर कर्म नशा दिए प्रभु सिद्ध हो गए॥५॥
श्री सिद्ध प्रभु लीन हुए आत्म तत्त्व में।
सो तीन काल तीन लोक लीन भक्ति में॥
अरिहन्त देव जैन धर्म के चिराग हैं।
जो इनकी करें भक्ति बनते वीतराग हैं॥६॥

(ज्ञानोदय)

समुद्घात अनुबद्ध अंतकृत, मूक तथा उपसर्गजयी।
प्रभु सामान्यकेवली हैं जो, सात तरह के भव विजयी॥
पाँच तीन दो कल्याणक के, श्री अरिहन्त जिनेश्वर जी।
'सुव्रत' को अरिहन्त शरण लो, करले मुक्ति स्वयंवर भी॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं अष्टगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

अरिहन्तचक्र स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, अरिहन्तचक्र जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

द्वितीय पूजन

स्थापना (शंभू)

अरिहन्त प्रभु! अरिहन्त प्रभु!, हो समवसरण आसीन तुम्हीं।
हे! वीतराग सर्वज्ञ प्रभु, हितकारी कमलासीन तुम्हीं॥
सो मुक्तिवधू आमंत्रण दे, पर हम तो पूजा रचा रहे।
दुख दर्द हरो सुख शान्ति करो, हम नमोऽस्तु कर सिर झुका रहे॥

(दोहा)

सोलहकारण भावना, भव्य जीव जो भाएँ।
तीर्थंकर वो हम भजें, कर नमोऽस्तु गुण गाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं षोडशगुणी अरिहन्तचक्र अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(आंचलीबद्ध चौपाई)

जल धोता मिथ्यामल गाँव, देता रत्नत्रय का गाँव।
अतः ले नीर, भवसागर तैरें बन वीर।
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं षोडशगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

चंदन हरता तन का ताप, पथ दे हर ले भव संताप।
अतः ले गन्ध, पाएँ संयम परमानन्द॥ भजें...

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं षोडशगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

क्षत विक्षत में कर विश्वास, धर न सके अक्षय संन्यास।
अतः ले पुंज, हम भी पाए आतम कुंज॥ भजें...

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं षोडशगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

विषयों की नित उड़ती धूल, सो कर बैठे कामी भूल।
अतः ले फूल, विषय भोग के त्यागें शूल॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं षोडशगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यः कामबाण विध्वंसानाय पुष्पाणि...।

बिन विवेक हम कर आहार, दुखी हुए हो कर बीमार।
अतः नैवेद्य, भेंट करें बनने निज वैद्य॥ भजें...

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं षोडशगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

भेद ज्ञान के खोलें नैन, सो हम करें आरती जैन।
मिटे अन्धयार, दीपों वाला हो त्यौहार॥ भजें...

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं षोडशगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

शुद्ध भाव तो मिल न पाएँ, शुभ भावों पर हम ललचाएँ।
अतः ले धूप, खे महकाएँ चिन्मय रूप॥ भजें...

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं षोडशगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

विष फल है सारा संसार, जिसे भोगकर हों लाचार।
अतः फल भेंट, पूजा कर पाएँ निज भेंट॥ भजें...

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं षोडशगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना करलें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पाएँ निर्वाण॥ भजें...

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं षोडशगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अर्घ्यावली (दोहा)

देव शास्त्र गुरु पूज के, सम्यग्दर्शन होय।
विश्व शान्ति से शुद्ध कर, दर्शनविशुद्धि होय॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि-भावना-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१॥

गुणियों का सम्मान ही, धर्ममहल आधार।
यही विनय सम्पन्नता, मोक्षमहल का द्वार॥

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता-भावनागुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२॥

सप्तशील व्रत हैं जहाँ, वहाँ झुके संसार।
निरतिचार यह शील व्रत, है सुख का भण्डार॥

ॐ ह्रीं श्री निरतिचार शीलव्रत-भावनागुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३॥

सदा ज्ञान अभ्यास जो, करें आत्म का ज्ञान।
अभीक्ष्णज्ञानोपयोग ये, करे स्व-पर कल्याण॥

ॐ ह्रीं श्री अभीक्ष्णज्ञानोपयोग-भावनागुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४॥

जगत दुखों से जो डरे, मुनि बन बने जिनेश।
यही भाव संवेग है, सुख दे हमें विशेष॥

ॐ ह्रीं श्री संवेग-भावनागुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५॥

यथाशक्ति से त्याग कर, जो करते निज दान।
मिलें रत्न निधियाँ उन्हें, वो बनते भगवान्॥

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्त्याग-भावनागुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६॥

यथाशक्ति से तप तपें, इच्छा करें निरोध।
बारह तप से कर्म हर, कर लें आतम शोध॥

ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्तप-भावनागुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७॥

नग्न दिगम्बर साधु के, करे विघ्न जो दूर।
साधु समाधि है यही, सुख यश दे भरपूर॥

ॐ ह्रीं श्री साधुसमाधि-भावनागुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८॥

मुनि-सेवा करना सदा, चर्या में सहयोग।
वैयावृत्यकरण यही, बने मुक्ति के योग॥

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्यकरण-भावनागुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९॥

अरिहन्तों की अर्चना, भाव भक्ति गुणगान।
अर्हद् भक्ति है यही, वीतराग विज्ञान॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भक्ति-भावनागुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०॥

शिक्षा दीक्षा दें हमें, मोक्षमार्ग दें दान।
आचार्यों की भक्ति कर, पा जाते निर्वाण॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्यभक्ति-भावनागुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११॥

उपाध्याय की भक्ति कर, मिटे पाप अज्ञान।
जीवों में हो मित्रता, पाते केवलज्ञान॥

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुतभक्ति-भावनागुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२॥

आगमोक्त स्वाध्याय कर, अन्तरतम हो नाश।
प्रवचन भक्ति दे यही, चित् चैतन्य प्रकाश॥

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनभक्ति-भावनागुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३॥

छह आवश्यक पालना, पूरे निज-निज काल।
आवश्यकापरिहाणि ये, करती मालामाल॥

ॐ ह्रीं श्री आवश्यकापरिहाणि-भावनागुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४॥

ज्ञान ध्यान चारित्र से, रागद्वेष हर मान।
करके मार्ग प्रभावना, बढ़े धर्म की शान॥

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावना-भावनागुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५॥

साथी से गौ-वत्स सम, रखें प्रेम वात्सल्य।
ये प्रवचन वत्सलत्व है, हरे जगत की शल्य॥

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन-वात्सल्य-भावनागुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६॥

पूर्णार्घ्य

सोलहकारण भावना, भाकर बने अनर्घ।
पृथक्-पृथक् वा साथ में, हो नमोऽस्तु ले अर्घ्य॥

ॐ ह्रीं श्री षोडशकारण-भावनागुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

(जाप्य मंत्र)

ॐ ह्रीं श्री अरिहन्तचक्रेभ्यो नमः। अथवा
ॐ ह्रीं णमो अरिहन्ताणं। अथवा **ॐ ह्रीं अर्हं नमः।**

जयमाला

भाकर सोलह भावना, हों तीर्थंकर सिद्ध।
नमोऽस्तु कर जयमाल कर, होते भक्त प्रसिद्ध॥

(चौपाई)

प्राणी अनादि मिथ्यादृष्टि, पाकर साँची करुणा दृष्टि।
मिथ्या हर हों सम्यग्दृष्टि, भाएँ भावना बदले सृष्टि॥१॥
जीवमात्र के हों हितकारी, दरशविशुद्धि धरें उपकारी।
विनय मोक्ष का महल घुमाये, सब में मैत्री भाव जगाए॥२॥
जो निर्दोष शील आचारी, उसे पूजते सब संसारी।
ज्ञान तत्त्व का जो अभ्यासी, मोक्ष चले बनकर संन्यासी॥३॥
धर संवेग तजें जग-जाला, निज वैभव का खोले ताला।
दान-त्याग जो खुश हो करते, ऋद्धि सिद्धि से निज घर भरते॥४॥
यथाशक्ति जो करें तपस्या, निज पर की वह हरें समस्या।
साधु समाधि करें जो प्राणी, अंत समाधि हो कल्याणी॥५॥
वैयावृत्य करें जो सेवा, वही बनें देवों के देवा।
अरिहन्तों के जो अनुरागी, वही बनें आतम के स्वादी॥६॥
आचार्यों के जो श्रद्धालु, धर्म अहिंसा धरें दयालु।

उपाध्याय बहुश्रुत की ज्योति, पाप हरें दे आतम मोती॥७॥
प्रवचन शास्त्रों के अध्येता, मोक्षमार्ग के बनते नेता।
जो अवश्य आवश्यक पाले, दुख संकट से नाँव तिरा ले॥८॥
जिनशासन ध्वज जो फहराए, वो शुद्धातम को चमकाए।
गौ-बछड़े सी ममता धारे, निजानन्द चैतन्य निखारे॥९॥
यही भावना भव की नाशी, परमातम गुण आत्म विकासी।
'सुव्रत' यही भावना भाएँ, तीर्थंकर बन सिद्ध कहाएँ॥१०॥

(सोरठा)

तीर्थंकर के योग्य, सोलहकारण भावना।
कर नमोऽस्तु हम लोग, भाएँ करने साधना॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारण-भावनागुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

अरिहन्तचक्र स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, अरिहन्तचक्र जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

तृतीय पूजन

स्थापना

(शंभू)

अरिहन्त प्रभु! अरिहन्त प्रभु!, हो समवसरण आसीन तुम्हीं।
हे! वीतराग सर्वज्ञ प्रभु, हितकारी कमलासीन तुम्हीं॥
सो मुक्तिवधू आमंत्रण दे, पर हम तो पूजा रचा रहे।
दुख दर्द हरो सुख शान्ति करो, हम नमोऽस्तु कर सिर झुका रहे॥

(दोहा)

जगत पूज्य अरिहन्त को, भजे इन्द्र बत्तीस।
कर नमोऽस्तु हम पूजते, पाने प्रभु आशीष॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं द्वात्रिंशद्गुणी अरिहन्तचक्र अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(हरिगीतिका)

संसार की जल धार में तो, जीव सारे बह रहे।
अरिहन्त प्रभु की नाव पाकर, भव्य भव से तिर रहे॥
अरिहन्त नैया प्राप्त करने, जल चढ़ाएँ आज हम।
बत्तीस इन्द्रों से सुपूजित, पूज लें अरिहन्त हम॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं द्वात्रिंशद्गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

संसार के जलते महल में, जीव सारे जल रहे।
अरिहन्त प्रभु की छाँव पाकर, भव्य सुख से पल रहे॥
अरिहन्त छाया प्राप्त करने, गन्ध सौपें आज हम।
बत्तीस इन्द्रों से सुपूजित, पूज लें अरिहन्त हम॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं द्वात्रिंशद्गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

संसार के दुख चक्र में तो, जीव सारे फँस रहे।
अरिहन्त प्रभु के चरण पाकर, भव्य सुख में वस रहे॥
अरिहन्त प्रभु के चरण पाने, पुंज सौपें आज हम।
बत्तीस इन्द्रों से सुपूजित, पूज लें अरिहन्त हम॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं द्वात्रिंशद्‌गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

संसार की कामुक कली के, जीव सारे दास हैं।
अरिहन्त प्रभु के पुष्प पाके, खिल रहे संन्यास हैं॥
अरिहन्त प्रभु के पुष्प पाने, पुष्प सौपें आज हम।
बत्तीस इन्द्रों से सुपूजित, पूज लें अरिहन्त हम॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं द्वात्रिंशद्‌गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

संसार के विष पान करके, जीव सारे दुख सहें।
अरिहन्त प्रभु के तत्त्व चखकर, चेतना के सुख चखें॥
अरिहन्त प्रभु सम रोग हरने, सौंपते नैवेद्य हम।
बत्तीस इन्द्रों से सुपूजित, पूज लें अरिहन्त हम॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं द्वात्रिंशद्‌गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

संसार के अँधयार में तो, जीव सारे गुम रहे।
अरिहन्त प्रभु की ज्योति पाकर, शुद्ध आतम लख रहे॥
अरिहन्त प्रभु सम ज्योति पाने, दीप ले लें आज हम।
बत्तीस इन्द्रों से सुपूजित, पूज लें अरिहन्त हम॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं द्वात्रिंशद्‌गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

संसार के दुख जाल में तो, जीव सारे फँस रहे।
अरिहन्त प्रभु के पंथ पाके, कर्म दुख से बच रहे॥
अरिहन्त प्रभु सम पंथ पाने, धूप खेलें आज हम।
बत्तीस इन्द्रों से सुपूजित, पूज लें अरिहन्त हम॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं द्वात्रिंशद्गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं।

संसार के विष फल चखे सो, जीव सारे मर रहे।
अरिहन्त प्रभु के ज्ञान फल चख, मोक्ष के रस झर रहे॥
अरिहन्त प्रभु सम फल मिलें सो, फल चढ़ाएँ आज हम।
बत्तीस इन्द्रों से सुपूजित, पूज लें अरिहन्त हम॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं द्वात्रिंशद्गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं।

संसार की आसक्तियों से, जीव सारे त्रस्त हैं।
अरिहन्त प्रभु की भक्तियों से, भक्त होते मुक्त हैं॥
अरिहन्त प्रभु सम मुक्त हों सो, अर्घ्य सौंपें आज हम।
बत्तीस इन्द्रों से सुपूजित, पूज लें अरिहन्त हम॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं द्वात्रिंशद्गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं।

अर्घ्यावली (अर्द्ध जोगीरासा)

मय परिवार इन्द्र असुरों के, समवसरण में जावें।
अरिहन्तों की करें अर्चना, हम तो नमोऽस्तु गावें॥

ॐ ह्रीं असुरकुमारेन्द्र-सपरिवारपूजित श्री अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१॥

मय परिवार इन्द्र नागों के, समवसरण में जावें।
अरिहन्तों की करें अर्चना, हम तो नमोऽस्तु गावें॥

ॐ ह्रीं नागकुमारेन्द्र-सपरिवारपूजित श्री अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२॥

मय परिवार इन्द्र विद्युत के, समवसरण में जावें।
अरिहन्तों की करें अर्चना, हम तो नमोऽस्तु गावें॥

ॐ ह्रीं विद्युतकुमारेन्द्र-सपरिवारपूजित श्री अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३॥

मय परिवार इन्द्र सुपर्ण के, समवसरण में जावें।
अरिहन्तों की करें अर्चना, हम तो नमोऽस्तु गावें॥

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारेन्द्र-सपरिवारपूजित श्री अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४॥

मय परिवार इन्द्र अग्नि के, समवसरण में जावें।
अरिहन्तों की करें अर्चना, हम तो नमोऽस्तु गावें॥

ॐ ह्रीं अग्निकुमारेन्द्र-सपरिवारपूजित श्री अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५॥

मय परिवार इन्द्र वायु के, समवसरण में जावें।
अरिहन्तों की करें अर्चना, हम तो नमोऽस्तु गावें॥

ॐ ह्रीं वायुकुमारेन्द्र-सपरिवारपूजित श्री अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६॥

मय परिवार इन्द्र स्तनित के, समवसरण में जावें।
अरिहन्तों की करें अर्चना, हम तो नमोऽस्तु गावें॥।

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारेन्द्र-सपरिवारपूजित श्री अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७॥

मय परिवार इन्द्र उदधि के, समवसरण में जावें।
अरिहन्तों की करें अर्चना, हम तो नमोऽस्तु गावें॥

ॐ ह्रीं उदधिकुमारेन्द्र-सपरिवारपूजित श्री अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८॥

मय परिवार इन्द्र द्वीपों के, समवसरण में जावें।
अरिहन्तों की करें अर्चना, हम तो नमोऽस्तु गावें॥

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारेन्द्र-सपरिवारपूजित श्री अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९॥

मय परिवार इन्द्र दिक्-दिक् के, समवसरण में जावें।
अरिहन्तों की करें अर्चना, हम तो नमोऽस्तु गावें॥

ॐ ह्रीं दिक्कुमारेन्द्र-सपरिवारपूजित श्री अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०॥

मय परिवार इन्द्र किन्नर के, समवसरण में जावें।
अरिहन्तों की करें अर्चना, हम तो नमोऽस्तु गावें॥

ॐ ह्रीं किन्नरेन्द्र-सपरिवारपूजित श्री अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११॥

मय परिवार इन्द्र किंपुरुष के, समवसरण में जावें।
अरिहन्तों की करें अर्चना, हम तो नमोऽस्तु गावें॥
ॐ ह्रीं किंपुरुषेन्द्र-सपरिवारपूजित श्री अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२॥
मय परिवार इन्द्र महोरग, समवसरण में जावें।
अरिहन्तों की करें अर्चना, हम तो नमोऽस्तु गावें॥
ॐ ह्रीं महोरगेन्द्र-सपरिवारपूजित श्री अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३॥
मय परिवार इन्द्र गन्धर्व के, समवसरण में जावें।
अरिहन्तों की करें अर्चना, हम तो नमोऽस्तु गावें॥
ॐ ह्रीं गंधर्वेन्द्र-सपरिवारपूजित श्री अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४॥
मय परिवार इन्द्र यक्षों के, समवसरण में जावें।
अरिहन्तों की करें अर्चना, हम तो नमोऽस्तु गावें॥
ॐ ह्रीं यक्षेन्द्र-सपरिवारपूजित श्री अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५॥
मय परिवार इन्द्र राक्षस के, समवसरण में जावें।
अरिहन्तों की करें अर्चना, हम तो नमोऽस्तु गावें॥
ॐ ह्रीं राक्षसेन्द्र-सपरिवारपूजित श्री अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६॥
मय परिवार इन्द्र भूतों के, समवसरण में जावें।
अरिहन्तों की करें अर्चना, हम तो नमोऽस्तु गावें॥
ॐ ह्रीं भूतेन्द्र-सपरिवारपूजित श्री अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७॥
मय परिवार इन्द्र पिशाच के, समवसरण में जावें।
अरिहन्तों की करें अर्चना, हम तो नमोऽस्तु गावें॥
ॐ ह्रीं पिशाचेन्द्र-सपरिवारपूजित श्री अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८॥
मय परिवार इन्द्र चन्द्रों के, समवसरण में जावें।
अरिहन्तों की करें अर्चना, हम तो नमोऽस्तु गावें॥
ॐ ह्रीं चंद्रेन्द्र-सपरिवारपूजित श्री अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९॥

मय परिवार इन्द्र सूर्य के, समवसरण में जावें।
अरिहन्तों की करें अर्चना, हम तो नमोऽस्तु गावें॥

ॐ ह्रीं भास्करेन्द्र-सपरिवारपूजित श्री अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०॥

मय परिवार इन्द्र सौधर्म के, समवसरण में जावें।
अरिहन्तों की करें अर्चना, हम तो नमोऽस्तु गावें॥

ॐ ह्रीं सौधर्मेन्द्र-सपरिवारपूजित श्री अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१॥

मय परिवार इन्द्र ईशान के, समवसरण में जावें।
अरिहन्तों की करें अर्चना, हम तो नमोऽस्तु गावें॥

ॐ ह्रीं ईशानेन्द्र-सपरिवारपूजित श्री अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२॥

मय परिवार इन्द्र सानत के, समवसरण में जावें।
अरिहन्तों की करें अर्चना, हम तो नमोऽस्तु गावें॥

ॐ ह्रीं सनत्कुमारेन्द्र-सपरिवारपूजित श्री अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३॥

मय परिवार इन्द्र महेन्द्र के, समवसरण में जावें।
अरिहन्तों की करें अर्चना, हम तो नमोऽस्तु गावें॥

ॐ ह्रीं माहेन्द्र-सपरिवारपूजित श्री अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४॥

मय परिवार इन्द्र ब्रह्म के, समवसरण में जावें।
अरिहन्तों की करें अर्चना, हम तो नमोऽस्तु गावें॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मेन्द्र-सपरिवारपूजित श्री अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५॥

मय परिवार इन्द्र लान्तव के, समवसरण में जावें।
अरिहन्तों की करें अर्चना, हम तो नमोऽस्तु गावें॥

ॐ ह्रीं लान्तवेन्द्र-सपरिवारपूजित श्री अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६॥

मय परिवार इन्द्र शुक्र के, समवसरण में जावें।
अरिहन्तों की करें अर्चना, हम तो नमोऽस्तु गावें॥

ॐ ह्रीं शुक्रेन्द्र-सपरिवारपूजित श्री अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७॥

मय परिवार इन्द्र शतार के, समवसरण में जावें।
अरिहन्तों की करें अर्चना, हम तो नमोऽस्तु गावें॥

ॐ ह्रीं शतारेन्द्र-सपरिवारपूजित श्री अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८॥

मय परिवार इन्द्र आनत के, समवसरण में जावें।
अरिहन्तों की करें अर्चना, हम तो नमोऽस्तु गावें॥

ॐ ह्रीं आनतेन्द्र-सपरिवारपूजित श्री अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९॥

मय परिवार इन्द्र प्राणत के, समवसरण में जावें।
अरिहन्तों की करें अर्चना, हम तो नमोऽस्तु गावें॥

ॐ ह्रीं प्राणतेन्द्र-सपरिवारपूजित श्री अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३०॥

मय परिवार इन्द्र आरण के, समवसरण में जावें।
अरिहन्तों की करें अर्चना, हम तो नमोऽस्तु गावें॥

ॐ ह्रीं आरणेन्द्र-सपरिवारपूजित श्री अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३१॥

मय परिवार इन्द्र अच्युत के, समवसरण में जावें।
अरिहन्तों की करें अर्चना, हम तो नमोऽस्तु गावें॥

ॐ ह्रीं अच्युतेन्द्र-सपरिवारपूजित श्री अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२॥

पूर्णार्घ्य (हरिगीतिका)

अरिहन्त प्रभु बत्तीस इन्द्रों से, सुपूजित ईश हैं।
जिन अर्चना कर भक्त हम भी, पा रहे आशीष हैं॥
हे नाथ ! हम पर आप बस, इतनी कृपा कर दीजिये।
कल्याण करलें आप जैसा,यह दया कर दीजिये॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं द्वात्रिंशतगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

(जाप्य मंत्र)

ॐ ह्रीं श्री अरिहन्तचक्रेभ्यो नमः। अथवा

ॐ ह्रीं णमो अरिहन्ताणं। अथवा **ॐ ह्रीं अर्हं नमः।**

जयमाला

(दोहा)

अरिहन्तों को झुक रहे, देव इन्द्र बत्तीस।
हम गाएँ जयमालिका, कर नमोऽस्तु नत शीश॥

(ज्ञानोदय)

अनन्त भव के दुख सहकर के, देव-शास्त्र-गुरु जब पाएँ।
तब मिथ्यादर्शन को त्यागें, सम्यग्दर्शन प्रकटाएँ॥
विश्वशान्ति की किए भावना, तीर्थंकर प्रकृति बाँधी।
घातिकर्म को नष्ट किया फिर, प्रभु अरिहन्त दशा जागी॥१॥
ज्यों अरिहन्त बने तो जग के, सारे वैभव झुक बैठे।
और सुनो बत्तीस इन्द्र भी, जल्दी में आ रुक बैठे॥
पूज्य पूज्यता इतनी पाएँ, चरणों में संसार झुकें।
मंत्र णमो अरिहन्ताणं से, जैन धर्म के द्वार दिखें॥२॥
समवसरण के इतने वैभव, अरिहन्तों की शरणों में।
अतः भक्त हम करें नमोऽस्तु, अरिहन्तों के चरणों में॥
विनय निवेदन यही प्रार्थना, नाथ हमारी पूर्ण करो।
निज अरिहन्त दशा पाने को, हम पर दया जरूर करो॥३॥

(दोहा)

समोसरण में दो जगह, जिनवर कृपा निधान।
पूजा का फल बन सकें, अरिहन्त सिद्ध महान॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं द्वात्रिंशतगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

अरिहन्तचक्र स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, अरिहन्तचक्र जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

चतुर्थ पूजन

स्थापना (शंभू)

अरिहन्त प्रभु! अरिहन्त प्रभु!, हो समवसरण आसीन तुम्हीं।
हे! वीतराग सर्वज्ञ प्रभु, हितकारी कमलासीन तुम्हीं॥
सो मुक्तिवधू आमंत्रण दे, पर हम तो पूजा रचा रहे।
दुख दर्द हरो सुख शान्ति करो, हम नमोऽस्तु कर सिर झुका रहे॥

(दोहा)

अरिहन्तों की ऋद्धियाँ, जैन धर्म की शान।
जिनकी पूजा हम करें, कर नमोऽस्तु सम्मान॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं चतुःषष्टिगुणी अरिहन्तचक्र अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(ज्ञानोदय)

सभी रसों का राजा जल है, जल बिन जीवन टिक न सके।
जल बिन कैसे पूजा होगी, जल बिन चेतन मिल न सके॥
सो प्रासुक जल रस लेकर हम, चेतन रस को खोज रहे।
ऋद्धि-सिद्धिधर अरिहन्तों को, करके नमोऽस्तु पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं चतुःषष्टिगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

जिनशासन की ऋद्धि देखकर, चमत्कार जग के भागें।
ऋद्धीश्वर की चरण धूल ले, अपने भाग्य कमल जागें।
चंदन जैसी शीतल चेतन, हम भी अपनी खोज रहे॥
ऋद्धि-सिद्धिधर अरिहन्तों को, करके नमोऽस्तु पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं चतुःषष्टिगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

रंग बिरंगे दुनियाँ वाले, आकर्षण को क्यों चाहें।

ऋद्धि धारियों की अर्चा से, मिलती शाश्वत सुख राहें॥
अपने घर में ऋद्धि-सिद्धि हो, अक्षय छाया खोज रहे।
ऋद्धि-सिद्धिधर अरिहन्तों को, करके नमोऽस्तु पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं चतु:षष्टिगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

बाग बिना ना पुष्प खिलेंगे, पुष्प बिना क्या गंध मिले।
गंध बिना आनन्द न मिलता, तो क्या परमानन्द मिले॥
भाव भक्ति के पुष्प खिलाकर, आत्मपुष्प हम खोज रहे।
ऋद्धि-सिद्धिधर अरिहन्तों को, करके नमोऽस्तु पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं चतु:षष्टिगुणी अरिहन्तचक्रेभ्य: कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

स्वादु जनों का स्वाद छोड़कर, साधु तपस्याएँ करते।
इसी साधना से दुनियाँ की, सभी समस्याएँ हरते॥
फिर भी जिन रस कभी न छोड़ें, वही स्वाद हम खोज रहे।
ऋद्धि-सिद्धिधर अरिहन्तों को, करके नमोऽस्तु पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं चतु:षष्टिगुणी अरिहन्तचक्रेभ्य: क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

ऋषियों बिन फैला अंतरतम, सोचो! किसका दूर हुआ।
दीप आरती उनकी करने, अत: हृदय मजबूर हुआ॥
चेतनगृह को रोशन करने, ज्ञान दीप हम खोज रहे।
ऋद्धि-सिद्धिधर अरिहन्तों को, करके नमोऽस्तु पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं चतु:षष्टिगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

तपोधनों ने दौड़-धूप कर, दीप धूप को बचा रखा।
कर्मों के खेलों पर जयकर, चेतन घट को सजा रखा॥

बुद्धि भ्रष्ट हो नहीं हमारी, संत-मंत्र हम खोज रहे।
ऋद्धि-सिद्धिधर अरिहन्तों को, करके नमोऽस्तु पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं चतुःषष्टिगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

कर्म रहित श्री सिद्ध अवस्था, त्याग तपस्या के फल हैं।
व्रत संयम बिन मोक्ष न मिलता, मिलते नरकों के बिल हैं॥
कर्मों के दुख विपाक हरके, महामोक्ष फल खोज रहे।
ऋद्धि-सिद्धिधर अरिहन्तों को, करके नमोऽस्तु पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं चतुःषष्टिगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

नग्न दिगम्बर ऋषियों के बिन, रत्नत्रय-जिनशासन क्या।
जिनशासन बिन शुद्धातम सुख, किसके पाया कहो सखा॥
अतः सभी दरबार छोड़कर, अनर्घ तीरथ खोज रहे।
ऋद्धि-सिद्धिधर अरिहन्तों को, करके नमोऽस्तु पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं चतुःषष्टिगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

अर्घ्यावली

(विष्णु) (बुद्धि ऋद्धि के १८ भेद)

बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, अवधिज्ञान पहला।
रूपी पुद्गल महास्कंध तक, जाने जो उजला॥
तीनों अवधिज्ञान पूजकर, आत्म चखें आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अवधि-बुद्धिऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१॥

ढाई द्वीप में मूर्त्त द्रव्य जो, जीवों के मन में।
ज्ञान मनःपर्यय वह जाने, रमता चेतन में॥

दोनों तरह मनःपर्यय भज, मोक्ष मिले आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मनःपर्यय-बुद्धिऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२॥

घाति हरण कर बने केवली, अद्‌भुत ज्ञान गहे।
सभी द्रव्य गुण पर्यायों को, युगपत जान रहे॥
स्व-पर प्रकाशी केवल ज्ञानी, अर्हत् हों आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री केवल-बुद्धिऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३॥

कोष्ठों में ज्यों मिले धान्य हों, ऐसे द्रव्य मिले।
तो भी अलग-अलग जो जाने, निज सुख को मचले॥
कोष्ठबुद्धि को आत्म शुद्धि को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कोष्ठ-बुद्धिऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४॥

एक बीज से बढ़े फसल ज्यों, एक शब्द से ज्ञान।
संत तपस्या कर हों ज्ञानी, पा लेते निर्वाण॥
बीज बुद्धि की महा ऋद्धि से, मुक्ति मिले आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री बीज-बुद्धिऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५॥

गुरु से मात्र एक पद पढ़कर, श्रुत समझें पूरा।
पदानुसारिणी बुद्धि ऋद्धि वह, धारें मुनि शूरा॥
सभी भेद इसके भज पाएँ, भेद ज्ञान आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री पदानुसारिणी-बुद्धिऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६॥

नर पशुओं के मिश्र वचन सुन, अलग-अलग बोलें।
संभिन्नस्रोतृ बुद्धि ऋद्धि धर, ज्ञान चक्षु खोलें॥

जड़ चेतन का बन्ध मिटाने, हम पूजें आहा॥
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री संभिन्नस्त्रोतृ-बुद्धिऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७॥

पर उपदेश बिना अपने से, होकर वैरागी।
करें तपस्या तो हो जाती, मुक्तिवधू रागी॥
यह प्रत्येक बुद्धि ऋद्धि भज, ध्यानी हों आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री प्रत्येक-बुद्धिऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८॥

बन के नगन दिगम्बर मुनि जो, करें तपस्याएँ।
सुरगुरु परमत सब पर जय कर, हरें समस्याएँ॥
तत्त्वज्ञान वादित्व ऋद्धि से, हम पाएँ आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री वादित्व-बुद्धिऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९॥

दसपूर्वों को ध्याकर तपसी, अन्तर्मुखी हुए।
तो विद्याएँ दिव्य शक्तियाँ, आकर पाँव छुए॥
जिन विद्या से निज विद्या को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री दशपूर्वित्व-बुद्धिऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०॥

चौदह पूर्वों के ज्ञानी हो, तजें मान ज्वाला।
तभी मुक्ति नत नयना होकर, कर ले वरमाला।
चौदह राजू उच्च पहुँचने, हम पूजें आहा॥
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री चौदह पूर्वित्व-बुद्धिऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११॥

अंग भौम आदिक ज्योतिष के, आठ निमित्तों से।
भविष्य में क्या होने वाला, कहते शब्दों से॥

यह अष्टांग निमित्त हम पूजें, उज्ज्वल हों आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टांगनिमित्त-बुद्धिऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२॥

नव योजन सीमा के बाहर, स्पर्शन करना
फिर भी निज का स्पर्शन कर, आतम में रमना।
दूर स्पर्शत्व ऋद्धि भजें हम, छुएँ मुक्ति आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री दूरस्पर्श-बुद्धिऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३॥

नव योजन की मर्यादा से, बाहर रस चख लें।
शुद्धातम में लीन हुए तो, आतमरस चख लें॥
दूरास्वादन ऋद्धि भजें हम, मिले स्वरस आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री दूरस्वादित्व-बुद्धिऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४॥

नव योजन की सीमा से भी, बाह्य सूँघ लेते।
निज आतम के पुष्प खिला के, मोक्ष घूम लेते॥
भजें दूर घ्राणत्व ऋद्धि हम, लें स्वगंध आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री दूरघ्राणत्व-बुद्धिऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५॥

सैंतालीस हजार और दो, सौ त्रेसठ के योजन।
इससे दूर दृश्य के दृष्टा, कर लें निजशोधन॥
ऋद्धि दूर दर्शित्व भजें हम, दर्शन हों आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री दूरदर्शित्व-बुद्धिऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६॥

बारह योजन के बाहर भी, सुनने की क्षमता।
दूरश्रवण की ऋद्धि प्राप्त कर, निज की उद्यमता॥

हम भक्तों की अर्जी सुनकर, तारो तो आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री दूरश्रवणत्व-बुद्धिऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७॥

बिना पढ़े ही सकल जिनागम, जो ऋषि खुद समझें।
कर्मों के सिद्धांत समझ के, जग में ना उलझें॥
ऋषिवर प्रज्ञाश्रमण हमें भी, प्रज्ञा दें आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री प्रज्ञाश्रमणत्व-बुद्धिऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८॥

(चारण ऋद्धि के ९ भेद)

नव प्रकार चारण ऋद्धि में, जल चारण पहले।
जल जीवों को कष्ट दिए बिन, जल पर संत चले॥
जल चारण की ऋद्धि पूजकर, प्यास मिटे आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री जल-चारणऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९॥

जंघा बल से धरती तल से, चउ अंगुल ऊँचे।
चाहें तो योजन बहु योजन, क्षण भर में पहुँचे॥
जंघाचारण ऋद्धि पूजकर, उन्नति हो आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री जंघा-चारणऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०॥

नभ में चले किसी आसन से, जिन आज्ञा पालें।
भक्तों का कल्याण करें ऋषि, निज आतम ध्या लें॥
ऋद्धि नभश्चारण को भजकर, सिद्धासन आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री नभः-चारणऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१॥

मकड़ी के जालों पर चलना, बिन बाधाओं के।

तन्तु न टूटे जन्तु न रूठे, मुनि ऋषिराजों से॥
ऋद्धि तन्तु चारण भजकर के, जन्तु सुखी आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री तन्तु-चारणऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२॥

पुष्पों पर ऋषि कभी ना चलते, किंतु अगर चलते।
तो जीवों को दुख ना होता, कभी न मर सकते।
ऋद्धि पुष्प चारण को भजकर, पुष्प खिले आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्प-चारणऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३॥

पत्रों पर ऋषियों को चलना, इष्ट नहीं होता।
अगर चले तो उन जीवों को, कष्ट नहीं होता॥
यही पत्रचारण को भजकर, मित्र बनें आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री पत्र-चारणऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४॥

बीजों पर चलकर जीवों को, अगर न कष्ट हुए।
ऋद्धि बीजचारण यह भजके, सुखिया भक्त हुए॥
मोक्षबीज पाने हम पूजें, बीज फले आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री बीज-चारणऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५॥

श्रेणी पर चल श्रेणी माड़ें, किन्तु न जीव मरें।
श्रेणीचारण ऋद्धि यही भज, आतम भी निखरें॥
हम भी ऋषियों की श्रेणी में, आ जाएँ आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेणी-चारणऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६॥

अग्निशिखा पर चलने पर भी, मरे नहीं प्राणी।

फिर भी ध्यान अग्नि से ऋषिवर, बनते कल्याणी॥
ऋद्धि अग्निचारण को भजकर, कर्म जलें आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अग्नि-चारणऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७॥

(विक्रिया ऋद्धि के ११ भेद)

ग्यारह विध की विक्रिया ऋद्धि, अणिमा है पहली।
परमाणु सी काया जिनकी, छिद्रों से निकली॥
अणिमा ऋद्धि हम भी भजकर, सूक्ष्म बनें आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अणिमा-विक्रियाऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८॥

महादेह मेरु जैसी कर, जग के कष्ट हरें।
विष्णुकुमार सरीखे ऋषिवर, महिमा रूप धरें।
महिमा ऋद्धि हम भी भजकर, महा बनें आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री महिमा-विक्रियाऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९॥

करें पवन सा हल्का तन फिर, हल्का करते मन।
आतम हल्का करके पायें, सुख का मोक्ष भवन॥
लघिमा ऋद्धि हम भी भजकर, लघु होवें आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री लघिमा-विक्रियाऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३०॥

मेरु से भी भारी अपनी, काया को करना।
ऐसी गरिमा पाकर हमको, आत्म मुक्त करना॥
गरिमा ऋद्धि हम भी भजकर, गुणी बनें आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री गरिमा-विक्रियाऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३१॥

भू पर रहकर सूरज चंदा, जो ऋषिवर छू लें।
आत्म गुणों में घुलें मिलें तो, मुक्ति चरण छू लें॥
प्राप्ति ऋद्धि को करके नमोऽस्तु भव समाप्ति आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री प्राप्ति-विक्रियाऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२॥

जल में थल सम थल में जल सम, जो ऋषि खेल सकें।
तरह-तरह की देह बना कर, भव की जेल तजें॥
भजें यही प्राकाम्य ऋद्धि हम, देह तजें आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री प्राकाम्य-विक्रियाऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३॥

महातपस्वी महामनस्वी, सब जग को जीते।
निर्मोही सबका मन मोहें, निज रस को पीते॥
हम ईशत्व ऋद्धि को पूजें, ईश बनें आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री ईशत्व-विक्रियाऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४॥

तप का ऐसा प्रभाव हो कि, सब जग वश में हो।
पर ऋषिवर निज वश होते सो, ना पर वश में हो॥
वशित्व ऋद्धि को भजकर हम भी, निज वश हों आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री वशित्व-विक्रियाऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५॥

पर्वत चट्टानें भी जिनको, रोक नहीं पाते।
बिना खेद के बिना छेद के, संत पार जाते।
पूजें अप्रतिघात ऋद्धि हम, निर्बाधा आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अप्रतिघात-विक्रियाऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६॥

दीक्षा लेकर तप करके जो, हो जाते अदृश्य।
आतम के जो दृश्य देखकर, उज्ज्वल करें भविष्य॥
अंतर्धान ऋद्धि हम भजकर, शिष्य बनें आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अंतर्धान-विक्रियाऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७॥

तप के प्रभाव से मनवांछित, तन का रूप करें।
कामरूपिणी इस विद्या से, दुख का कूप हरें॥
इसको हम भी करके नमोऽस्तु, काम तजें आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कामरूपित्व-विक्रियाऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८॥

(तप ऋद्धि के ७ भेद)

तपो ऋद्धि के सात भेद में, प्रथम उग्र तप हों।
दीक्षा से समाधि तक बहुविध, जिसमें अनशन हों॥
उग्र भाव तज उग्र ऋद्धि भज, मिले शान्ति आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री उग्र-तपऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३९॥

तरह-तरह उपवास करें पर, दुर्बल ना होते।
किन्तु देह दिन प्रतिदिन चमकें, पाप तिमिर खोते॥
ऋद्धि दीप्ततप भज हम पाएँ, आत्म ज्योति आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री दीप्त-तपऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४०॥

तप से भोजन यों सूखे ज्यों, तप्त लौह पर जल।
अतः नहीं मल-मूत्र हुए सो, पाएँ मोक्षमहल॥
ऋद्धि तप्ततप हम भी पूजें, शीतल हों आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री तप्त-तपऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४१॥

महा-महा उपवास करें जो, सिंहनिष्क्रीडन से।
फिर भी त्रस नाली के ज्ञाता, मिलते चेतन से॥
यही महातप ऋद्धि भजें हम, मिले शान्ति आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री महा-तपऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४२॥

रोग व्यथा हो तन में फिर भी, घोर तपा करसी।
विश्वशान्ति करने को जिनकी, खूब कृपा बरसी॥
भजें घोरतप ऋद्धि भक्त हम, हों निरोग आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री घोर-तपऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३॥

सिंधु सुखा दें लोक पलट दें, तप बल के द्वारा।
किन्तु अहिंसक करें न यों सो, जग पूजे सारा॥
घोर पराक्रम ऋद्धि भजें हम, ऊर्ध्व वसें आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री घोरपराक्रम-तपऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४॥

दुनियाँ की नारी त्यागें पर, मुक्तिवधू रागी।
डिगा न सकते जगत प्रलोभन, जय हो! वैरागी।
अघोर ब्रह्मचर्य हम पूजें, मंगल हों आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अघोरब्रह्मचारित्व-तपऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५॥

(बलऋद्धि के ३ भेद)

बल ऋद्धि के तीन भेद में, प्रथम मनोबल लें।
जिससे ऋषि बस एक घड़ी में, जिनश्रुत को मथ लें॥
ऋद्धि मनोबल भजकर हम हों, विजित मना आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मन-बलऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६॥

द्वादशांग को एक घड़ी में, जो पूरा पढ़ लें।
महातपस्वी इन ऋषियों के, चलो पैर पड़ लें॥
ऋद्धि वचनबल भज कर होते, वचन सिद्ध आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री वचन-बलऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७॥

तप के प्रभाव से उँगली पर, लोक जमा लेवें।
कायोत्सर्ग वर्ष भर करके, मुक्ति रिझा लेवें॥
ऋद्धि कायबल भजकर हम भी, हों विदेह आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री काय-बलऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८॥

(औषध ऋद्धि के ८ भेद)

आठ भेद औषध ऋद्धि के, है आमर्ष प्रथम।
जिनका तन छू छूमंतर हों, रोग व्याधियाँ गम॥
आमर्ष औषध को भजकर के, निज छू लें आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री आमर्ष-औषधऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४९॥

खेल्ल-औषधी ऋद्धिधर के, लार-नाक मल को।
इत्यादि छू पवन चले तो, हरे रोग दुख को॥
ऐसी ऋद्धि पूज-पूज हम, मल हर लें आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री खेल्ल-औषधऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५०॥

ऋषि के तन के बाह्य मैल जो, तप से औषध हों।
जिनको छूकर टलें व्याधियाँ, सुख से प्रोषध हों॥
जल्ल-औषधी भजकर तैरें, भव जल हम आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री जल्ल-औषधऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५१॥

दाँत कान आदिक मल तप से, औषध निश्चित हों।
इनको छूकर भक्त जनों के, कार्य सुनिश्चित हों॥
मल्ल-औषधी भज हम जीतें, मोह मल्ल आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मल्ल-औषधऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५२॥

ऋषि के मल मूत्रादिक तप से, दवा हुए आहा।
जिसको छूकर पवन चले तो, रोग करें स्वाहा॥
विप्रुष औषध ऋद्धि भजें हम, निर्मल हों आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री विप्रुष-औषधऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५३॥

तपसी की संपूर्ण देह यह, जब औषध होती।
जिसको छू के पवन चले तो, रोग व्यथा खोती॥
सर्व-औषधी ऋद्धि पूज हम, सर्व सुखी आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सर्व-औषधऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५४॥

तप से जिनकी वाणी अमृत, जैसी हो जाती।
जहर उतर जाते जिसको सुन, निज को चमकाती॥
मुख-निर्विष यह ऋद्धि पूजकर, जहर नसे आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मुखनिर्विष-औषधऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५५॥

तप के कारण जिनकी नजरें अमृत हो जाएँ।
जहाँ पड़ें नजरें तो विष खुद, निर्विष हो जाएँ॥
दृष्टि निर्विष ऋद्धि भजें हम, निर्विकार आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री दृष्टि-निर्विषऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५६॥

(रस ऋद्धि के ६ भेद)

रस ऋद्धि के छह भेदों में, आशीर्विष पहला।
मर जा कहने पर मर जाएँ, कहें न, करें भला॥
आशीर्विष को करके नमोऽस्तु, भला करें आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री आशीर्विष-रसऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५७॥

कोप दृष्टि जिन पर कर देते, वो तत्काल मरें।
परम दयालु करें ना यों सो, हम त्रय काल भजें॥
दृष्टिर्विष गुरु हरें समस्या, सुख देवें आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री दृष्टिर्विष-रसऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५८॥

अरस भोज्य कर-पात्रों में आ, तप से सरस हुए।
भोजन त्याग भजन करते ऋषि, सो हम चरण छुए॥
क्षीरस्त्रावि रस ऋद्धि पूजकर, क्षीरामृत आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री क्षीरस्त्रावि-रसऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५९॥

कटुक भोज्य भी पाणि पात्र में, तप से मधुर हुए।
भोजन रस के त्यागी ऋषिवर, आतम रसिक हुए॥
मधुस्त्रावी रस ऋद्धि पूजकर, निजरस हों आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मधुस्त्रावि-रसऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६०॥

सरस अरस सब भोज्य करों में, अमृत स्वाद झरे।
तप से ऋषि यह गुण पाएँ पर, निज रस चाह रहे॥
अमृतस्त्रावि ऋद्धि पूज कर, ज्ञानामृत आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अमृतस्त्रावि-रसऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६१॥

रूखा सूखा कटुक भोज्य भी, घृत सम हो तप से।
भोज्य रसों के त्यागी ऋषि को, हम खोजें कब से॥
सर्पिस्त्रावि ऋद्धि पूज हम, पुष्ट बनें आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सर्पिस्त्रावि-रसऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६२॥

(अक्षीण ऋद्धि के २ भेद)

दो विध की अक्षीण ऋद्धि में, पहला यह कहता।
मुनि चौके में चक्रि सैन्य को, भोज्य न कम पड़ता॥
यह अक्षीण महानस ऋद्धि, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अक्षीण-महानस ऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६३॥

मुनि आसन पर चक्रि सैन्य, भी यदि चाहे रुकना।
तब तो सुख से सब रुक जाएँ, हम चाहें झुकना॥
यह अक्षीण महालय ऋद्धि, हम ध्याएँ आहा।
ओम् ह्रीं ऋद्धिधारी जिनवर, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अक्षीण-महालय ऋद्धियुक्त अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६४॥

पूर्णार्घ्य

(शंभु)

हैं चमत्कार को नमस्कार, जिनको अपना माना करते।
यह राग-आग है अपनों की, इनसे हम दुख पाया करते॥
फिर भी यह राग न छूट सका, सो चौंषठ ऋद्धि मंत्र भजें।
हम करके नमोऽस्तु ऋषियों को, बस मुक्तिवधू के कंत बनें॥

ॐ ह्रीं श्री चतुःषष्टिगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

(जाप्य मंत्र)

ॐ ह्रीं श्री अरिहन्तचक्रेभ्यो नमः। अथवा
ॐ ह्रीं णमो अरिहन्ताणं। अथवा **ॐ ह्रीं अर्हं नमः।**

जयमाला

(दोहा)

ऋद्धि-सिद्धि को धारते, श्री अरिहन्त महान।
करके नमोऽस्तु हम कहें, जयमाला गुणगाान॥

(ज्ञानोदय)

सांसारिक इस दुनियाँ के तो, लौकिक दम पर काम चलें।
पर वैराग्य जिन्हें हो जाए, मोक्षमार्ग पर आन चलें॥
सो काया के दास न रहते, रत्नत्रय के हो स्वामी।
अपनी शुद्धातम में रमते, नग्न दिगम्बर मुनि ज्ञानी॥१॥
अतः झुकें चरणों में जग के, महारथी सम्राट बली।
ऋद्धि-सिद्धि भी मुनि चरणों की, पूजा करने चलीं-चलीं॥
इस प्रभाव से चौंसठ में से, त्रेसठ मुनिजन प्रकटाते।
लेकिन केवलज्ञान ऋद्धि को, श्री अरिहन्त देव पाते॥२॥
इसीलिए अरिहन्त प्रभु हों, सभी ऋद्धियों के स्वामी।
समवसरण आसीन हुए तो, हम सब के हों कल्याणी॥
रोग शोक दुख दर्द दूर हों, हों सम्पन्न धनी प्राणी।
जिन्हें मिले अरिहन्त छाँव वे, शीघ्र हुए मुक्ति धामी॥३॥
पर दुनियाँ के लोग आज तो, अरिहन्तों को भूल रहे।
सो दुखवर्धक राग-द्वेष के, कर्मों को कर फूल रहे॥
तब तो चौरासी लाखों के, झूलों में वे झूल रहे।
तो आतम के निज स्वभाव से, सचमुच ही प्रतिकूल रहे॥४॥
हों अनुकूल जगत के साथी, कर्म दशा अनुकूल रहे।
अतः भजो अरिहन्त चरण को, जो उत्तम अनमोल रहे॥
ऋद्धि-सिद्धि फिर स्वयं मिलेगी, काम बनेंगे हों मंगल।
'सुव्रत' जग की बात करें क्या, निज में प्रकटे मोक्षमहल॥५॥

(सोरठा)

ऋद्धि-सिद्धि के नाथ, होते प्रभु अरिहन्त हैं।
भक्त टेक के माथ, बनते खुद भगवंत हैं॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं चतुःषष्टि-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

अरिहन्तचक्र स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, अरिहन्तचक्र जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

पंचम पूजन

स्थापना (शंभू)

अरिहन्त प्रभु! अरिहन्त प्रभु!, हो समवसरण आसीन तुम्हीं।
हे! वीतराग सर्वज्ञ प्रभु, हितकारी कमलासीन तुम्हीं॥
सो मुक्तिवधू आमंत्रण दे, पर हम तो पूजा रचा रहे।
दुख दर्द हरो सुख शान्ति करो, हम नमोऽस्तु कर सिर झुका रहे॥

(दोहा)

श्री अरिहन्त जिनेश हैं, कल्याणक के ईश।
जिन्हें नमोऽस्तु कर पूज लें, प्रभु देना आशीष॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं अष्टाविंशत्यधिकशतगुणी अरिहन्तचक्र अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...।

(पुष्पांजलिं...) (जोगीरासा)

अनादिकाल से बहती आई, अरिहन्तों की धारा।
इसमें नहा-नहा भक्तों ने, निज आतम शृंगारा॥
जिन धारा में शामिल होने, हमने की जल धारा।
अरिहन्तों को करना नमोऽस्तु, है सौभाग्य हमारा॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं अष्टाविंशत्यधिकशतगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

अरिहन्तों की दिव्य देशना, होती शरण सहायी।
तन मन के संताप मिटाए, सबको है वरदायी॥
चरण शरण सुख शान्ति पाने, हम दें चंदन धारा।
अरिहन्तों को करना नमोऽस्तु, है सौभाग्य हमारा॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं अष्टाविंशत्यधिकशतगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

दिव्य रत्न ले देव पूजते, अरिहन्तों के चरणा।
भाव भक्ति से देव खोजते, भ्रम नाशक प्रभु चरणा॥
प्रभु अरिहन्त अवस्था पाने, अक्षत पुंज सँभारा।
अरिहन्तों को करना नमोऽस्तु, है सौभाग्य हमारा॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं अष्टाविंशत्यधिकशतगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

शील स्वभाव प्रकट कर डाले, काम वासना जीते।
ब्रह्मचर्य का बाग खिलाया, समयसार रस पीते॥
महा-महा चारित्र धारने, महके पुष्प हमारा।
अरिहन्तों को करना नमोऽस्तु, है सौभाग्य हमारा॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं अष्टाविंशत्यधिकशतगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

प्रभु अरिहन्त बनाते रहते, सच! अध्यात्म रसोई।
जो चख ले अरिहन्त बने वो, आतम रसिया वो ही॥
तनिक हमें नैवेद्य चखा दो, ज्ञान भोग रस द्वारा।
अरिहन्तों को करना नमोऽस्तु, है सौभाग्य हमारा॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं अष्टाविंशत्यधिकशतगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

सूर्य चाँद से अधिक चमकती, अरिहन्तों की ज्योति।
हम भक्तों को दिला रहे जो, सचमुच! हीरे मोती॥
अरिहन्तों सी ज्योति पाने, हमने दीप उजारा।
अरिहन्तों को करना नमोऽस्तु, है सौभाग्य हमारा॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं अष्टाविंशत्यधिकशतगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

संत और निर्ग्रन्थ बने बिन, कौन बना अरिहन्ता।
प्रभु अरिहन्त बने बिन किसने, सारे कर्म जयंता॥
अरिहन्तों सम कर्म नशाने, महके धूप अपारा।
अरिहन्तों को करना नमोऽस्तु, है सौभाग्य हमारा॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं अष्टाविंशत्यधिकशतगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

पुण्यफला अरिहन्ता स्वामी, पापफला संसारी।
हमें नहीं संसारी बनना, बने मोक्ष अधिकारी॥
हरे पाप फल पुण्यफला हो, मिले भक्तिफल प्यारा।
अरिहन्तों को करना नमोऽस्तु, है सौभाग्य हमारा॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं अष्टाविंशत्यधिकशतगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

अरिहन्तों बिन जिनशासन का, रथ न बढ़ेगा आगे।
हम भी जिस पर सवार होने, पीछे-पीछे भागे॥
अरिहन्तों का शासन पाने, अर्घ्य चढ़ाएँ प्यारा।
अरिहन्तों को करना नमोऽस्तु, है सौभाग्य हमारा॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं अष्टाविंशत्यधिकशतगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

प्रभु अरिहन्तचक्र की पूजा, हम भी आज रचाएँ।
पाप नशाएँ पुण्य कमाएँ, अपने काम बनाएँ॥
अरिहन्तों सम समवसरण पा, हो कल्याण हमारा।
अरिहन्तों को करना नमोऽस्तु, है सौभाग्य हमारा॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं अष्टाविंशत्यधिकशतगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

अर्घ्यावली (सखी)

सर्वार्थसिद्धि से चयकर, आषाढ़ कृष्ण दूजा पर ।
मरु माँ के गर्भ वसंता, जय आदिनाथ भगवंता ॥
ॐ ह्रीं श्री गर्भकल्याणकमण्डित श्री वृषभनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१॥

तजकर सुर विजय अनुत्तर, फिर जेठ अमावस पाकर।
विजया माँ गर्भ वसंता, जय अजितनाथ भगवंता ॥
ॐ ह्रीं श्री गर्भकल्याणकमण्डित श्री अजितनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२॥

तज ग्रैवेयक के आसन, जब शुक्ल अष्टमी फाल्गुन।
सुसेना गर्भ वसंता, जय हो शम्भव भगवंता॥
ॐ ह्रीं श्री गर्भकल्याणकमण्डित श्री शम्भवनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३॥

तज विजय अनुत्तर सृष्टि, वैशाख शुक्ल की षष्ठी।
सिद्धार्था गर्भ वसंता, जय अभिनन्दन भगवंता॥
ॐ ह्रीं श्री गर्भकल्याणकमण्डित श्री अभिनंदननाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४॥

श्रावण सुदि दूजा आई, माँ गर्भ मंगला पाई।
तज स्वर्ग विमान जयंता, जय सुमतिनाथ भगवंता ॥
ॐ ह्रीं श्री गर्भकल्याणकमण्डित श्री सुमतिनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५॥

छठ माघ कृष्ण की प्यारी, माँ गर्भ सुसीमा धारी।
तज ग्रैविक गर्भ वसंता, जय पद्मप्रभु भगवंता ॥
ॐ ह्रीं श्री गर्भकल्याणकमण्डित श्री पद्मप्रभ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६॥

तज ग्रैवेयक की माटी, छठ भाद्र शुक्ल जब आती।
माँ पृथ्वी गर्भ वसंता, जय सुपार्श्व प्रभु भगवंता ॥
ॐ ह्रीं श्री गर्भकल्याणकमण्डित श्री सुपार्श्वनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७॥

वदि चैत्र पंचमी प्यारी, माँ गर्भ लक्षणा धारी।
दे सपने आए जिनन्दा, जय चन्द्रप्रभु भगवंता ॥
ॐ ह्रीं श्री गर्भकल्याणकमण्डित श्री चन्द्रप्रभ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८॥

नवमी सुदि फाल्गुन आई, माँ रमा गर्भ सुख पाई।
अपराजित स्वर्ग तजंता, जय सुविधिनाथ भगवंता ॥

ॐ ह्रीं श्री गर्भकल्याणकमण्डित श्री पुष्पदंत-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९॥

वदि चैत्र अष्टमी पाए, अच्युत से च्युत हो आए।
फिर पाए गर्भ सुनन्दा, जय हो शीतल भगवंता ॥

ॐ ह्रीं श्री गर्भकल्याणकमण्डित श्री शीतलनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०॥

शुभ ज्येष्ठ कृष्ण की षष्ठी, पुष्पोत्तर तज हुई वृष्टि।
विमला के गर्भ वसंता, जय श्रेयांसनाथ भगवंता ॥

ॐ ह्रीं श्री गर्भकल्याणकमण्डित श्री श्रेयांसनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११॥

छठ कृष्ण रही आषाढ़ी, तज महाशुक्र की गाड़ी ।
विजया के गर्भ वसंता, जय वासुपूज्य भगवंता ॥

ॐ ह्रीं श्री गर्भकल्याणकमण्डित श्री वासुपूज्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२॥

(चौपाई)

त्याग शतार कंपिला आए, ज्येष्ठ कृष्ण जब दसमी पाए।
जय श्यामा के गर्भ वसंता, जय हो विमलनाथ भगवंता ॥

ॐ ह्रीं श्री गर्भकल्याणकमण्डित श्री विमलनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३॥

ऐकम कार्तिक कृष्ण महाना, पुष्पोत्तर का तजें विमाना।
सर्वयशा के गर्भ वसंता, जय हो अनन्तनाथ भगवंता ॥

ॐ ह्रीं श्री गर्भकल्याणकमण्डित श्री अनन्तनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४॥

तज सर्वार्थसिद्धि की तृष्णा, त्रयोदशी वैशाखी कृष्णा।
गर्भ सुव्रता माँ के वसंता, जय हो धर्मनाथ भगवंता ॥

ॐ ह्रीं श्री गर्भकल्याणकमण्डित श्री धर्मनाथजिनेन्द्रायअर्घ्यं...॥१५॥

भादों कृष्ण सप्तमी जब हो, तज सर्वार्थसिद्धि को तब तो ।
ऐरा माँ के गर्भ वसंता, जय हो शान्तिनाथ भगवंता ॥

ॐ ह्रीं श्री गर्भकल्याणकमण्डित श्री शान्तिनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६॥

श्रावण कृष्णा दशमी पाकर, कामदेव चक्री तीर्थंकर।
श्रीमति माँ के गर्भ वसंता, जय हो कुंथुनाथ भगवंता ॥

ॐ ह्रीं श्री गर्भकल्याणकमण्डित श्री कुन्थुनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७॥

फाल्गुन शुक्ला तीजा पाके, हस्तिनागपुर सुर से आके।
गर्भ सुमित्रा माँ के वसंता, जय हो अरहनाथ भगवंता ॥

ॐ ह्रीं श्री गर्भकल्याणकमण्डित श्री अरनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८॥

अपराजित तज मिथिला आए, चैत्र शुक्ल जब एकम् पाए।
प्रभावती के गर्भ वसंता, जय हो मल्लिनाथ भगवंता ॥

ॐ ह्रीं श्री गर्भकल्याणकमण्डित श्री मल्लिनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९॥

श्रावण दूजा कृष्ण महाना, अपराजित का त्याग विमाना।
पद्मा माँ के गर्भ वसंता, जय हो मुनिसुव्रत भगवंता ॥

ॐ ह्रीं श्री गर्भकल्याणकमण्डित श्री मुनिसुव्रतनाथ -अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०॥

आश्विन कृष्ण दूज तिथि पाकर, प्राणत तज आए मिथलापुर।
विपुला माँ के गर्भ वसंता, जय हो नमीनाथ भगवंता ॥

ॐ ह्रीं श्री गर्भकल्याणकमण्डित श्री नमिनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१॥

तज अपराजित आए द्वारिका, जब हो कार्तिक षष्ठी शुक्ला।
मात शिवा के गर्भ वसंता, जय हो नेमिनाथ भगवंता ॥

ॐ ह्रीं श्री गर्भकल्याणकमण्डित श्री नेमिनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२॥

कृष्ण दूज वैशाख विशाखा, काशि आए तज प्राणत शाखा।
वामा माँ के गर्भ वसंता, जय हो पार्श्वनाथ भगवंता ॥

ॐ ह्रीं श्री गर्भकल्याणकमण्डित श्री पार्श्वनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३॥

छठ आषाढ़ शुक्ल की बेला, कुण्डलपुर में स्वर्ग सा मेला।
त्रिशला माँ के गर्भ वसंता, जय हो महावीर भगवंता ॥

ॐ ह्रीं श्री गर्भकल्याणकमण्डित श्री महावीर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४॥

(दोहा)

नाभिराय के आँगने, जन्म लिए भगवान्।
चैत्र कृष्ण नवमी हुई, जग में पूज्य महान्॥

ॐ ह्रीं श्री जन्मकल्याणकमण्डित श्रीवृषभनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५॥

शुक्ला दशमी माघ को, जन्मे अजितकुमार।
जितशत्रु के आँगने, जय-जय हो त्यौहार॥

ॐ ह्रीं श्री जन्मकल्याणकमण्डित श्रीअजितनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६॥

कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा, जन्मे शम्भवनाथ।
जितारि नृप के आँगने, पर्व किए सुरनाथ॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकमण्डित श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२७॥

माघ शुक्ल बारस जहाँ, जन्मे नन्दननाथ।
पिता स्वयंवर के यहाँ, किए पर्व सुरनाथ॥

ॐ ह्रीं श्री जन्मकल्याणकमण्डित श्रीअभिनन्दननाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८॥

चैत्र शुक्ल ग्यारस लिए, सुमतिनाथ प्रभु जन्म।
पिता मेघरथ के यहाँ, जन्मोत्सव की धूम॥

ॐ ह्रीं श्री जन्मकल्याणकमण्डित श्रीसुमतिनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९॥

तेरस कार्तिक कृष्ण को, पद्मोत्सव की धूम।
धरणराज घर जन्म की, बजे बधाई झूम॥

ॐ ह्रीं श्री जन्मकल्याणकमण्डित श्रीपद्मप्रभ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३०॥

ज्येष्ठ शुक्ल बारस हुई, झूम-झूम विख्यात।
सुप्रतिष्ठ घर आँगने, जन्मे सुपार्श्वनाथ॥

ॐ ह्रीं श्री जन्मकल्याणकमण्डित श्रीसुपार्श्वनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३१॥

ग्यारस कृष्णा पौष में, जन्मे चन्द्र जिनेश।
महासेन के चन्द्रपुर, उत्सव किए सुरेश॥

ॐ ह्रीं श्री जन्मकल्याणकमण्डित श्रीचन्द्रप्रभ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२॥

एकम अगहन शुक्ल को, जन्मोत्सव त्यौहार।
राजा श्री सुग्रीव के, आए सुविधिकुमार॥
ॐ ह्रीं श्री जन्मकल्याणकमण्डित श्रीसुविधिनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३॥

माघकृष्ण बारस लिए, शीतल जिनवर जन्म।
राजा दृढ़रथ भद्रपुर, पर्व करें हो धन्य॥
ॐ ह्रीं श्री जन्मकल्याणकमण्डित श्रीशीतलनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४॥

ग्यारस फाल्गुन कृष्ण को, प्रभु श्रेयांस अवतार।
विष्णु नृप घर आँगने, हो बधाई त्यौहार॥
ॐ ह्रीं श्री जन्मकल्याणकमण्डित श्रीश्रेयांसनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५॥

चौदस फाल्गुन कृष्ण को, पूज्योत्सव घड़ि आई।
राजा श्री वसुपूज्य के, बाजे जन्म बधाई॥
ॐ ह्रीं अर्हं जन्मकल्याणकमण्डित श्रीवासुपूज्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६॥

चौथी शुक्ला माघ में, जन्मे विमल जिनेन्द्र।
कृत वर्मा गृह राज्य में, उत्सव करें सुरेन्द्र॥
ॐ ह्रीं श्री जन्मकल्याणकमण्डित श्रीविमलनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७॥

बारस कृष्णा ज्येष्ठ को, जन्में बाल अनन्त।
सिंहसेन नृप के यहाँ, बाजे ढोल मृदंग॥
ॐ ह्रीं श्री जन्मकल्याणकमण्डित श्रीअनन्तनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८॥

तेरस शुक्ला माघ को, जन्मी धार्मिक साँच।
भानुराज के आँगने, दिल-दिल घोड़ी नाँच॥
ॐ ह्रीं श्री जन्मकल्याणकमण्डित श्रीधर्मनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३९॥

चौदह कृष्णा ज्येष्ठ को, जन्मे शान्ति विराट।
विश्वसेन के आँगने, ज्ञान-बताशा बाँट॥
ॐ ह्रीं श्री जन्मकल्याणकमण्डित श्रीशान्तिनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४०॥

प्रथम शुक्ल वैशाख को, जन्मे कुन्थुजिनेश।
सूर्यसेन के आँगने, बाजे ढोल विशेष॥
ॐ ह्रीं श्री जन्मकल्याणकमण्डित श्रीकुन्थुनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४१॥
चौदस अगहन शुक्ल में, जन्मे अरह अडोल।
पिता सुदर्शन के यहाँ, भक्त बजाएँ ढोल॥
ॐ ह्रीं श्री जन्मकल्याणकमण्डित श्रीअरनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४२॥
ग्यारस अगहन शुक्ल में, जन्मे मल्लि जिनन्द।
कुम्भराज गृह राज्य में, शोर-बुलौआ-नन्द॥
ॐ ह्रीं श्री जन्मकल्याणकमण्डित श्रीमल्लिनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३॥
वैशाख कृष्ण दशमी तिथि, जन्मे सुव्रतनाथ।
सुमित्रनृप के आँगने, सुर नर नाँचे साथ॥
ॐ ह्रीं अर्हं जन्मकल्याणकमण्डित श्रीमुनिसुव्रतनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४॥
दसें कृष्ण आषाढ़ को, जन्मे प्रभु नमिनाथ।
लड्डू राजा विजय ने, बाँटे, नाँचे साथ॥
ॐ ह्रीं श्री जन्मकल्याणकमण्डित श्रीनमिनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५॥
श्रावण षष्ठी शुक्ल में, हुआ जनम का शोर।
समुद्रविजय के आँगने,नेमि किए किलकोर॥
ॐ ह्रीं श्री जन्मकल्याणकमण्डित श्रीनेमिनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६॥
पौष कृष्ण ग्यारस तिथि, जन्मे पार्श्वकुमार।
विश्वसेन काशी करे, नाँच-नाँच त्यौहार॥
ॐ ह्रीं श्री जन्मकल्याणकमण्डित श्रीपार्श्वनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७॥
तेरस शुक्ला चैत्र को, जन्मे वीर जिनेश।
सिद्धारथ घर आँगने, उत्सव किए सुरेश॥
ॐ ह्रीं श्री जन्मकल्याणकमण्डित श्रीमहावीर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८॥

(दोहा)

चैत्र श्याम नवमी दिना, बने दिगम्बर नाथ।
मोह तजा आतम भजा, जिन्हें नमें नत माथ॥

ॐ ह्रीं श्री तपकल्याणकमण्डित श्रीवृषभनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४९॥

शुक्ला नवमी माघ को, तजें अजित दुख धाम।
संत बने अंतरमुखी, सुर-नर करें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री तपकल्याणकमण्डित श्रीअजितनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५०॥

मगशिर शुक्ला पूर्णिमा, राग आग सब छोड़।
पंथ धार निर्ग्रन्थ प्रभु, जिन्हें नमन कर जोड़॥

ॐ ह्रीं श्री तपकल्याणकमण्डित श्रीशम्भवनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५१॥

द्वादश शुक्ला माघ में, बन्धन क्रन्दन छोड़।
दीक्षा ले नन्दन जिन्हें, वन्दन हो सिर मोड़॥

ॐ ह्रीं श्री तपकल्याणकमण्डित श्रीअभिनन्दननाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५२॥

नवीं शुक्ल वैशाख को, तजें अयोध्या धाम।
सुमतिनाथ तप से सजे, हम सब करें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री तपकल्याणकमण्डित श्रीसुमतिनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५३॥

तेरस कार्तिक कृष्ण को, तजें मोह संसार।
बने पद्म प्रभु संत जी, जिन्हें नमन शत बार॥

ॐ ह्रीं श्री तपकल्याणकमण्डित श्रीपद्मप्रभ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५४॥

बारस शुक्ला ज्येष्ठ में, तजें-मोह संसार।
प्रभु सुपार्श्व मुनि बन गए, गूँजे जय-जयकार॥

ॐ ह्रीं श्री तपकल्याणकमण्डित श्रीसुपार्श्वनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५५॥

ग्यारस कृष्णा पौष में, तजें मोह संसार।
मुनि बनकर तप से सजे, जय-जय बारंबार॥

ॐ ह्रीं श्री तपकल्याणकमण्डित श्रीचन्द्रप्रभ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५६॥

एकम अगहन शुक्ल को, कर परिग्रह की शाम।
सुविधि तपोत्सव से सजे, जिनको नम्र प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री तपकल्याणकमण्डित श्रीसुविधिनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५७॥

माघकृष्ण बारस तिथि, तजें राग की वस्तु ।
नग्न सहेतुक में हुए, शीतल मुनि को नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं श्री तपकल्याणकमण्डित श्रीशीतलनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५८॥

ग्यारस फाल्गुन कृष्ण को, राजा धर संन्यास।
ग्रन्थ त्याग निर्ग्रन्थ बन, जय-जय मुनि श्रेयांस॥

ॐ ह्रीं श्री तपकल्याणकमण्डित श्रीश्रेयांसनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५९॥

चौदस फाल्गुन कृष्ण को, तजें मोह जग वस्तु।
वासुपूज्य मुनि बन गए, सादर जिन्हें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं श्री तपकल्याणकमण्डित श्रीवासुपूज्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६०॥

जन्म तिथि दीक्षा धरे, छोड़े घर-संसार।
श्रमण संत विमलेश को, वन्दन बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्री तपकल्याणकमण्डित श्रीविमलनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६१॥

उसी जन्म तिथि में हुआ, शुभ दीक्षा कल्याण।
स्वामी संत अनन्त को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री तपकल्याणकमण्डित श्रीअनन्तनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६२॥

जन्मोत्सव की धूम में, लखकर उल्कापात।
धर्मनाथ मुनि बन पुजे, भक्त हुए नत माथ॥

ॐ ह्रीं श्री तपकल्याणकमण्डित श्रीधर्मनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६३॥

जन्म-तिथी में तप धरे, तजें अशान्ति शोर।
शान्तिनाथ मुनि को हुई, नमोऽस्तु चारों ओर॥

ॐ ह्रीं श्री तपकल्याणकमण्डित श्रीशान्तिनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६४॥

जन्म तिथि में चक्र तज, कुन्थुप्रभु तप धार।
जय-जय जिनशासन हुआ, जिन्हें नमन बहु बार॥

ॐ ह्रीं श्री तपकल्याणकमण्डित श्रीकुन्थुनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६५॥

दशमी अगहन शुक्ल को, देखे मेघ विनाश।
सन्त अरह प्रभु को नमन, जो धारे संन्यास॥

ॐ ह्रीं श्री तपकल्याणकमण्डित श्रीअरनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६६॥

चंचल बिजली की चमक, जन्म तिथी में देख।
मल्लिप्रभु दीक्षित हुए, जिन्हें नमन सिर टेक॥

ॐ ह्रीं श्री तपकल्याणकमण्डित श्रीमल्लिनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६७॥

दशमी वदि वैशाख को, परिग्रह का गृह छोड़।
मुनिसुव्रत तप से सजे, सो नमोऽस्तु कर जोड़॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणकमण्डित श्रीमुनिसुव्रतनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६८॥

संत जन्म तिथि में बने, पा रत्नत्रय वस्तु।
निर्ग्रन्थी नमिनाथ को, बारम्बार नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं श्री तपकल्याणकमण्डित श्रीनमिनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६९॥

श्रावण षष्ठी शुक्ल में, पशुओं की सुन त्राण।
नेमिप्रभु तप से सजे, हम तो करें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री तपकल्याणकमण्डित श्रीनेमिनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७०॥

पौष कृष्ण एकादशी, पार्श्व बने निर्ग्रन्थ।
तप कल्याणक हम भजें, हो नमोऽस्तु जयवंत॥

ॐ ह्रीं श्री तपकल्याणकमण्डित श्रीपार्श्वनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७१॥

अगहन दसवीं कृष्ण को, तजा मोह परिवार।
बने तपस्वी तप सजे, होती जय-जयकार॥

ॐ ह्रीं श्री तपकल्याणकमण्डित श्रीमहावीर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७२॥

(दोहा)

ग्यारस फाल्गुन कृष्ण में, घातिकर्म सब नाश।
बने केवली लोक ये, नम्र हुआ बन दास॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीवृषभनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७३॥

ग्यारस शुक्ला पौष को, पाकर केवलज्ञान।
अजित बने भगवन अजित, जिन्हें नमन अविराम॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीअजितनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७४॥

कार्तिक कृष्णा चौथ में, पाकर केवलज्ञान।
श्रावस्ती के लाल को, नमन करें धर ध्यान॥३॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीशम्भवनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७५॥

पौष शुक्ल चौदश मिली,निज निधि केवलराज।
जय हो अभिनन्दन विभो, नमन आपको आज॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीअभिनन्दननाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७६॥

ग्यारस शुक्ला चैत्र को, पाए पद अरिहन्त।
ज्ञानोत्सव में गूँजती, जय-जय सुमति महन्त॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीसुमतिनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७७॥

चैत्र शुक्ल पूनम हुई, जग में पूज्य महान्।
घाति नशा प्रभु पद्म ने, पाया केवलज्ञान॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीपद्मप्रभ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७८॥

षष्ठी फाल्गुन कृष्ण में, लोकालोक दिखाए।
सुर-नर नाथ सुपार्श्व को, सादर शीश नवाये॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीसुपार्श्वनाथ -अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७९॥

सातें फाल्गुन कृष्ण में, बने केवली नाथ।
चन्द्रपुरी के चन्द्र को, झुकें सभी के माथ॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीचन्द्रप्रभ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८०॥

कार्तिक शुक्ला दूज को, सुविधि हरे अज्ञान।
समवसरण तब लग गया, जिन्हें नमन अविराम॥
ॐ ह्रीं श्री ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीसुविधिनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८१॥

चौदस कृष्ण पौष में, कर अज्ञान जयोस्तु।
शीतल प्रभु सर्वज्ञ को, करते भक्त नमोऽस्तु॥
ॐ ह्रीं श्री ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीशीतलनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८२॥

कृष्णा माघ अमास को, उपजा केवलज्ञान।
सुन-नर सब मिल पूजते, जय श्रेयांस भगवान्॥
ॐ ह्रीं श्री ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीश्रेयांसनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८३॥

दूज माघ सुदि को प्रभो, घाति कर्म परिहार।
वासुपूज्य तीर्थेश को, नमन अनन्तों बार॥
ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीवासुपूज्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८४॥

षष्ठी कृष्णा माघ में, पाए केवलज्ञान।
विमलेश्वर अरिहन्त को, नमस्कार धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीविमलनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८५॥

कृष्णा चैत्र अमास को, कर्म नशा ये चार।
बने अनन्त अरिहन्त जी, जिन्हें नमोऽस्तु बहुबार॥
ॐ ह्रीं श्री ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीअनन्तनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८६॥

पौष पूर्णिमा को हरे, घाति कर्म संसार।
धर्म संत अर्हन्त को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं श्री ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीधर्मनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८७॥

दशमी शुक्ला पौष में, पाया केवलराज।
नमन शान्ति अर्हन्त को, करती भक्त समाज॥
ॐ ह्रीं श्री ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीशान्तिनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८८॥

चैत्र शुक्ल की तीज में, पा कैवल्य सुवस्तु।
कुन्थुप्रभु अरिहन्त को, हम तो करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीकुन्थुनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८९॥

बारस कार्तिक शुक्ल को, हरे घातिया धूल।
अरह केवली को नमन, अर्पित श्रद्धा फूल॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीअरनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९०॥

पौष कृष्ण की दूज में, पाए प्रभु कैवल्य।
मल्लिप्रभु तीर्थेश को, नमन हरे अब शल्य॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीमल्लिनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९१॥

नवीं कृष्ण वैशाख को, हर ली संकट रात।
भज चाहें कैवल्य हम, जय मुनिसुव्रत नाथ॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीमुनिसुव्रतनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९२॥

ग्यारस अगहन शुक्ल में, हुआ ज्ञान कल्याण।
परमपिता नमिनाथ को, दुनियाँ करे प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीनमिनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९३॥

शुक्ला एकम् क्वार को, घाति कर्म जयोस्तु।
मोक्षमार्ग अध्यात्म-दा, नेमि प्रभु को नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीनेमिनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९४॥

कृष्ण चतुर्थी चैत्र को, जीते सब उपसर्ग।
पार्श्व प्रभु को नमोऽस्तु कर, करें ज्ञान का पर्व॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीपार्श्वनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९५॥

दसें शुक्ल वैशाख को, पाया केवलज्ञान।
शासननायक बन पुजे, महावीर भगवान्॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीमहावीर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९६॥

(दोहा)

माघ कृष्ण चौदश दिना, हरे कर्म का भार।
हिमगिरि से शिवपुर गए, हम पाए त्यौहार॥

ॐ ह्रीं श्री मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीवृषभनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९७॥

शुक्ल पंचमी चैत्र को, मधुवन से कर ध्यान।
गए अजितप्रभु मोक्ष को, जिन को नम्र प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीअजितनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९८॥

चैत्र शुक्ल छठ को प्रभु, पाए मोक्ष महीश।
धवलकूट सम्मेदगिरि, को वन्दन नत शीश॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीशम्भवनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९९॥

छठी शुक्ल वैशाख को, गए मोक्ष के धाम।
नन्दनप्रभु गिरिराज को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीअभिनन्दननाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१००॥

चैत्र शुक्ल एकादशी, मोक्ष महोत्सव सार।
भक्त सुमतिप्रभु को, करें नमन अनन्तों बार॥

ॐ ह्रीं श्री मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीसुमतिनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०१॥

चौथ कृष्ण फागुन हुई, पद्मप्रभु के नाम।
मोक्ष गए सम्मेद से, लाखों जिन्हें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीपद्मप्रभ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०२॥

सातें फागुन कृष्ण में, प्रभु सुपार्श्व गए मोक्ष।
गिरिवर प्रभास कूटमय, हम तो देते धोक॥

ॐ ह्रीं श्री मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीसुपार्श्वनाथ -अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०३॥

सम्मेदाचल से गए, चन्द्र मोक्ष के धाम।
सातें फागुन शुक्ल में, सुर नर करें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीचन्द्रप्रभ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०४॥

भाद्र अष्टमी शुक्ल को, सुविधि बने सिद्धीश।
मुक्त हुए सम्मेद से, जिन्हें झुकाएँ शीश॥
ॐ ह्रीं श्री मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीसुविधिनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०५॥

अश्विन शुक्ला अष्टमी, इक हजार मुनि साथ।
मोक्ष गए सम्मेद से, नमोऽस्तु शीतलनाथ॥
ॐ ह्रीं श्री मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीशीतलनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०६॥

पूनम श्रावण शुक्ल को, सम्मेदशिखर के धाम।
मोक्ष गए श्रेयांस प्रभु, सादर जिन्हें प्रणाम॥
ॐ ह्रीं श्री मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीश्रेयांसनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०७॥

भाद्र शुक्ल दस लक्षणी, अनन्त चौदस साथ।
चम्पापुर से पूज्य प्रभु, मुक्त जिन्हें नत माथ॥
ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीवासुपूज्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०८॥

आठें कृष्ण अषाढ़ को, विमल प्रभु को मोक्ष।
सम्मेदाचल से हुआ, जिनको सादर धोक॥
ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीविमलनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०९॥

उसी ज्ञान तिथि में गए, मोक्ष, अनन्त ॠषीश।
सम्मेदाचल को नमन, मिले अनन्ताशीष॥
ॐ ह्रीं श्री मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीअनन्तनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११०॥

ज्येष्ठ चतुर्थी शुक्ल को, मोक्ष धर्म प्रभु पाए।
सुदत्त कूट शाश्वत गिरि, जिनको शीश नवाये॥
ॐ ह्रीं श्री मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीधर्मनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१११॥

चौदस कृष्णा ज्येष्ठ को, मोक्ष गए शान्तीश।
कुन्दप्रभ कूट शाश्वतगिरि, को वन्दन नत शीश॥
ॐ ह्रीं श्री मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीशान्तिनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११२॥

शिखर ज्ञानधरकूट से, मोक्ष कुन्थुप्रभु पाए।
मोक्ष जन्म तप साथ में, हम तो शीश नवाए॥

ॐ ह्रीं श्री मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीकुन्थुनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११३॥

चैत अमावस कृष्ण में, मोक्ष लिए प्रभु लूट।
नमन करें अरनाथ को, पूजें नाटककूट॥

ॐ ह्रीं श्री मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीअरनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११४॥

पाँचे फागुन शुक्ल में, मोक्ष मल्लिप्रभु पाए।
शाश्वत सम्बलकूट को, हम तो शीश झुकाए॥

ॐ ह्रीं श्री मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीमल्लिनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११५॥

फागुन द्वादश कृष्ण को, इक हजार मुनि साथ।
मोक्ष गए सम्मेद से, नमोऽस्तु सुव्रतनाथ॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीमुनिसुव्रतनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११६॥

चौदस कृष्ण वैशाख को, मोक्ष गए नमिनाथ।
शिखर मित्रधरकूट को, नमन करें नत माथ॥

ॐ ह्रीं श्री मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीनमिनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११७॥

आठें (सातें) शुक्ल अषाढ़ को, प्राप्त किए निर्वाण।
नेमिप्रभु, गिरनार को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीनेमिनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११८॥

श्रावण शुक्ला सप्तमी, मोक्ष सप्तमी पर्व।
नमोऽस्तु पार्श्व निर्वाण को, भजें शिखरजी सर्व॥

ॐ ह्रीं श्री मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीपार्श्वनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११९॥

कार्तिक कृष्ण अमास को, हरे कर्मरज सर्व।
पावापुर से मोक्ष जा, दिए दिवाली पर्व॥

ॐ ह्रीं श्री मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीमहावीर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२०॥

(मैत्री आदि चार भावना)

सब जीवों से हम सदा, धारें मैत्री भाव।
कहीं रहे ना शत्रुता, हो अरिहन्त स्वभाव॥

ॐ ह्रीं श्री मैत्रीभावमण्डित-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२१॥

गुणी जनों को देख हम, मन में बहु हर्षाय।
ऐसा भाव प्रमोद जो, श्री अरिहन्त दिलाय॥

ॐ ह्रीं श्री प्रमोदभावमण्डित-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२२॥

दुखी प्राणियों पर सदा, बहे दया की धार।
श्री अरिहन्त जिनेन्द्र दें, करुणा का संसार॥

ॐ ह्रीं श्री कारुण्यभावमण्डित-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२३॥

दुर्जन क्रूर कुमार्ग पर, धरें सदा संतोष।
तो अरिहन्त जिनेन्द्र का, मिलता है गुण कोश॥

ॐ ह्रीं श्री माध्यस्थभावमण्डित-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२४॥

(प्रशम-आदि चार भावना)

कर्म कषायों के करें, सदा प्रशम के कार्य।
मिथ्या हर सम्यक्त्व दें, श्री अरिहन्त जिनार्य॥

ॐ ह्रीं श्री प्रशमभावमण्डित-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२५॥

डरो दुखी संसार से, तभी मिले सुख धाम।
श्री अरिहन्त जिनेन्द्र दें, शुभ संवेग मुकाम॥

ॐ ह्रीं श्री संवेगभावमण्डित-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२६॥

अनुकम्पा करके मिले, शुभ सम्यक् श्रद्धान।
हिल-मिलकर प्राणी करें, अरिहन्तों का ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अनुकम्पाभावमण्डित-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२७॥

धर्म तथा भगवान पर, जो रखता विश्वास।
वही भाव आस्तिक्य है, दे अरिहन्त निवास॥

ॐ ह्रीं श्री आस्तिक्यभावमण्डित-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२८॥

पूर्णार्घ्य

(जोगीरासा)

सभी केवली अरिहन्ता प्रभु, जिनशासन के तीरा।
चिदानन्द चैतन्य चिदातम, सचमुच! ये तो हीरा॥
हम जैसे पत्थर को परखो, और बना लो हीरा।
जैसे भव से आप तिरे हो, हमें तिरा दो वीरा॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं अष्टाविंशत्यधिकशतगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

(जाप्य मंत्र)

ॐ ह्रीं श्री अरिहन्तचक्रेभ्यो नमः। अथवा
ॐ ह्रीं णमो अरिहन्ताणं। अथवा **ॐ ह्रीं अर्हं नमः।**

जयमाला

(दोहा)

दोष रहित गुण सहित है, भक्तों के भगवान।
नमोऽस्तु प्रभु अरिहन्त को, करें करें गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

जय जय श्री अरिहन्त जिनेश्वर, समवसरण में जो सोहें।
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, हम भक्तों के मन मोहें॥
दिव्यध्वनि की सिंह गर्जना, हरे पाप गजराजों को।
अतः भजें हम मोक्षमार्ग के, दिग्दर्शक जिनराजों को॥१॥
पिछले भव तीर्थंकरप्रकृति, या इस भव में बाँधी हो।
उदय समय अरिहन्त हुए फिर, पुद्‌गल माया त्यागी हो॥
पूज्य पंचकल्याणक जिनको, जीवन में मिल जाते हैं।
अद्‌भुत वैभव पाकर वे तो, जीवन धन्य बनाते हैं॥२॥

पर्व गर्भ कल्याणक में तो, रत्न वृष्टि तक हो जाती।
जन्म समय में क्षणिक शान्ति तो, नरकों तक में हो जाती॥
पाण्डुक जाकर पाण्डुक तल पर, फिर अभिषेक पर्व होना।
ऐसा हमें मिलेगा कब रे!, जो हर ले रोना धोना॥३॥
राज भोग में रमकर प्यारे, वैरागी जीवन जीना।
विषय विकार त्यागकर जग में, यथाजात दीक्षा लेना॥
मौन धारना घाति घातना, समवसरण का लग जाना।
तीर्थ चलाना मुक्ति पाना, सच! कितना अद्‌भुत माना॥४॥
शुभ छ्यालीस मूलगुण पाना, दोष अठारह ना होना।
ओम् णमो अरिहन्ताणं का, इतना वैभव है सोना॥
श्री अरिहन्तचक्र की पूजा, दोष हरे गुण दान करे।
अपने 'सुव्रत' को अपने सम, आगामी भगवान करे॥५॥

(सोरठा)

अरिहन्तों का ध्यान, पूजा कर हम कर रहे।
गुणियों का गुणगान, नमोऽस्तु सादर कर रहे॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं अष्टाविंशतधिक-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

अरिहन्तचक्र स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, अरिहन्तचक्र जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

षष्ठम पूजन

स्थापना (शंभू)

अरिहन्त प्रभु! अरिहन्त प्रभु!, हो समवसरण आसीन तुम्हीं।
हे! वीतराग सर्वज्ञ प्रभु, हितकारी कमलासीन तुम्हीं॥
सो मुक्तिवधू आमंत्रण दे, पर हम तो पूजा रचा रहे।
दुख दर्द हरो सुख शान्ति करो, हम नमोऽस्तु कर सिर झुका रहे॥

(दोहा)

अरिहन्तों के मूलगुण, जैन धर्म की शान।
जिनकी पूजा हम करें, कर नमोऽस्तु सम्मान॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोअरिहन्ताणं षट्पञ्चाशदधिकद्विशतगुणीअरिहन्तचक्र अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(ज्ञानोदय)

दुनियाँ जीना सिखा रही पर, अरिहन्तों की क्या शिक्षा।
जनम मरण को हरने ले लो, अरिहन्तों जैसी दीक्षा॥
अरिहन्तों की शिक्षाएँ हम, जलधारा से पूज रहे।
अरिहन्तों को करके नमोऽस्तु, जय जयकारे गूँज रहे॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोअरिहन्ताणं षट्पञ्चाशदधिकद्विशतगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

चार शरण में मंगल उत्तम, शरण रही अरिहन्तों की।
दुनियाँ उनको हरा न सकती, जिन्हें छाँव भगवन्तों की॥
अरिहन्तों की छाँव मिले सो, हम चंदन से पूज रहे।
अरिहन्तों को करके नमोऽस्तु, जय जयकारे गूँज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं षट्पञ्चाशदधिकद्विशतगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

जब अरिहन्त कृपा करते तब, मोक्ष महल में घूम सको।
सिद्ध प्रभु के दर्शन करने, अरिहन्तों के चरण भजो॥
सिद्धों सम अविनाशी बनने, पुंज चढ़ाकर पूज रहे।
अरिहन्तों को करके नमोऽस्तु, जय जयकारे गूँज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं षट्पञ्चाशदधिकद्विशतगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

जब अरिहन्त गमन करते तो, दो सौ पच्चीस कमल खिलें।
मुक्तिवधू वरमाला करती, हम भक्तों के भाग्य खिलें॥
अपनी वैर बुराई हरने, पुष्प चढ़ाकर पूज रहे।
अरिहन्तों को करके नमोऽस्तु, जय जयकारे गूँज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं षट्पञ्चाशदधिकद्विशतगुणी अरिहन्तचक्रेभ्य: कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

अरिहन्तों की चाय पियो सब, करो ध्यान का नाश्ता रे।
ज्ञानामृत का भोजन करलो, यही मोक्ष का रास्ता रे॥
स्वानुभूति नैवेद्य चखें हम, क्षुधा हरण को पूज रहे।
अरिहन्तों को करके नमोऽस्तु, जय जयकारे गूँज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं षट्पञ्चाशदधिकद्विशतगुणी अरिहन्तचक्रेभ्य: क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

अरिहन्तों की दया छाँव में, गाय शेर मिलकर रहते।
ऐसी यह सर्वज्ञ दशा है, सम्यग्ज्ञान इसे कहते॥
केवलज्ञान प्राप्त करने को, दीप जला हम पूज रहे।
अरिहन्तों को करके नमोऽस्तु, जय जयकारे गूँज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं षट्पञ्चाशदधिकद्विशतगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

योग ध्यान कर हरे घातिया, समवसरण की सभा सजी।
विजय सुगन्धी महक उठी तो, कर्मों की फिर बैण्ड बजी॥
कर्म विजेता बनने को हम, धूप चढ़ाकर पूज रहे।
अरिहन्तों को करके नमोऽस्तु, जय जयकारे गूँज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं षट्पञ्चाशदधिकद्विशतगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

शुक्ल ध्यान के फल से स्वामी, मोक्षमार्ग दर्शाते हैं।
दुख संकट भक्तों के हर के, सबको गले लगाते हैं॥
हमें जगह चरणों में देना, हम फल लेकर पूज रहे।
अरिहन्तों को करके नमोऽस्तु, जय जयकारे गूँज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं षट्पञ्चाशदधिकद्विशतगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

अरिहन्तों के बेटे हम हैं, अतः करें उनकी सेवा।
सो प्रसन्न होकर स्वामी जी, हमें सम्पदा दें मेवा॥
हम अनाथ हमको स्वीकारो, अर्घ्य चढ़ा हम पूज रहे।
अरिहन्तों को करके नमोऽस्तु, जय जयकारे गूँज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं षट्पञ्चाशदधिकद्विशतगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अर्घ्यावली (दोहा)

मूलगुणी निर्दोष हैं, दे धार्मिक उपदेश।
करके नमोऽस्तु हम भजें, श्री अरिहन्त जिनेश॥

जन्म के १० अतिशय (चौपाई)

देह जन्म से सुन्दर इतनी, सुन्दरता नहिं सुन्दर जितनी।
जिन-दर्शन से सुन्दर तन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥

ॐ ह्रीं श्री जन्मातिशय सर्वांगसुन्दरगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१॥

देह जन्म से इतनी महके, जितने इत्र न चंदन महके।
जिन-श्रद्धा से सुरभित तन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥
ॐ ह्रीं श्री जन्मातिशय सुगंधितशरीरगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२॥
नहीं जन्म से मैल-पसीना, तीर्थंकर तन रत्न नगीना।
जिन-भक्ति से तन कुन्दन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥
ॐ ह्रीं श्री जन्मातिशय निःस्वेदत्वगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३॥
मल मूत्रों बिन काया होती, दिव्य अलौकिक जैसे मोती।
जिनपूजन से निर्मल तन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥
ॐ ह्रीं श्री जन्मातिशय निर्मलतनगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४॥
हित-मित मिश्रित जिनवर वाणी, सदा जन्म से हो कल्याणी।
जिनवाणी से सिद्ध वचन हों, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥
ॐ ह्रीं श्री जन्मातिशय हित-मित-प्रियवचनगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५॥
तीर्थंकर की देह जन्म से, अतुल महाबलवान अन्य से।
जिनसेवा से अतुल्य बल हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥
ॐ ह्रीं श्री जन्मातिशय अतुलबलगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६॥
सदा प्रेम वात्सल्य अन्य से, अतः रक्त हो श्वेत जन्म से।
जिनचिन्तन से विश्व प्रेम हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥
ॐ ह्रीं श्री जन्मातिशय श्वेतरुधिरगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७॥
देह जन्म से बड़ी विलक्षण, एक हजार आठ शुभ लक्षण।
जिनवन्दन से शुभ लक्षण हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥
ॐ ह्रीं श्री जन्मातिशय सहस्त्रलक्षणगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८॥
नापतौल में यथास्थान हो, प्रभु का समचतुष्क संस्थान हो।
जिनअर्चन से सुडौल तन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥
ॐ ह्रीं श्री जन्मातिशय समचतुष्कसंस्थानगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९॥

देह सुकोमल मक्खन जैसी, पर मजबूत बहुत हीरे सी।
जिनमंथन से शुभ संहनन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥
ॐ ह्रीं श्री जन्मातिशय वज्रवृषभनाराचसंहननगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०॥

केवलज्ञान के १० अतिशय

सौ-सौ योजन पार नाथ के, सुभिक्षता हो प्रलय नाश के।
जिनकीर्तन से सुख क्षण-क्षण हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥
ॐ ह्रीं श्री ज्ञानातिशय चतुर्दिश सुभिक्षतागुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११॥
धनुष पाँच सौ ऊपर नभ में, पहुँचे कमल विहारी नभ में।
जिनअर्पण से उदार मन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥
ॐ ह्रीं श्री ज्ञानातिशय आकाशगमनगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२॥
एक मुखी के चतुर्मुखी हों, भक्त ताकते खुशी-खुशी हों।
जिनदर्पण से शुचि चेतन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥
ॐ ह्रीं श्री ज्ञानातिशय चतुर्मुखगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३॥
अरिहन्तों का वास जहाँ हो, वहाँ न हिंसा दया सदा हो।
जिनचरणों से वध न हनन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥
ॐ ह्रीं श्री ज्ञानातिशय मैत्रीभावगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४॥
प्रभु अरिहन्त जहाँ रम जाते, वहाँ कभी उपसर्ग न आते।
जिनशरणों से कष्ट शमन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥
ॐ ह्रीं श्री ज्ञानातिशय निरुपसर्गगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५॥
कवलाहार के न भोजन हों, नोकर्मों के भोज्य भजन हों।
जिनआगम से आत्म रमण हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥
ॐ ह्रीं श्री ज्ञानातिशय संतुष्टिगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६॥
तीर्थंकर प्रभु केवलज्ञानी, सभी कलाओं के हो स्वामी।
जिनशासन से शुभ जीवन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥
ॐ ह्रीं श्री ज्ञानातिशय समस्तविद्यागुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७॥

बिना बढ़े नख केश शोभते, अरिहन्तों को भक्त खोजते।
जिन से परमौदारिक तन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥
ॐ ह्रीं श्री ज्ञानातिशय समाननखकेशगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८॥
अपलक प्रभु अरिहन्त सुभीते, पलक झपकना आलस जीते।
जिनतीरथ से ज्ञान नयन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥
ॐ ह्रीं श्री ज्ञानातिशय अपलकगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९॥
परमौदारिक तन की माया, प्रभु की होती कभी न छाया।
जिनमूरत से विभ्रम कम हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥
ॐ ह्रीं श्री ज्ञानातिशय निरच्छायागुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०॥

देवकृत १४ अतिशय

अर्द्धमागधी जो ओंकारी, भाषा समझें सब संसारी।
जिनआज्ञा से ऊर्ध्व गमन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥
ॐ ह्रीं श्री देवकृत अतिशय अर्धमागधीभाषा-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१॥
समवसरण में मैत्री होती, शत्रु भाव बिन जलती ज्योति।
जिनमहिमा से वैर हरण हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥
ॐ ह्रीं श्री देवकृत अतिशय मैत्री-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२॥
ग्रीष्म शीत ना धूम्र धूलियाँ, दशों दिशा में दीपावलियाँ।
जिनपद रज से समवसरण हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥
ॐ ह्रीं श्री देवकृत अतिशय निर्मलदिशा-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३॥
शरद काल में मौसम जल ज्यों, करते देव गगन निर्मल त्यों।
जिनशान्ति से अशान्ति शमन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥
ॐ ह्रीं श्री देवकृत अतिशय निर्मलआकाश-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४॥
एक साथ सब फूलें फलतीं, ऋतुएँ प्रभु को देख मचलतीं
जिनआश्रय से आत्म मगन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥
ॐ ह्रीं श्री देवकृत अतिशय सर्वऋतुफल-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५॥

इक-इक योजन तक भू ऐसी, चम-चम चमके दर्पण जैसी।
जिन-आलय से आत्म रतन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥
ॐ ह्रीं श्री देवकृत अतिशय निर्मलभूमि-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६॥

कुल दो सौ पच्चीस कमल के, चलते बीचों बीच कदम से।
जिनचर्या से मोक्ष गमन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥
ॐ ह्रीं श्री देवकृत अतिशय कमलगमनत्व-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७॥

जिन शासन जयवंत सदा हो, जय-जय नभ में देव कथा हो।
जिन की जय से जय चेतन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥
ॐ ह्रीं श्री देवकृत अतिशय जयकार-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८॥

समवसरण में मन्दी-मन्दी, पवन बहे अनुकूल सुगन्धी।
जिनचर्चा से शुद्ध चरण हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥
ॐ ह्रीं श्री देवकृत अतिशय सुगंधितपवन-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९॥

रिमझिम-रिमझिम जल की वर्षा, मंद सुगंधित खुश-खुश नासा।
जिनभावन से शिव साधन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥
ॐ ह्रीं श्री देवकृत अतिशय गंधोदकवृष्टि-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३०॥

गड्ढे कंकड़ बिन भू-तल हो, देव करें यों ज्यों मखमल हो।
जिन की नुति से निज उन्नति हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥
ॐ ह्रीं श्री देवकृत अतिशय निर्मलभू-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३१॥

समवसरण अरिहन्त जहाँ हों, भक्तों को स्वानन्द वहाँ हो।
जिननन्दन से अभिनन्दन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥
ॐ ह्रीं श्री देवकृत अतिशय सर्वानन्द-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२॥

हजार आरे सहित अग्र हो, ओज तेजमय धर्मचक्र हो।
जिनचक्र से सिद्धचक्र हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥
ॐ ह्रीं श्री देवकृत अतिशय धर्मचक्र-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३॥

छत्र चँवरमय अष्टद्रव्य जो, शुभ शोभित या चलें अग्र हो।
जिन मंगल से मलगालन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥
ॐ ह्रीं श्री देवकृत अतिशय मंगलद्रव्य-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४॥

अनन्तचतुष्टय

ज्ञानावरणी सब हर डाला, पाया केवलज्ञान उजाला।
जिनरवि से अज्ञान हरण हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥
ॐ ह्रीं श्री अनन्तज्ञान-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५॥

सकल दर्शनावरणी हरके, अनन्तदर्शन पाया निज से।
जिनदर्शन से निजदर्शन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥
ॐ ह्रीं श्री अनन्तदर्शन-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६॥

मोहनीय का नशा उतारा, अनन्त सुख सम्यक् उर धारा।
जिनमोहन से निज शोधन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥
ॐ ह्रीं श्री अनन्तसुख-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७॥

अन्तराय की जीते पीड़ा, अनन्तवीर्य का पाए हीरा।
जिनशक्ति से विघ्नहरण हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥
ॐ ह्रीं श्री अनन्तवीर्य-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८॥

अष्ट-प्रातिहार्य

अशोक तरु दुख शोक मिटाता, भक्तजनों को छाँव दिलाता।
जिनछाया से शोक हरण हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥
ॐ ह्रीं श्री अशोकतरु प्रातिहार्य-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३९॥

पुष्पवृष्टि नभ से सुर करते, दिव्य वचनसम मोती झड़ते।
जिनवर्षा से शुचि चेतन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥
ॐ ह्रीं श्री पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४०॥

धवल चँवर जो देव ढुराते, भक्त नम्र हो ऊपर जाते।
जिन प्रणाम से उच्चासन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥
ॐ ह्रीं श्री चँवर प्रातिहार्य-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४१॥

भामण्डल सब भेद मिटाता, सात-सात भव के झलकाता।
जिनरागी से राग हनन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥

ॐ ह्रीं श्री भामण्डल प्रातिहार्य-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४२॥

दुन्दुभि बाजा धर्मराज का, ढोल बजाता मृत्युराज का।
जिनकी ध्वनि से तत्त्व यतन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥

ॐ ह्रीं श्री देवदुंदुभि प्रातिहार्य-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३॥

सूर्य ताप त्रय छत्र हटाते, त्रय जय के प्रभु तुम्हें बताते।
जिनसंस्तव से ताप शमन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥

ॐ ह्रीं श्री छत्रत्रय प्रातिहार्य-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४॥

विशद दिव्य ध्वनि चिदानन्द दे, स्वर्ग मोक्षपथ धर्म तत्त्व दे।
जिनगरजन से अरिखण्डन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥

ॐ ह्रीं श्री दिव्यध्वनि प्रातिहार्य-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५॥

रत्न सिंहासन पर प्रभु सोहें, विश्व विजेता हमको मोहें।
जिनमंत्रों से सिद्ध शरण हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥

ॐ ह्रीं श्री सिंहासन प्रातिहार्य-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६॥

अठारह दोष रहित (हाकलिका)

कर्म असाता नष्ट हुआ, क्षुधा रोग तब भ्रष्ट हुआ।
अरिहन्ता निज रस चखते, करके नमोऽस्तु हम जपते॥

ॐ ह्रीं श्री क्षुधा-दोष रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७॥

तृषा दोष सारे जीते, ज्ञानामृत का रस पीते।
ज्ञानामृत अरिहन्त चखें ,नमोऽस्तु कर हम भक्त भजें॥

ॐ ह्रीं श्री तृषा-दोष रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८॥

सप्त भयों से मुक्त हुए, जिनसे भय भयभीत हुए।
अभय दान अरिहन्त दिए, नमोऽस्तु को नत भक्त हुए॥

ॐ ह्रीं श्री भय-दोष रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४९॥

उत्तम क्षमा धरें ज्ञानी, हुई क्रोध को हैरानी।
अरिहन्ता निज शोध करें, नमोऽस्तु कर हम क्रोध हरें॥
ॐ ह्रीं श्री क्रोध-दोष रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५०॥
विषयों की रति दूर हुई, आतम रति भरपूर हुई।
अरिहन्ता रति दोष हरें, नमोऽस्तु हम जयघोष करें॥
ॐ ह्रीं श्री अरति-दोष रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५१॥
चिंता चिता जलाती है, चेतन ना झलकाती है।
अरिहन्ता चैतन्य हुए, नमोऽस्तु कर हम धन्य हुए॥
ॐ ह्रीं श्री चिंता-दोष रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५२॥
अर्धमृतक सम वृद्ध दशा, इसमें है हर जीव फँसा।
प्रभु अरिहन्त जरा नाशे, नमोऽस्तु करके हम नाचें॥
ॐ ह्रीं श्री जरा-दोष रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५३॥
राग आग को त्याग दिया, आतम से अनुराग किया।
वीतराग अरिहन्त हुए, नमोऽस्तु कर हम चरण छुएं॥
ॐ ह्रीं श्री राग-दोष रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५४॥
मोह महा मदिरा टाली, निर्मोही दें दीवाली।
मोह हरे अरिहन्त जिना, भक्त जिएँ ना आप बिना।
ॐ ह्रीं श्री मोह-दोष रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५५॥
तन रोगों का आलय है, बन ना सका जिनालय है।
प्रभु अरिहन्त रोगहारी, हरें हमारी बीमारी॥
ॐ ह्रीं श्री रोग-दोष रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५६॥
जग मरने से काँप रहा, आत्म तत्त्व ना वाँच रहा।
मृत्युंजय अरिहन्त प्रभु, नमोऽस्तु कर जीतें मृत्यु ॥
ॐ ह्रीं श्री मृत्यु-दोष रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५७॥

आता नहीं पसीना है, सचमुच देह नगीना है।
श्वेद रहित अरिहन्त जिनम्, नमोऽस्तु करके चमकें हम॥

ॐ ह्रीं श्री श्वेद-दोष रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५८॥

कार्य न रोने गाने के, करते न पछताने के।
रुदन रहित अरिहन्त जिना, नमोऽस्तु गूँजें रात दिना॥

ॐ ह्रीं श्री रुदन-दोष रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५९॥

अष्ट मदों का मदन हरा, निज का मार्दव धर्म धरा।
मद के बिन अरिहन्त हुए, सो नमोऽस्तु के भाव हुए॥

ॐ ह्रीं श्री मद-दोष रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६०॥

निज-पर के ज्ञानी ध्यानी, फिर भी हुई न हैरानी।
विस्मय जय अरिहन्त करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें॥

ॐ ह्रीं श्री विस्मय-दोष रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६१॥

किया जन्म सार्थक अपना, नहीं दुखों से अब तपना।
अरिहन्ता निज जन्म हरें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें॥

ॐ ह्रीं श्री जन्म-दोष रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६२॥

अर्धमृतक सम है निद्रा, झलक न पाए जिनमुद्रा।
निद्रा प्रभु अरिहन्त हरें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें॥

ॐ ह्रीं श्री निद्रा-दोष रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६३॥

जग में जले द्वेष ज्वाला, जिससे आतम हो काला।
वीतद्वेष अरिहन्त हुए, नमोऽस्तु कर हम धन्य हुए॥

ॐ ह्रीं श्री द्वेष-दोष रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६४॥

(सखी)

तज मोहनीय की पीड़ा, पाए सम्यक् गुण हीरा।
सिद्धों के लोक चलो रे, जय बोल नमोऽस्तु करो रे॥

ॐ ह्रीं श्री मोहभ्रमहारी सम्यक्-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६५॥

सब ज्ञानावरणी नाशा, तब केवलज्ञान प्रकाशा।
सिद्धों के लोक चलो रे, जय बोल नमोऽस्तु करो रे॥
ॐ ह्रीं श्री अज्ञानतिमिरहारी अनन्तज्ञान-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६६॥
दर्शन आवरणी हारी, जय अनन्तदर्शन धारी।
सिद्धों के लोक चलो रे, जय बोल नमोऽस्तु करो रे॥
ॐ ह्रीं श्री कुदर्शनहारी अनन्तदर्शन-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६७॥
सब अन्तराय को मारे, निज अनन्तवीर्य उभारे।
सिद्धों के लोक चलो रे, जय बोल नमोऽस्तु करो रे॥
ॐ ह्रीं श्री अन्तरायहारी अनन्तवीर्य-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६८॥
प्रभु नाम कर्म के भेत्ता, सूक्ष्मत्व गुणों के नेता।
सिद्धों के लोक चलो रे, जय बोल नमोऽस्तु करो रे॥
ॐ ह्रीं श्री नामकर्महारी सूक्ष्मत्व-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६९॥
प्रभु आयु कर्म नशाए, अवगाहनत्व गुण पाए।
सिद्धों के लोक चलो रे, जय बोल नमोऽस्तु करो रे॥
ॐ ह्रीं श्री आयुकर्महारी अवगाहनत्व-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७०॥
प्रभु गोत्र कर्म के नाशी, अगुरुलघुत्व गुण वासी।
सिद्धों के लोक चलो रे, जय बोल नमोऽस्तु करो रे॥
ॐ ह्रीं श्री गोत्रकर्महारी अगुरुलघुत्व-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७१॥
प्रभु वेदनीय दुख हर्त्ता, अव्याबाधत्व सुख धर्त्ता।
सिद्धों के लोक चलो रे, जय बोल नमोऽस्तु करो रे॥
ॐ ह्रीं श्री वेदनीयकर्महारी अव्याबाधत्व-गुणीअरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७२॥

बारह तप (हाकलिका)

चउ विध का भोजन तज के, करें तपस्या तप करके।
अनशन तप आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें॥
ॐ ह्रीं श्री अनशन-तपोगुणीअरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७३॥

निजी भूख से कम खाना, ऊनोदर यह तप माना।
ऐसा तप आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें॥
ॐ ह्रीं श्री ऊनोदर-तपोगुणीअरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७४॥
विधि से भोजन या अनशन, वृत्तिपरिसंख्यान वचन।
सम्यक् तप आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें॥
ॐ ह्रीं श्री वृत्तिपरिसंख्यान-तपोगुणीअरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७५॥
षट् रस त्याग करें भोजन, रसपरित्याग कहें भगवन्।
उत्तम तप आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें॥
ॐ ह्रीं श्री रसपरित्याग-तपोगुणीअरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७६॥
निर्जन में रहना सोना, विविक्तशैय्यासन माना।
साँचा तप आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें॥
ॐ ह्रीं श्री विविक्तशैय्यासन-तपोगुणीअरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७७॥
तप से तन को दिए सजा, चेतन बगिया लिए सजा।
कायक्लेश आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें॥
ॐ ह्रीं श्री कायक्लेश-तपोगुणीअरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७८॥
दोष व्रतों में गर आएँ, निन्दा गर्हा करवाएँ।
प्रायश्चित्त आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें॥
ॐ ह्रीं श्री अनशन-तपोगुणीअरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७९॥
पूज्य जनों का चार तरा, आदर करना विनय कहा।
श्रेष्ठ विनय आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें॥
ॐ ह्रीं श्री विनयतपो-गुणीअरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८०॥
संत त्यागियों की सेवा, मोक्षमार्ग का तप मेवा।
वैयावृत्त आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें॥
ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्ति-तपोगुणीअरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८१॥

आलस तज अध्याय पढ़ें, पाँच तरह स्वाध्याय करें।
स्वाध्याय तप आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें॥
ॐ ह्रीं श्री स्वाध्याय तपोगुणीअरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८२॥

तन से पूर्ण ममत्व तजें, परमातम का तत्त्व भजें।
तप व्युत्सर्ग आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें॥
ॐ ह्रीं श्री व्युत्सर्गतपोगुणीअरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८३॥

एक तत्त्व में चित्त धरें, तप का उपसंहार करें।
शुद्ध ध्यान आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें॥
ॐ ह्रीं श्री ध्यानतपोगुणीअरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८४॥

दसलक्षण धर्म

कटु वाणी उपसर्ग सहें, निज में उत्तम क्षमा धरें।
क्रोध त्याग आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें॥
ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमा-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८५॥

ज्ञानादिक मद त्याग करें, उत्तम मार्दव धर्म धरें।
मान त्याग आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें॥
ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दव-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८६॥

कथनी करनी एक करें, उत्तम आर्जव धर्म धरें।
कपट त्याग आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें॥
ॐ ह्रीं श्री उत्तमआर्जव-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८७॥

लोभ पाप का बाप रहा, शौच धर्म वह घात रहा।
लोभ त्याग आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें॥
ॐ ह्रीं श्री उत्तमशौच-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८८॥

सत्य धर्म की कल्याणी, हित-मित-प्रिय बोलें वाणी।
सत्य कथन आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें॥
ॐ ह्रीं श्री उत्तमसत्य-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८९॥

इन्द्रिय जीव सुरक्षा को, चरणाचरण व्यवस्था को।
शुभ संयम आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें॥
ॐ ह्रीं श्री उत्तमसंयम-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९०॥

इच्छा पूर्ण निरोध करें, कर्म निर्जरा शोध करें।
उत्तम तप आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें॥
ॐ ह्रीं श्री उत्तमतप-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९१॥

दोनों परिग्रह त्याग करें, नग्न हुए वैराग्य धरें।
श्रेष्ठ त्याग आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें॥
ॐ ह्रीं श्री उत्तमत्याग-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९२॥

पर का कुछ ना अपना हो, अपना कुछ ना पर का हो।
आकिंचन आचार्य धरें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें॥
ॐ ह्रीं श्री उत्तमआकिंचन-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९३॥

ब्रह्मचर्य व्रतराज रहा, ब्रह्मरमण साम्राज्य कहा।
ब्रह्मचर्य आचार्य धरें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें॥
ॐ ह्रीं श्री उत्तमब्रह्मचर्य-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९४॥

पंचाचार

अष्टांगी निर्दोष रहा, दर्श दर्शनाचार कहा।
वह पालन आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें॥
ॐ ह्रीं श्री दर्शनाचार-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९५॥

अष्टांगी भव से तारे, ज्ञानाचार तत्त्व धारे।
वह पालन आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें॥
ॐ ह्रीं श्री ज्ञानाचार-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९६॥

तेरह विध चारित्र अमल, वो चारित्राचार कमल।
वह पालन आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें॥
ॐ ह्रीं श्री चारित्राचार-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९७॥

बारह विध निर्दोष धरें, तपाचार अरिहन्त कहें।
वह पालन आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें॥
ॐ ह्रीं श्री तपाचार-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९८॥
जो परिषह उपसर्ग सहें, प्रभु वह वीर्याचार कहें।
वह पालन आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें॥
ॐ ह्रीं श्री वीर्याचार-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९९॥

षट्-आवश्यक

समता धरें सदा मन से, सुख-दुख आदिक के क्षण में।
सामायिक आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें॥
ॐ ह्रीं श्री सामायिक-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१००॥
इक जिनवर के गुण गाना, उसे वन्दना पहचाना।
आवश्यक आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें॥
ॐ ह्रीं श्री वन्दना-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०१॥
चौबीसों प्रभु की गाथा, कहना झुका-झुका माथा।
वो स्तवन आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें॥
ॐ ह्रीं श्री स्तवन-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०२॥
भूतकाल जो दोष हुए, प्रतिक्रमण से दूर हुए।
वही शुद्ध आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें॥
ॐ ह्रीं श्री प्रतिक्रमण-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०३॥
दोष हो सकें आगे जो, उन्हें पूर्व ही त्यागे जो।
प्रत्याख्यान आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें॥
ॐ ह्रीं श्री प्रत्याख्यान-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०४॥
तन ममता तज निज ध्यानी, कायोत्सर्ग करें स्वामी।
आवश्यक आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें॥
ॐ ह्रीं श्री कायोत्सर्ग-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०५॥

<u>तीन गुप्तियाँ</u>

मन विकल्प रोकें सारे, मनोगुप्ति गुरुवर धारे।
निज रक्षा आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें॥

ॐ ह्रीं श्री मनोगुप्ति-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०६॥

सभी वचन तज मौन धरें, वचनगुप्ति संग्राम हरें।
स्व-पर दया आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें॥

ॐ ह्रीं श्री वचनगुप्ति-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०७॥

तन व्यापार तजें सारे, कायगुप्ति मुद्रा धारे।
निज को जिन आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें॥

ॐ ह्रीं श्री कायगुप्ति-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०८॥

<u>ग्यारह अंग</u> (दोहा)

पहला आचारांग दे, मुनि श्रावक-आचार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्री आचारांग-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०९॥

दूजा सूत्रकृतांग दे, धर्म क्रिया व्यवहार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्री सूत्रकृतांग-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११०॥

तीसरा स्थानांग जो, कहे जीव घर वार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्री स्थानांग-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१११॥

चौथा समवायांग जो, सम ही सभी विचार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्री समवायांग-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११२॥

व्याख्याप्रज्ञप्ति कहे, अस्ति नास्ति चितधार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्री व्याख्याप्रज्ञप्ति-अंग-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११३॥

ज्ञातृकथा का अंग दे, पुरुष शलाका सार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञातृकथांग-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११४॥

उपासकाध्ययनांग दे, ग्रहि प्रतिमा संस्कार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्री उपासकाध्ययनांग-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१११५॥

अष्टम अन्तकृतांग दे, दसो अंतकृत तार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्री अन्तकृतांग-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११६॥

अनुत्तरदशांग में मुनि, दस-दस स्वर्ग सिधार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्री अनुत्तरदशांग-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११७॥

अंग प्रश्नव्याकरण दे, निमित्तज्ञान विस्तार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्री प्रश्नव्याकरणांग-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११८॥

जो विपाक सूत्रांग दे, सभी कर्म फलभार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्री सूत्रांग-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११९॥

चौदह पूर्व

जन्म ध्रौव्य व्यय वस्तु के, कहे पूर्व उत्पाद।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्री उत्पादपूर्व-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२०॥

कहे पूर्व अग्रायणी, नय दुर्नय भावार्थ।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्री अग्रायणीपूर्व-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२१॥

वीर्यानुवाद पूर्व जो, कहे वीर्य उपकार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं श्री वीर्यानुवादपूर्व-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२२॥

अस्तिनास्ति पूर्व दे, अस्तिनास्ति संसार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं श्री अस्तिनास्तिपूर्व-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२३॥

ज्ञानप्रवाद पूर्व कहे, सकल ज्ञान भण्डार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं श्री ज्ञानप्रवादपूर्व-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२४॥

सत्यप्रवाद पूर्व कहे, गुप्ति समिति सत्कार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं श्री सत्यप्रवादपूर्व-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२५॥

आत्मप्रवाद पूर्व कहे, नय निश्चय व्यवहार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं श्री आत्मप्रवादपूर्व-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२६॥

कर्मप्रवाद पूर्व कहे, कर्मों का विस्तार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं श्री कर्मप्रवादपूर्व-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२७॥

प्रत्याख्यान पूर्व कहे, किस विध अघ परिहार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं श्री प्रत्याख्यानपूर्व-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२८॥

विद्यानुवाद पूर्व दे, विद्यामंत्र प्रसार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं श्री विद्यानुवादपूर्व-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२९॥

कल्याणवाद पूर्व दे, जिन कल्याण प्रचार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं श्री कल्याणवादपूर्व-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३०॥

प्राणानुवाद पूर्व दे, तन्त्र-कुमंत्र निवार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं श्री प्राणानुवादपूर्व-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३१॥

क्रिया विशाल पूर्व कहे, चौंसठ कलाधिकार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं श्री क्रियाविशालपूर्व-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३२॥

त्रिलोक बिन्दु पूर्व कहे, लोक मोक्ष सरकार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं श्री त्रिलोकबिन्दुपूर्व-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३३॥

पाँच महाव्रत (सखी)

सब हिंसा पाप निवारी, अहिंसा महाव्रत धारी।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना॥
ॐ ह्रीं श्री अहिंसा-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३४॥

सब झूठ पाप संहारी, मुनि सत्यमहाव्रत धारी।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना॥
ॐ ह्रीं श्री सत्य-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३५॥

सब चोरी पाप निवारी, जो अचौर्य महाव्रत धारी।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना॥
ॐ ह्रीं श्री अचौर्य-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३६॥

निज रसिया त्यागे नारी, ब्रह्मचर्य महाव्रत धारी।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना॥
ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मचर्य-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३७॥

जो परिग्रह मूर्च्छा हारी, अपरिग्रहमहाव्रत धारी।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना॥
ॐ ह्रीं श्री अपरिग्रह-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३८॥

पंच समितियाँ

मुनि निरख-निरख कर चालें, मुनि ईर्या समिति पालें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना॥
ॐ ह्रीं श्री ईर्यासमिति-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३९॥

मुख व्यर्थ न अपना खोलें, मुनि भाषा समिति पालें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना॥
ॐ ह्रीं श्री भाषासमिति-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४०॥

रसपान शुद्ध कुछ करलें, सो एषणा समिति पालें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना॥
ॐ ह्रीं श्री एषणासमिति-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४१॥

लें वस्तु देख या धर लें, आदाननिक्षेपण पालें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना॥
ॐ ह्रीं श्री आदाननिक्षेपणसमिति-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४२॥

मल-मूत्र विधिवत् तज लें, व्युत्सर्ग समिति जो पालें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना॥
ॐ ह्रीं श्री व्युत्सर्गसमिति-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४३॥

पंचेन्द्रियनिरोध

स्पर्शन आठविध जीतें, शुद्धातम छूना सीखें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना॥
ॐ ह्रीं श्री स्पर्शनेन्द्रियविषयविजेता-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४४॥

रस पाँच तरह के जीतें, परमात्मा चखना सीखें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना॥
ॐ ह्रीं श्री रसनेन्द्रियविषयविजेता-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४५॥

दुर्गन्ध सुगंधी जीतें, चारित्र सूंघना सीखें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना॥

ॐ ह्रीं श्री घ्राणेन्द्रियविषयविजेता-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४६॥

पचरंगा दर्शन जीतें, निज सम्यग्दर्शन सीखें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना॥

ॐ ह्रीं श्री चक्षुरिन्द्रियविषयविजेता-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४७॥

स्वरसात तरह के जीतें, संगीत आत्म का सीखें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना॥

ॐ ह्रीं श्री कर्णेन्द्रियविषयविजेता-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४८॥

षट्-आवश्यक

जो सब में समता धारें, निज शुद्ध स्वरूप विचारें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना॥

ॐ ह्रीं श्री समता-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४९॥

गुण एक प्रभु के गाएँ, थुति करके पुण्य बढ़ाएँ।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना॥

ॐ ह्रीं श्री स्तुति-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५०॥

गुण चौबीसों के गाना, मुनि करें वन्दना नाना।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना॥

ॐ ह्रीं श्री वन्दना-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५१॥

पिछले दोषों को हरते, सो प्रतिक्रमण मुनि करते।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना॥

ॐ ह्रीं श्री प्रतिक्रमण-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५२॥

अगले दोषों को हर लें, सो प्रत्याख्यान नियम लें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना॥

ॐ ह्रीं श्री प्रत्याख्यान-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५३॥

निज तन से मोह नशाएँ, जो कायोत्सर्ग रचाएँ।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना॥

ॐ ह्रीं श्री कायोत्सर्ग-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५४॥

सात अन्य गुण

कुछ निशि में तृण पर सोना, या भू पर त्याग बिछौना।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना॥

ॐ ह्रीं श्री भूशयन-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५५॥

नहिं मुनिजन कभी नहाते, शृंगार करें न कराते।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना॥

ॐ ह्रीं श्री अस्नान-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५६॥

मुनि नग्न दिगम्बर रहते, उपसर्ग परीषह सहते।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना॥

ॐ ह्रीं श्री नगनत्व-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५७॥

दातून करें न मंजन, मुनि धरते अदंतधोवन।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना॥

ॐ ह्रीं श्री अदंतधोवन-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५८॥

इक बार करें मुनि भोजन, दिन में विधिवत् कर शोधन।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना॥

ॐ ह्रीं श्री एकभुक्ति-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५९॥

मुनि मौन खड़े हो खाएँ, आसक्ति दोष नशाएँ।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना॥

ॐ ह्रीं श्री एकासन-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६०॥

मुनि बाल सजाना तजते, केशलौंच दयालु करते।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना॥

ॐ ह्रीं श्री केशलौंच-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६१॥

<u>६३ प्रकृतियाँ रहित</u>

मतिज्ञानावरणी कर क्षय, हुआ पाप का राज्य विलय।
तीन लोक माँगें आश्रय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥

ॐ ह्रीं श्री मतिज्ञानावरणी-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६२॥

श्रुत ज्ञानावरणी कर क्षय, चमका सम्यग्ज्ञान निलय।
ज्ञान पिपासु के आश्रय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥

ॐ ह्रीं श्री श्रुतज्ञानावरणी-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६३॥

अवधि ज्ञानावरणी क्षय, भव बंधन पर पाई विजय।
भक्तों के सुख के आलय , अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥

ॐ ह्रीं श्री अवधिज्ञानावरणी-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६४॥

ज्ञानावरणी मनःपर्यय, नष्ट किया मन किया विजय।
भक्तों के हो मृत्युंजय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥

ॐ ह्रीं श्री मनःपर्ययज्ञानावरणी-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६५॥

केवलज्ञानावरणी क्षय, समवसरण में हों अतिशय।
जिनशासन का हुआ उदय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥

ॐ ह्रीं श्री केवलज्ञानावरणी-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६६॥

चक्षु दर्शनावरणी क्षय, ज्ञान सूर्य का हुआ उदय।
ज्ञान चक्षु से मिले विजय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥

ॐ ह्रीं श्री चक्षु-दर्शनावरणी-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६७॥

अचक्षु दर्शनावरणी क्षय, सिद्ध हुआ आतम आशय।
निज चक्षु दे जिन आलय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥

ॐ ह्रीं श्री अचक्षु-दर्शनावरणी-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६८॥

निद्रा-दर्शन करके क्षय, जिनमुद्रा धर बने अभय।
वीतराग का दो आलय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥

ॐ ह्रीं श्री निद्रा-दर्शनावरणी-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६९॥

निद्रानिद्रा करके क्षय, दूर किया भक्तों का भय।
हमको भाए जिन आलय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥
ॐ ह्रीं श्री निद्रानिद्रा-दर्शनावरणी-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७०॥
प्रचला-दर्शन करके क्षय, परमेष्ठी के बने निलय।
अरिहन्तों सम मिले विजय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥
ॐ ह्रीं श्री प्रचला-दर्शनावरणी-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७१॥
प्रचलाप्रचला करके क्षय, प्रचुर कर्म पर मिले विजय।
आत्मतत्त्व की करें विनय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥
ॐ ह्रीं श्री प्रचलाप्रचला-दर्शनावरणी-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७२॥
स्त्यानगृद्धि करके क्षय, नष्ट किया है मोहालय।
हम भी करलें मोह विजय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥
ॐ ह्रीं श्री स्त्यानगृद्धि-दर्शनावरणी-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७३॥
केवलदर्शन आवरणी, हर के पाई निज रमणी।
हम भी पाएँ मोक्षालय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥
ॐ ह्रीं श्री केवल-दर्शनावरणी-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७४॥
अवधि दर्शनावरणी क्षय, करके देखा आत्म निलय।
मिले प्रभु का जिन आलय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥
ॐ ह्रीं श्री अवधि-दर्शनावरणी-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७५॥
अनन्तानुबन्धी क्रोध हरें, सम्यक् उत्तमक्षमा धरें।
हम भी करलें क्रोध विजय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥
ॐ ह्रीं श्री अनन्तानुबन्धीक्रोध-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७६॥
अनन्तानुबन्धी मान हरे, मिथ्या दुख अभिमान हरे।
हम भी करलें मान विजय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥
ॐ ह्रीं श्री अनन्तानुबन्धीमान-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७७॥

अनन्तानुबन्धी हरे माया, अरिहन्तों की हो छाया।
हम भी करलें माया जय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥
ॐ ह्रीं श्री अनन्तानुबन्धीमाया-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७८॥
अनन्तानुबन्धी लोभ हरे, दुनियाँ का विक्षोभ हरें।
हम भी करलें लोभ विजय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥
ॐ ह्रीं श्री अनन्तानुबन्धीलोभ-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७९॥
क्रोध हरे अप्रत्याख्यान, हम भी करलें सम्यकज्ञान।
सम्यक्त्का का मिला निलय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥
ॐ ह्रीं श्री अप्रत्याख्यानक्रोध-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८०॥
मान हरें अप्रत्याख्यान, हो जाए आतम कल्याण।
मिथ्या की ना किए विनय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥
ॐ ह्रीं श्री अप्रत्याख्यानमान-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८१॥
हर माया अप्रत्याख्यान, सीधा चढ़े मोक्ष सोपान।
दुख त्यागें जग के आलय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥
ॐ ह्रीं श्री अप्रत्याख्यानमाया-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८२॥
लोभ हरे अप्रत्याख्यान, लगता जाए आतम ध्यान।
लोभ हरें हम बनें सदय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥
ॐ ह्रीं श्री अप्रत्याख्यानलोभ-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८३॥
प्रत्याख्यान क्रोध हर लें, रूप दिगम्बर हम धर लें।
हो अरिहन्त समान विजय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥
ॐ ह्रीं श्री प्रत्याख्यानक्रोध-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८४॥
प्रत्याख्यान मान हरी, निज अध्यात्म ध्यान धरी।
हम भी करें कषाय विजय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥
ॐ ह्रीं श्री प्रत्याख्यानमान-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८५॥

प्रत्याख्यान हरे माया, कर ली औदारिक काया।
माया की न करें विनय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥
ॐ ह्रीं श्री प्रत्याख्यानमाया-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८६॥
प्रत्याख्यान लोभ हर लें, अपना स्वयं मोक्ष वर लें।
अरिहन्तों का हो आलय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥
ॐ ह्रीं श्री प्रत्याख्यानलोभ-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८७॥
शीघ्र क्रोध संज्वलन हरे, आतम अपना मनन करे।
यथाख्यात का मिले निलय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥
ॐ ह्रीं श्री संज्वलनक्रोध-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८८॥
शीघ्र मान संज्वलन हरे, मुक्तिवधू का वरण करे।
मिल जाए निज का आश्रय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥
ॐ ह्रीं श्री संज्वलनमान-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८९॥
प्रभु माया संज्वलन हरे, खुद को देहातीत करे।
माया का हम करें विलय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥
ॐ ह्रीं श्री संज्वलनमाया-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९०॥
पूर्ण लोभ संज्वलन हरे, उज्जवल उज्जवल ध्यान करे।
हरें जगत की भटकन भय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥
ॐ ह्रीं श्री संज्वलनलोभ-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९१॥
हास्य कर्म को नशा दिया, नगर चेतना वसा लिया।
हम भी कर लें हास्य विजय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥
ॐ ह्रीं श्री हास्य-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९२॥
राग मोह रति कर्म करे, अरिहन्ता रति विजय करे।
हम भी रति पर करें विजय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥
ॐ ह्रीं श्री रति-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९३॥

अरति कर्म से द्वेष हुए, जय करके अरिहन्त हुए।
हम भी कर लें अरति विजय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥

ॐ ह्रीं श्री अरति-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९४॥

वहाँ न सुख हो शोक जहाँ, अरिहन्तों को शोक कहाँ।
हम भी कर लें शोक विजय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥

ॐ ह्रीं श्री शोक-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९५॥

दुनियाँ है भय से भयवंत, भय जय करके हों अरिहन्त।
भय जय कर हम बनें अभय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥

ॐ ह्रीं श्री भय-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९६॥

कर ली विजय गिलानी हैं, वो अरिहन्ता स्वामी हैं।
हम भी करें जुगुप्सा जय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥

ॐ ह्रीं श्री ग्लानि-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९७॥

स्त्रीवेद से राग नहीं, अरिहन्तों सम त्याग नहीं।
स्त्रीवेद हम करें विजय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥

ॐ ह्रीं श्री स्त्रीवेद-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९८॥

पुरुषवेद का करके अंत, समवसरण शोभित अरिहन्त।
पुरुषवेद हम करें विजय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥

ॐ ह्रीं श्री पुरुषवेद-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९९॥

वेद नपुंसक नष्ट किया, खुद को प्रभु अरिहन्त किया।
वेद नपुंसक करें विजय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥

ॐ ह्रीं श्री नपुंसकवेद-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२००॥

नष्ट किया मिथ्यादर्शन, श्री अरिहन्त बने भगवन।
हम भी मिथ्या करें विजय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥

ॐ ह्रीं श्री मिथ्यात्व-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०१॥

सम्यक् मिथ्या हान किए, अरिहन्ता सुख ज्ञान दिए।
सम्यक् मिथ्या करें विजय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥
ॐ ह्रीं श्री सम्यक्मिथ्यात्व-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०२॥
सम्यक्प्रकृति के ऊपर, श्री अरिहन्त बने जिनवर।
सम्यक्प्रकृति करें विजय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥
ॐ ह्रीं श्री सम्यक्प्रकृति-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०३॥
हरे दान की बाधाएँ, अरिहन्ता वो कहलाएँ।
दानांतराय करें हम जय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥
ॐ ह्रीं श्री दानांतराय-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०४॥
हरे लोभ की बाधाएँ, अरिहन्ता वो कहलाएँ।
लाभांतराय करें हम जय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥
ॐ ह्रीं श्री लाभांतराय-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०५॥
हरे भोग की बाधाएँ, अरिहन्ता हम कहलाएँ।
भोगांतराय करें हम जय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥
ॐ ह्रीं श्री भोगांतराय-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०६॥
अंतराय उपभोग हरे, अरिहन्ता निज भोग करे।
कर लें हम उपभोग विजय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥
ॐ ह्रीं श्री उपभोगांतराय-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०७॥
हरे वीर्य की बाधाएँ, अरिहन्ता वो कहलाएँ।
वीर्यांतराय करे हम जय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥
ॐ ह्रीं श्री वीर्यांतराय-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०८॥
नरक आयु की हर जंजीर, श्री अरिहन्त चले भवतीर।
नरक आयु हम करें विजय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥
ॐ ह्रीं श्री नरकायु-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०९॥

तिर्यंचायु के बंध हरे, खुद में परमानन्द भरे।
तिर्यंचायु हम करें विजय , अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥

ॐ ह्रीं श्री तिर्यंचायु-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१०॥

देव-आयु का अंत किया, आतम को अरिहन्त किया।
देव-आयु हम करें विजय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥

ॐ ह्रीं श्री देवायु-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२११॥

नरक गति की चाल हरे, खुद को मालामाल करे।
नरक गति हम करें विजय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥

ॐ ह्रीं श्री नरकगति-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१२॥

नरक गत्यानुपुर्वी हरे, अरिहन्ता कल्याण करे।
हम भी इस पर करें विजय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥

ॐ ह्रीं श्री नरकगत्यानुपुर्वी-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१३॥

तिर्यंच गति का हान किया, भक्तों को भगवान किया।
हम भी इस पर करें विजय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥

ॐ ह्रीं श्री तिर्यंचगति-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१४॥

तिर्यंच गत्यानुपूर्वी हरे, खुद को खुद तीर्थेश करे।
हम भी इस पर करें विजय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥

ॐ ह्रीं श्री तिर्यंचगत्यानुपूर्वी-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१५॥

क्षिति जल पावक वृक्ष समीर, स्थावर के पहुँचे तीर।
एकेन्द्रिय हम करें विजय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥

ॐ ह्रीं श्री एकेन्द्रिय-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१६॥

शंख आदि जो दो इन्द्रिय, कर्मजयी हैं जित इन्द्रिय।
दो इन्द्रिय हम करें विजय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥

ॐ ह्रीं श्री द्वीन्द्रिय-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१७॥

त्रय इन्द्रिय चीटी आदि, नाम कर्म की तज व्याधि।
त्रय इन्द्रिय हम करें विजय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिन्द्रिय-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१८॥

चउ इन्द्रिय मक्खी आदि, अरिहन्ता इसके त्यागी।
चउ इन्द्रिय हम करें विजय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥

ॐ ह्रीं श्री चतुरिन्द्रिय-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१९॥

स्थावर के भ्रमण तजे, समवसरण अरिहन्त सजे।
स्थावर पर करें विजय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥

ॐ ह्रीं श्री स्थावर-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२०॥

सूर्य आदि आतप तज लें, हम अरिहन्त चरण भज लें।
आतप हम भी करें विजय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥

ॐ ह्रीं श्री आतप-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२१॥

चन्द्र आदि उद्योत तजें, अर्हन्तो सम भक्त सजें।
हम कर लें उद्योत विजय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥

ॐ ह्रीं श्री उद्योत-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२२॥

नाम कर्म जब सूक्ष्म तजा, अरिहन्तों का द्वार सजा।
हम भी कर लें सूक्ष्म विजय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥

ॐ ह्रीं श्री सूक्ष्मनामकर्म-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२३॥

नाम कर्म तज साधारण, पूज्य हुए अरिहन्त चरण।
साधारण हम करें विजय, अरिहन्तों की नमोऽस्तु जय॥

ॐ ह्रीं श्री साधारणनामकर्म-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२४॥

२९ पाप सूत्र रहित (दोहा)

देते पाप महान हैं, चित्रकर्म के सूत्र।
नमोऽस्तु कर अरिहन्त को, तजें पाप के सूत्र॥

ॐ ह्रीं श्री चित्रकर्म-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२५॥

गणित बिगाड़े जगत के, गणितकर्म के सूत्र।
नमोऽस्तु कर अरिहन्त को, तजें पाप के सूत्र॥

ॐ ह्रीं श्री गणितकर्म-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२६॥

दुर्लभ जीवन लूटते, चाटुकार के सूत्र।
नमोऽस्तु कर अरिहन्त को, तजें पाप के सूत्र॥

ॐ ह्रीं श्री चाटुकारकर्म-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२७॥

संयम को रोगी करें, सचमुच! वैद्यक सूत्र।
नमोऽस्तु कर अरिहन्त को, तजें पाप के सूत्र॥

ॐ ह्रीं श्री वैद्यककर्म-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२८॥

नाच नचाते जगत को, नृत्यकर्म के सूत्र।
नमोऽस्तु कर अरिहन्त को, तजें पाप के सूत्र॥

ॐ ह्रीं श्री नृत्यकर्म-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२९॥

गीत सूत्र गान्धर्व के, कहलाते दुख सूत्र।
नमोऽस्तु कर अरिहन्त को, तजें पाप के सूत्र॥

ॐ ह्रीं श्री गीतकर्म-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३०॥

रूप दिगम्बर दे नहीं, पटहकर्म के सूत्र।
नमोऽस्तु कर अरिहन्त को, तजें पाप के सूत्र॥

ॐ ह्रीं श्री पटहकर्म-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३१॥

स्वस्थ हमें करते नहीं, अगदकर्म के सूत्र।
नमोऽस्तु कर अरिहन्त को, तजें पाप के सूत्र॥

ॐ ह्रीं श्री अगदकर्म-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३२॥

भक्ति नशा देते नहीं, मद्यकर्म के सूत्र।
नमोऽस्तु कर अरिहन्त को, तजें पाप के सूत्र॥

ॐ ह्रीं श्री मद्यकर्म-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३३॥

दूत नहीं भगवान के, द्यूतकर्म के सूत्र।
नमोऽस्तु कर अरिहन्त को, तजें पाप के सूत्र॥

ॐ ह्रीं श्री द्यूतकर्म-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३४॥

आत्म राज्य देते नहीं, राजनीति के सूत्र।
नमोऽस्तु कर अरिहन्त को, तजें पाप के सूत्र॥

ॐ ह्रीं श्री राजनीतिकर्म-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३५॥

चिदानन्द देते नहीं, चतुरंगी के सूत्र।
नमोऽस्तु कर अरिहन्त को, तजें पाप के सूत्र॥

ॐ ह्रीं श्री चतुरंगीकर्म-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३६॥

गजरथ चलवाते नहीं, दुखदायक गजसूत्र।
नमोऽस्तु कर अरिहन्त को, तजें पाप के सूत्र॥

ॐ ह्रीं श्री गजकर्म-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३७॥

मोक्षमार्ग देते नहीं, सुनो तुरग के सूत्र।
नमोऽस्तु कर अरिहन्त को, तजें पाप के सूत्र॥

ॐ ह्रीं श्री तुरगकर्म-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३८॥

करें सफल पुरुषार्थ ना, पुरुषकर्म के सूत्र।
नमोऽस्तु कर अरिहन्त को, तजें पाप के सूत्र॥

ॐ ह्रीं श्री पुरुषकर्म-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३९॥

मुक्तिवधू देते नहीं, स्त्रीकर्म के सूत्र।
नमोऽस्तु कर अरिहन्त को, तजें पाप के सूत्र॥

ॐ ह्रीं श्री स्त्रीकर्म-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४०॥

छत्र छाँव देते नहीं, छत्रकर्म के सूत्र।
नमोऽस्तु कर अरिहन्त को, तजें पाप के सूत्र॥

ॐ ह्रीं श्री छत्रकर्म-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४१॥

दिव्य देशना दें नहीं, गो सम्बन्धी सूत्र।
नमोऽस्तु कर अरिहन्त को, तजें पाप के सूत्र॥

ॐ ह्रीं श्री गोसम्बन्धीकर्म-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४२॥

खडगासन देते नहीं, खड्गकर्म के सूत्र।
नमोऽस्तु कर अरिहन्त को, तजें पाप के सूत्र॥

ॐ ह्रीं श्री खड्गकर्म-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४३॥

देते हमको दण्ड है, दण्डकर्म के सूत्र।
नमोऽस्तु कर अरिहन्त को, तजें पाप के सूत्र॥

ॐ ह्रीं श्री दण्डकर्म-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४४॥

हमें निरंजन न करें, अंजन-लक्षण सूत्र।
नमोऽस्तु कर अरिहन्त को, तजें पाप के सूत्र॥

ॐ ह्रीं श्री अंजन-लक्षणकर्म-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४५॥

हमें विदेही न करें, अंगनिमित्त के सूत्र।
नमोऽस्तु कर अरिहन्त को, तजें पाप के सूत्र॥

ॐ ह्रीं श्री अंगनिमित्तककर्म-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४६॥

हमें जिनेश्वर न करें, स्वरनिमित्त के सूत्र।
नमोऽस्तु कर अरिहन्त को, तजें पाप के सूत्र॥

ॐ ह्रीं श्री स्वरनिमित्तककर्म-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४७॥

वीतरागता दें नहीं, व्यंजननिमित्त के सूत्र।
नमोऽस्तु कर अरिहन्त को, तजें पाप के सूत्र॥

ॐ ह्रीं श्री व्यंजननिमित्तककर्म-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४८॥

रक्षण अपना न करें, लक्षणनिमित्त के सूत्र।
नमोऽस्तु कर अरिहन्त को, तजें पाप के सूत्र॥

ॐ ह्रीं अर्हं लक्षणनिमित्तककर्म-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४९॥

छिन्न भिन्न हम को करें, छिण्णनिमित्त के सूत्र।
नमोऽस्तु कर अरिहन्त को, तजें पाप के सूत्र॥

ॐ ह्रीं श्री छिण्णनिमित्तककर्म-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५०॥

मंगल मंगल है नहीं, भौमनिमित्त के सूत्र।
नमोऽस्तु कर अरिहन्त को, तजें पाप के सूत्र॥

ॐ ह्रीं श्री भौमनिमित्तककर्म-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५१॥

स्वप्न करें साकार न, स्वप्न-निमित्त के सूत्र।
नमोऽस्तु कर अरिहन्त को, तजें पाप के सूत्र॥

ॐ ह्रीं श्री स्वप्न-निमित्तककर्म-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५२॥

अंतरिक्ष मोक्ष न, अंतरिक्ष के सूत्र।
नमोऽस्तु कर अरिहन्त को, तजें पाप के सूत्र॥

ॐ ह्रीं श्री अंतरिक्षकर्म-रहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५३॥

राग द्वेष को जय किए, वीतराग भगवान।
नमोऽस्तु कर अरिहन्त को, सो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री वीतरागी-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५४॥

लोकालोक निहारते, पाकर केवलज्ञान।
नमोऽस्तु कर अरिहन्त को, सो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वज्ञ-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५५॥

हितकारी जिन धर्म का, देते सम्यग्ज्ञान।
हित उपदेशी अरिहन्त को, सो नमोऽस्तु धरध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री हितोपदेशी-गुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५६॥

पूर्णार्घ्य (ज्ञानोदय)

मूलगुणों से शोभित होते, परमेष्ठी जगपालक जी।
पलें मूलगुण जिसके ना वो, हो सकते हैं घातक भी॥

मूलगुणी अरिहन्त जिनेश्वर, बनने कृपा तुम्हारी हो।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, रख लो लाज हमारी हो॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं षट्पञ्चाशदधिकद्विशतगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये पूर्णार्घ्यं...।

(जाप्य मंत्र)

ॐ ह्रीं श्री अरिहन्तचक्रेभ्यो नमः। अथवा
ॐ ह्रीं णमो अरिहन्ताणं। अथवा **ॐ ह्रीं अर्हं नमः।**

जयमाला

(दोहा)

पाप कर्म से दूर हैं, घाति जयी अरिहन्त।
जिन चरणों में हम करें, नमोऽस्तु अनन्तानन्त॥

(ज्ञानोदय)

संसारी प्राणी जब अपने, मंगल भाव बनाता है।
तो वह अपने अंतरघट से, मूलगुणी बन जाता है॥
क्रमशः क्रमशः बने दिगम्बर, फिर अरिहन्त बने जब तो।
धारे वह छ्यालीस मूलगुण, नाशे दोष अठारह वो॥१॥
हरे कर्म की प्रकृति तिरेसठ, पाप सूत्र सारे त्यागे।
समवसरण की तत्त्व देशना, सुनने भव्य जीव भागे॥
मुनि आचार्य उपाध्यायों के, साथ विराजित गणधर हों।
सिंहासन कमलासन ऊपर, अधर गगन में जिनवर हों॥२॥
ऐसा अद्‌भुत देख नजारा, हृदय हमारा बोल पड़ा।
हम अरिहन्त शीघ्र बन जाएँ, प्रभु चरणों में डोल पड़ा॥
अष्टगुणी प्रभु सिद्ध बने तो, आतम सुख अनमोल खड़ा।
अर्हत् भक्ति दे सुख शक्ति, मन की अखियाँ खोल जरा॥३॥

अंतरघट के नैना खोलें, प्रभु अरिहन्त जिनन्दा जी।
कर्म हरण कर मुक्ति वरण कर, देते परमानन्दा जी॥
फिर तो रोग शोक दुःख यूँ हीं, जिन भक्तों के दूर हुए।
ऋद्धि-सिद्धि-समृद्धि पाकर, आतम रूप स्वरूप छुए॥४॥
ऐसा दीक्षा योग्य पुण्य हम, अनुष्ठान करके पाएँ।
सो अरिहन्तचक्र विधान की, यहाँ महा पूजा गाएँ॥
बदले में बस यही प्रार्थना, स्वस्थ सुखी संसार रहे।
रोग महामारी ना फैले, 'सुव्रत' धर्म प्रभाव रहे॥५॥

(दोहा)

अरिहन्त चक्र हम पूजते, हाथ जोड़ नत माथ।
आत्म तत्व हम खोजते, करके नमोस्तु साथ॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं षट्पञ्चाशदधिकद्विशतगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

अरिहन्तचक्र स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, अरिहन्तचक्र जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

सप्तम पूजन

स्थापना (शंभू)

अरिहन्त प्रभु! अरिहन्त प्रभु!, हो समवसरण आसीन तुम्हीं।
हे! वीतराग सर्वज्ञ प्रभु, हितकारी कमलासीन तुम्हीं॥
सो मुक्तिवधू आमंत्रण दे, पर हम तो पूजा रचा रहे।
दुख दर्द हरो सुख शान्ति करो, हम नमोऽस्तु कर सिर झुका रहे॥

(दोहा)

समवसरण में शोभते, घातिजयी अरिहन्त।
कर नमोऽस्तु हम पूजलें, जिनशासन जयवंत॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं द्वादशाधिक-पंचशतगुणी अरिहन्तचक्र अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(शुद्ध गीता)

जनम की या मरण की जो, हमें हों वेदनाएँ वो।
हमारे से न मिट पाएँ, जिनम् पूजा रचाएँ सो॥
यही दुख वेदना हर लें, तुम्हें हम जल चढ़ाते हैं।
करें सादर नमोऽस्तु हम, प्रभु अरिहन्त ध्याते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं द्वादशाधिक-पंचशतगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

जले जब राग की ज्वाला, भड़कता द्वेष है तब तो।
तपाता चेतना को ये, जलाता रोज है सबको॥
यही भव ताप हम हर लें, अतः चंदन चढ़ाते हैं।
करें सादर नमोऽस्तु हम, प्रभु अरिहन्त ध्याते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं द्वादशाधिक-पंचशतगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

न सम्यक् राह मन भायी, न आतम का भवन भाया।
तभी संसार में भटकें, न अक्षयपद कभी पाया॥
यही भव का भ्रमण हर लें, अतः अक्षत चढ़ाते हैं।
करें सादर नमोऽस्तु हम, प्रभु अरिहन्त ध्याते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं द्वादशाधिक-पंचशतगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

हमारी काम की पीड़ा, तुम्हारे बिन मिटेगी ना।
हमारी ब्रह्म की माया, तुम्हारे बिन टिकेगी ना॥
नशाएँ काम का कीड़ा, अतः पुष्पक चढ़ाते हैं।
करें सादर नमोऽस्तु हम, प्रभु अरिहन्त ध्याते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं द्वादशाधिक-पंचशतगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

क्षुधा की वेदना से हम, बहुत से पाप करते हैं।
चखें न चेतना का रस, यही अपराध करते हैं॥
क्षुधा हर चेतना चख लें, अतः नैवेद्य लाते हैं।
करें सादर नमोऽस्तु हम, प्रभु अरिहन्त ध्याते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं द्वादशाधिक-पंचशतगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

अँधेरा मोह का छाया, सबेरा ज्ञान का कर दो।
भटक न जाएँ ये बच्चे, उजाला धर्म का कर दो॥
तुम्हारी आरती गाएँ, अतः दीपक जलाते हैं।
करें सादर नमोऽस्तु हम, प्रभु अरिहन्त ध्याते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं द्वादशाधिक-पंचशतगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

सभी को युद्ध कर्मों से, विजय करना अकेले है।
विजय का ध्यान प्रभु रखना, बड़े भयभीत चेले हैं॥
चढ़ाके धूप जय पाएँ, यही आशा लगाते हैं।
करें सादर नमोऽस्तु हम, प्रभु अरिहन्त ध्याते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं द्वादशाधिक-पंचशतगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

दुखों के बीज बोकर हम, सुखों की चाहते फसलें।
कहो! सम्भव कहाँ से हो, हुईं बर्वाद हैं नस्लें॥
प्रभु अरिहन्त बन जाएँ, अतः हम फल चढ़ाते हैं।
करें सादर नमोऽस्तु हम, प्रभु अरिहन्त ध्याते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं द्वादशाधिक-पंचशतगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

प्रभु हम अर्घ्य बन जाएँ, चरण बस आप दे देना।
भगत भव पार हो जाएँ, शरण बस आप दे देना॥
यही बस प्रार्थना सुन लो, इसी से गीत गाते हैं।
करें सादर नमोऽस्तु हम, प्रभु अरिहन्त ध्याते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं द्वादशाधिक-पंचशतगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अर्घ्यावली

(विष्णु)

वृषभनाथ का पूरव वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी क्रोध तजें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ समवसरणस्थ पूर्वदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१॥

वृषभनाथ का दक्षिण वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी मान तजें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ समवसरणस्थ दक्षिणदिक्‌मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२॥

वृषभनाथ का पश्चिम वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी माया तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ समवसरणस्थ पश्चिमदिक्‌मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३॥

वृषभनाथ का उत्तर वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी लोभ तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ समवसरणस्थ उत्तरदिक् मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४॥

वृषभ नाथ के समवसरण की, भूमि चैत्यप्रासाद।
जिनबिम्बों को करके नमोऽस्तु, मिलता आशीर्वाद॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ समवसरणस्थ चैत्यप्रासादभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५॥

बिम्ब खातिका भूमि के भज, समवसरण झलके।
परमानन्द चाहते हम तो, चैन नहीं पल के॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ समवसरणस्थ खातिकाभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६॥

वृषभनाथ के समवसरण की, लता भूमि सुंदर।
अर्घ्य चढ़ा हम करके नमोऽस्तु, पूजें जिनमंदिर॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ समवसरणस्थ लताभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७॥

उपवन भू की चार दिशा में, जिन चैत्यालय हैं।
अर्घ्य चढ़ा हम करके नमोऽस्तु, बोल रहे जय हैं॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ समवसरणस्थ उपवनभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८॥

वृषभनाथ के दसों तरह से, जो ध्वज भूमि सजीं।
वहाँ विराजित बिम्ब पक्तियाँ, हमने रोज भजीं॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ समवसरणस्थ ध्वजभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९॥

प्रभु से बारह गुने बड़े जो, दस विध कल्पतरु।
भजें वहाँ के जिनबिम्बों को, कर लें ध्यान शुरू॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ समवसरणस्थ कल्पवृक्ष-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०॥

वृषभनाथ की भवन भूमि के, हों जिनभवन महा।
जिनको नमोऽस्तु कर हम पूजें, जिनसा कौन यहाँ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ समवसरणस्थ भवनभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११॥

वृषभनाथ की श्रीमण्डप भू, श्री जी से सोहें।
जिनश्री पाने करें नमोऽस्तु, यही हमें मोहें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ समवसरणस्थ श्रीमण्डपभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२॥

वृषभनाथ की प्रथम पीठ पर, चार दिशा में सुर।
धर्मचक्र धारें सो हम प्रभु, भजें नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ समवसरणस्थ प्रथमपीठोपरि-चतुर्दिक्-धर्मचक्र-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३॥

दूजी कटनी आठ दिशा में, ध्वज से लहराये।
आठ तरह के सिद्ध गुणों से, हमको मन भाए॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ समवसरणस्थ द्वितीयपीठोपरि-चतुर्दिक्-अष्टमहाध्वजा-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४॥

तीजी पीठ उसी पर शोभित, गंधकुटी प्रभु की।
लम्बी-चौड़ी पहले से कम, जहाँ आदि प्रभु जी॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ समवसरणस्थ तृतीयपीठोपरि-चतुर्दिक्-गंधकुटी-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५॥

वृषभनाथ की दिव्यध्वनि को, हम भी पूज रहे।
द्वादशांग को समझ-समझकर, आतम खोज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ समवसरणस्थ द्वादशांगरूप-दिव्यध्वनिसहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६॥

वृषभसेन हैं मुख्यरूप से, चौरासी गणधर।
चौरासी हजार मुनियों को, हम पूजें सिर धर॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ समवसरणस्थ चतुरशीति गणधर-चतुरशीतिसहस्त्र-मुनिवरसहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७॥

बिम्ब वेदियों स्तूपों के, धूलिसाल वाले।
समवसरण में जहाँ-जहाँ जो, भजें भक्ति वाले॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ समवसरणस्थ सकलजिनबिम्ब अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८॥

वृषभनाथ ने घातिकर्म हर, पाया केवलज्ञान।
समवसरण के पर्व हुए फिर, हम पूजें भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ समवसरणस्थ केवलज्ञानमण्डित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९॥

वृषभनाथ के समवसरण में, इन्द्र आदि सज्जन।
करें दिव्य पूजा सो हम भी, करें यहीं अर्चन॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ समवसरणस्थ महाजनअर्चित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०॥

हर द्वारों के बाहर मंगल, द्रव्य नाट्यशाला।
तथा धूपघट नव निधियाँ भी, भजतीं प्रभु माला॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ समवसरणस्थ मंगलद्रव्यादि-वैभवसहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१॥

अजितनाथ का पूरव वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी मोह तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ समवसरणस्थ पूर्वदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२॥

अजितनाथ का दक्षिण वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी राग तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ समवसरणस्थ दक्षिणदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३॥

अजितनाथ का पश्चिम वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी द्वेष तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ समवसरणस्थ पश्चिमदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४॥

अजितनाथ का उत्तर वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी दोष तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ समवसरणस्थ उत्तरदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५॥

अजितनाथ के समवसरण की, भूमि चैत्यप्रासाद।
जिनबिम्बों को करके नमोऽस्तु, मिलता आशीर्वाद॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ समवसरणस्थ चैत्यप्रासादभूमि-सम्बन्धी अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६॥

बिम्ब खातिका भूमि के भज, समवसरण झलके।
परमानन्द चाहते हम तो, चैन नहीं पल के॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ समवसरणस्थ खातिकाभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७॥

अजितनाथ के समवसरण की, लता भूमि सुंदर।
अर्घ्य चढ़ा हम करके नमोऽस्तु, पूजें जिनमंदिर॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ समवसरणस्थ लताभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८॥

उपवन भू की चार दिशा में, जिन चैत्यालय हैं।
अर्घ्य चढ़ा हम करके नमोऽस्तु, बोल रहे जय हैं॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ समवसरणस्थ उपवनभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९॥

अजितनाथ के दसों तरह से, जो ध्वज भूमि सजीं।
वहाँ विराजित बिम्ब पक्तियाँ, हमने रोज भजीं॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ समवसरणस्थ ध्वजभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३०॥

प्रभु से बारह गुने बड़े जो, दस विध कल्पतरु।
भजें वहाँ के जिनबिम्बों को, कर लें ध्यान शुरू॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ समवसरणस्थ कल्पवृक्ष-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३१॥

अजितनाथ की भवन भूमि के, हों जिनभवन महा।
जिनको नमोऽस्तु कर हम पूजें, जिनसा कौन यहाँ॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ समवसरणस्थ भवनभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२॥

अजितनाथ की श्रीमण्डप भू, श्री जी से सोहें।
जिनश्री पाने करें नमोऽस्तु, यही हमें मोहें॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ समवसरणस्थ श्रीमण्डपभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३॥

अजितनाथ की प्रथम पीठ पर, चार दिशा में सुर।
धर्मचक्र धारें सो हम प्रभु, भजें नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ समवसरणस्थ प्रथमपीठोपरि-चतुर्दिक्-धर्मचक्र-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४॥

दूजी कटनी आठ दिशा में, ध्वज से लहराये।
आठ तरह के सिद्ध गुणों से, हमको मन भाए॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ समवसरणस्थ द्वितीयपीठोपरि-चतुर्दिक्-अष्टमहाध्वजा-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५॥

तीजी पीठ उसी पर शोभित, गंधकुटी प्रभु की।
लम्बी-चौड़ी पहले से कम, जहाँ अजित प्रभु जी॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ समवसरणस्थ तृतीयपीठोपरि-चतुर्दिक्-गंधकुटी-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६॥

अजितनाथ की दिव्यध्वनि को, हम भी पूज रहे।
द्वादशांग को समझ-समझकर, आतम खोज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ समवसरणस्थ द्वादशांगरूप-दिव्यध्वनिसहित अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७॥

सिंहसेन हैं मुख्यरूप से, कुल नब्बे गणधर।
एक लाख जिन मुनियों को, हम पूजें सिर धर॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ समवसरणस्थ नवतिशत गणधर-एकलक्ष-मुनिवरसहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८॥

बिम्ब वेदियों स्तूपों के, धूलिसाल वाले।
समवसरण में जहाँ-जहाँ जो, भजें भक्ति वाले॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ समवसरणस्थ सकलजिनबिम्ब अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३९॥

अजितनाथ ने घातिकर्म हर, पाया केवलज्ञान।
समवसरण के पर्व हुए फिर, हम पूजें भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ समवसरणस्थ केवलज्ञानमण्डित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४०॥

अजितनाथ के समवसरण में, इन्द्र आदि सज्जन।
करें दिव्य पूजा सो हम भी, करें यहीं अर्चन॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ समवसरणस्थ महाजनअर्चित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४१॥

हर द्वारों के बाहर मंगल, द्रव्य नाट्यशाला।
तथा धूपघट नव निधियाँ भी, भजतीं प्रभु माला॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ समवसरणस्थ मंगलद्रव्यादि-वैभवसहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४२॥

शम्भवनाथ का पूरव वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी पाप तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री शम्भवनाथ समवसरणस्थ पूर्वदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३॥

शम्भवनाथ का दक्षिण वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी कर्म तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री शम्भवनाथ समवसरणस्थ दक्षिणदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४॥

शम्भवनाथ का पश्चिम वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी अज्ञान तजें॥

ॐ ह्रीं श्री शम्भवनाथ समवसरणस्थ पश्चिमदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५॥

शम्भवनाथ का उत्तर वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी कष्ट तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री शम्भवनाथ समवसरणस्थ उत्तरदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६॥

शम्भवनाथ के समवसरण की, भूमि चैत्यप्रासाद।
जिनबिम्बों को करके नमोऽस्तु, मिलता आशीर्वाद॥

ॐ ह्रीं श्री शम्भवनाथ समवसरणस्थ चैत्यप्रासादभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७॥

बिम्ब खातिका भूमि के भज, समवसरण झलके।
परमानन्द चाहते हम तो, चैन नहीं पल के॥

ॐ ह्रीं श्री शम्भवनाथ समवसरणस्थ खातिकाभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८॥

शम्भवनाथ के समवसरण की, लता भूमि सुंदर।
अर्घ्य चढ़ा हम करके नमोऽस्तु, पूजें जिनमंदिर॥

ॐ ह्रीं श्री शम्भवनाथ समवसरणस्थ लताभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४९॥

उपवन भू की चार दिशा में, जिन चैत्यालय हैं।
अर्घ्य चढ़ा हम करके नमोऽस्तु, बोल रहे जय हैं॥

ॐ ह्रीं श्री शम्भवनाथ समवसरणस्थ उपवनभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५०॥

शम्भवनाथ के दसों तरह से, जो ध्वज भूमि सजीं।
वहाँ विराजित बिम्ब पक्तियाँ, हमने रोज भजीं॥

ॐ ह्रीं श्री शम्भवनाथ समवसरणस्थ ध्वजभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५१॥

प्रभु से बारह गुने बड़े जो, दस विध कल्पतरु।
भजें वहाँ के जिनबिम्बों को, कर लें ध्यान शुरू॥

ॐ ह्रीं श्री शम्भवनाथ समवसरणस्थ कल्पवृक्ष-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५२॥

शम्भवनाथ की भवन भूमि के, हों जिनभवन महाँ।
जिनको नमोऽस्तु कर हम पूजें, जिनसा कौन यहाँ॥

ॐ ह्रीं श्री शम्भवनाथ समवसरणस्थ भवनभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५३॥

शम्भवनाथ की श्रीमण्डप भू, श्री जी से सोहें।
जिनश्री पाने करें नमोऽस्तु, यही हमें मोहें॥

ॐ ह्रीं श्री शम्भवनाथ समवसरणस्थ श्रीमण्डपभूमि-सम्बन्धी अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५४॥

शम्भवनाथ की प्रथम पीठ पर, चार दिशा में सुर।
धर्मचक्र धारें सो हम प्रभु, भजें नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं श्री शम्भवनाथ समवसरणस्थ प्रथमपीठोपरि-चतुर्दिक्-धर्मचक्र-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५५॥

दूजी कटनी आठ दिशा में, ध्वज से लहराये।
आठ तरह के सिद्ध गुणों से, हमको मन भाए॥

ॐ ह्रीं श्री शम्भवनाथ समवसरणस्थ द्वितीयपीठोपरि-चतुर्दिक्-अष्टमहाध्वजा-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५६॥

तीजी पीठ उसी पर शोभित, गंधकुटी प्रभु की।
लम्बी-चौड़ी पहले से कम, जहाँ शम्भव प्रभु जी॥

ॐ ह्रीं श्री शम्भवनाथ समवसरणस्थ तृतीयपीठोपरि-चतुर्दिक्-गंधकुटी-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५७॥

शम्भवनाथ की दिव्यध्वनि को, हम भी पूज रहे।
द्वादशांग को समझ-समझकर, आतम खोज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री शम्भवनाथ समवसरणस्थ द्वादशांगरूप-दिव्यध्वनिसहित अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५८॥

चारुसेन हैं मुख्यरूप से, एक सौ पाँच गणधर।
दो लाख जिन मुनियों को, हम पूजें सिर धर॥

ॐ ह्रीं श्री शम्भवनाथ समवसरणस्थ पंचाधिकशतक गणधर-द्विलक्ष-मुनिवरसहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५९॥

बिम्ब वेदियों स्तूपों के, धूलिसाल वाले।
समवसरण में जहाँ-जहाँ जो, भजें भक्ति वाले॥

ॐ ह्रीं श्री शम्भवनाथ समवसरणस्थ सकलजिनबिम्ब अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६०॥

शम्भवनाथ ने घातिकर्म हर, पाया केवलज्ञान।
समवसरण के पर्व हुए फिर, हम पूजें भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री शम्भवनाथ समवसरणस्थ केवलज्ञानमण्डित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६१॥

शम्भवनाथ के समवसरण में, इन्द्र आदि सज्जन।
करें दिव्य पूजा सो हम भी, करें यहीं अर्चन॥

ॐ ह्रीं श्री शम्भवनाथ समवसरणस्थ महाजनअर्चित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६२॥

हर द्वारों के बाहर मंगल, द्रव्य नाट्यशाला।
तथा धूपघट नव निधियाँ भी, भजतीं प्रभु माला॥

ॐ ह्रीं श्री शम्भवनाथ समवसरणस्थ मंगलद्रव्यादि-वैभवसहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६३॥

अभिनन्दन का पूरव वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी रोग तजें॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ समवसरणस्थ पूर्वदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६४॥

अभिनन्दन का दक्षिण वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी ताप तजें॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ समवसरणस्थ दक्षिणदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६५॥

अभिनन्दन का पश्चिम वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी अपमान तजें॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ समवसरणस्थ पश्चिमदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६६॥

अभिनन्दन का उत्तर वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी कलह तजें॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ समवसरणस्थ उत्तरदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६७॥

अभिनन्दन के समवसरण की, भूमि चैत्यप्रासाद।
जिनबिम्बों को करके नमोऽस्तु, मिलता आशीर्वाद॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ समवसरणस्थ चैत्यप्रासादभूमि-सम्बन्धी अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६८॥

बिम्ब खातिका भूमि के भज, समवसरण झलके।
परमानन्द चाहते हम तो, चैन नहीं पल के॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ समवसरणस्थ खातिकाभूमि-सम्बन्धी अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६९॥

अभिनन्दन के समवसरण की, लता भूमि सुंदर।
अर्घ्य चढ़ा हम करके नमोऽस्तु, पूजें जिनमंदिर॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ समवसरणस्थ लताभूमि-सम्बन्धी अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७०॥

उपवन भू की चार दिशा में, जिन चैत्यालय हैं।
अर्घ्य चढ़ा हम करके नमोऽस्तु, बोल रहे जय हैं॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ समवसरणस्थ उपवनभूमि-सम्बन्धी अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७१॥

अभिनन्दन के दसों तरह से, जो ध्वज भूमि सजीं।
वहाँ विराजित बिम्ब पक्तियाँ, हमने रोज भजीं॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ समवसरणस्थ ध्वजभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७२॥

प्रभु से बारह गुने बड़े जो, दस विध कल्पतरु।
भजें वहाँ के जिनबिम्बों को, कर लें ध्यान शुरू॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ समवसरणस्थ कल्पवृक्ष-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७३॥

अभिनन्दन की भवन भूमि के, हों जिनभवन महाँ।
जिनको नमोऽस्तु कर हम पूजें, जिनसा कौन यहाँ॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ समवसरणस्थ भवनभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७४॥

अभिनन्दन की श्रीमण्डप भू, श्री जी से सोहें।
जिनश्री पाने करें नमोऽस्तु, यही हमें मोहें॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ समवसरणस्थ श्रीमण्डपभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७५॥

अभिनन्दन की प्रथम पीठ पर, चार दिशा में सुर।
धर्मचक्र धारें सो हम प्रभु, भजें नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ समवसरणस्थ प्रथमपीठोपरि-चतुर्दिक्-धर्मचक्र-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७६॥

दूजी कटनी आठ दिशा में, ध्वज से लहराए।
आठ तरह के सिद्ध गुणों से, हमको मन भाए॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ समवसरणस्थ द्वितीयपीठोपरि-चतुर्दिक्-अष्टमहाध्वजा-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७७॥

तीजी पीठ उसी पर शोभित, गंधकुटी प्रभु की।
लम्बी-चौड़ी पहले से कम, जहाँ अभिनन्दन प्रभु जी॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ समवसरणस्थ तृतीयपीठोपरि-चतुर्दिक्-गंधकुटी-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७८॥

अभिनन्दन की दिव्यध्वनि को, हम भी पूज रहे।
द्वादशांग को समझ-समझकर, आतम खोज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ समवसरणस्थ द्वादशांगरूप-दिव्यध्वनिसहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७९॥

वज्रनाभि हैं मुख्यरूप से, एक सौ तीन गणधर।
तीन लाख जिन मुनियों को, हम पूजें सिर धर॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ समवसरणस्थ त्र्याधिकशतक गणधर-त्रिलक्ष-मुनिवरसहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८०॥

बिम्ब वेदियों स्तूपों के, धूलिसाल वाले।
समवसरण में जहाँ-जहाँ जो, भजें भक्ति वाले॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ समवसरणस्थ सकलजिनबिम्ब अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८१॥

अभिनन्दन ने घातिकर्म हर, पाया केवलज्ञान।
समवसरण के पर्व हुए फिर, हम पूजें भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ समवसरणस्थ केवलज्ञानमण्डित अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८२॥

अभिनन्दन के समवसरण में, इन्द्र आदि सज्जन।
करें दिव्य पूजा सो हम भी, करें यहीं अर्चन॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ समवसरणस्थ महाजनअर्चित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८३॥

हर द्वारों के बाहर मंगल, द्रव्य नाट्यशाला।
तथा धूपघट नव निधियाँ भी, भजतीं प्रभु माला॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ समवसरणस्थ मंगलद्रव्यादि-वैभवसहित अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८४॥

सुमतिनाथ का पूरव वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी जहर तजें॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ समवसरणस्थ पूर्वदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८५॥

सुमतिनाथ का दक्षिण वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी बैर तजें॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ समवसरणस्थ दक्षिणदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८६॥

सुमतिनाथ का पश्चिम वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी कषाय तजें॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ समवसरणस्थ पश्चिमदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८७॥

सुमतिनाथ का उत्तर वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी शल्य तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ समवसरणस्थ उत्तरदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८८॥

सुमतिनाथ के समवसरण की, भूमि चैत्यप्रासाद।
जिनबिम्बों को करके नमोऽस्तु, मिलता आशीर्वाद॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ समवसरणस्थ चैत्यप्रासादभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८९॥

बिम्ब खातिका भूमि के भज, समवसरण झलके।
परमानन्द चाहते हम तो, चैन नहीं पल के॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ समवसरणस्थ खातिकाभूमि-सम्बन्धी अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९०॥

सुमतिनाथ के समवसरण की, लता भूमि सुंदर।
अर्घ्य चढ़ा हम करके नमोऽस्तु, पूजें जिनमंदिर॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ समवसरणस्थ लताभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९१॥

उपवन भू की चार दिशा में, जिन चैत्यालय हैं।
अर्घ्य चढ़ा हम करके नमोऽस्तु, बोल रहे जय हैं॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ समवसरणस्थ उपवनभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९२॥

सुमतिनाथ के दसों तरह से, जो ध्वज भूमि सजीं।
वहाँ विराजित बिम्ब पक्तियाँ, हमने रोज भजीं॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ समवसरणस्थ ध्वजभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९३॥

प्रभु से बारह गुने बड़े जो, दस विध कल्पतरु।
भजें वहाँ के जिनबिम्बों को, कर लें ध्यान शुरू॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ समवसरणस्थ कल्पवृक्ष-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९४॥

सुमतिनाथ की भवन भूमि के, हों जिनभवन महाँ।
जिनको नमोऽस्तु कर हम पूजें, जिनसा कौन यहाँ॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ समवसरणस्थ भवनभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९५॥

सुमतिनाथ की श्रीमण्डप भू, श्री जी से सोहें।
जिनश्री पाने करें नमोऽस्तु, यही हमें मोहें॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ समवसरणस्थ श्रीमण्डपभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९६॥

सुमतिनाथ की प्रथम पीठ पर, चार दिशा में सुर।
धर्मचक्र धारें सो हम प्रभु, भजें नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ समवसरणस्थ प्रथमपीठोपरि-चतुर्दिक्-धर्मचक्र-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९७॥

दूजी कटनी आठ दिशा में, ध्वज से लहराये।
आठ तरह के सिद्ध गुणों से, हमको मन भाए॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ समवसरणस्थ द्वितीयपीठोपरि-चतुर्दिक्-अष्टमहाध्वजा-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९८॥

तीजी पीठ उसी पर शोभित, गंधकुटी प्रभु की।
लम्बी-चौड़ी पहले से कम, जहाँ आदि प्रभु जी॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ समवसरणस्थ तृतीयपीठोपरि-चतुर्दिक्-गंधकुटी-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९९॥

सुमतिनाथ की दिव्यध्वनि को, हम भी पूज रहे।
द्वादशांग को समझ-समझकर, आतम खोज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ समवसरणस्थ द्वादशांगरूप-दिव्यध्वनिसहित अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१००॥

चमर नाम हैं मुख्यरूप से, एक सौ सौलह गणधर।
तीन लाख बीस हजार मुनियों को, हम पूजें सिर धर॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ समवसरणस्थ षष्ठदशाधिकशतक गणधर-त्रिलक्ष-बिंशतिसहस्त्र-मुनिवरसहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०१॥

बिम्ब वेदियों स्तूपों के, धूलिसाल वाले।
समवसरण में जहाँ-जहाँ जो, भजें भक्ति वाले॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ समवसरणस्थ सकलजिनबिम्ब अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०२॥

सुमतिनाथ ने घातिकर्म हर, पाया केवलज्ञान।
समवसरण के पर्व हुए फिर, हम पूजें भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ समवसरणस्थ केवलज्ञानमण्डित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०३॥

सुमतिनाथ के समवसरण में, इन्द्र आदि सज्जन।
करें दिव्य पूजा सो हम भी, करें यहीं अर्चन॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ समवसरणस्थ महाजनअर्चित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०४॥

हर द्वारों के बाहर मंगल, द्रव्य नाट्यशाला।
तथा धूपघट नव निधियाँ भी, भजतीं प्रभु माला॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ समवसरणस्थ मंगलद्रव्यादि-वैभवसहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०५॥

पद्मप्रभ का पूरव वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी अंध तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ समवसरणस्थ पूर्वदिक्‌मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०६॥

पद्मप्रभ का दक्षिण वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी जन्म तजें॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ समवसरणस्थ दक्षिणदिक्‌मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०७॥

पद्मप्रभ का पश्चिम वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी भ्रमण तजें॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ समवसरणस्थ पश्चिमदिक्‌मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०८॥

पद्मप्रभ का उत्तर वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी मरण तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ समवसरणस्थ उत्तरदिक्‌मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०९॥

पद्मप्रभ के समवसरण की, भूमि चैत्यप्रासाद।
जिनबिम्बों को करके नमोऽस्तु, मिलता आशीर्वाद॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ समवसरणस्थ चैत्यप्रासादभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११०॥

बिम्ब खातिका भूमि के भज, समवसरण झलके।
परमानन्द चाहते हम तो, चैन नहीं पल के॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ समवसरणस्थ खातिकाभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१११॥

पद्मप्रभ के समवसरण की, लता भूमि सुंदर।
अर्घ्य चढ़ा हम करके नमोऽस्तु, पूजें जिनमंदिर॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ समवसरणस्थ लताभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११२॥

उपवन भू की चार दिशा में, जिन चैत्यालय हैं।
अर्घ्य चढ़ा हम करके नमोऽस्तु, बोल रहे जय हैं॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ समवसरणस्थ उपवनभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११३॥

पद्मप्रभ के दसों तरह से, जो ध्वज भूमि सजीं।
वहाँ विराजित बिम्ब पक्तियाँ, हमने रोज भजीं॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ समवसरणस्थ ध्वजभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११४॥

प्रभु से बारह गुने बड़े जो, दस विध कल्पतरु।
भजें वहाँ के जिनबिम्बों को, कर लें ध्यान शुरू॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ समवसरणस्थ कल्पवृक्ष-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११५॥

पद्मप्रभ की भवन भूमि के, हों जिनभवन महाँ।
जिनको नमोऽस्तु कर हम पूजें, जिनसा कौन यहाँ॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ समवसरणस्थ भवनभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११६॥

पद्मप्रभ की श्रीमण्डप भू, श्री जी से सोहें।
जिनश्री पाने करें नमोऽस्तु, यही हमें मोहें॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ समवसरणस्थ श्रीमण्डपभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११७॥

पद्मप्रभ की प्रथम पीठ पर, चार दिशा में सुर।
धर्मचक्र धारें सो हम प्रभु, भजें नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ समवसरणस्थ प्रथमपीठोपरि-चतुर्दिक्-धर्मचक्र-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११८॥

दूजी कटनी आठ दिशा में, ध्वज से लहराये।
आठ तरह के सिद्ध गुणों से, हमको मन भाए॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ समवसरणस्थ द्वितीयपीठोपरि-चतुर्दिक्-अष्टमहाध्वजा-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११९॥

तीजी पीठ उसी पर शोभित, गंधकुटी प्रभु की।
लम्बी-चौड़ी पहले से कम, जहाँ आदि प्रभु जी॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ समवसरणस्थ तृतीयपीठोपरि-चतुर्दिक्-गंधकुटी-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२०॥

पद्मप्रभ की दिव्यध्वनि को, हम भी पूज रहे।
द्वादशांग को समझ-समझकर, आतम खोज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ समवसरणस्थ द्वादशांगरूप-दिव्यध्वनिसहित अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२१॥

वज्रचमर हैं मुख्यरूप से, एक सौ दस गणधर।
तीन लाख तीस हजार मुनियों को, हम पूजें सिर धर॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ समवसरणस्थ दशाधिकशतक गणधर-त्रिलक्षत्रिंशतसहस्र-मुनिवरसहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२२॥

बिम्ब वेदियों स्तूपों के, धूलिसाल वाले।
समवसरण में जहाँ-जहाँ जो, भजें भक्ति वाले॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ समवसरणस्थ सकलजिनबिम्ब अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२३॥

पद्मप्रभ ने घातिकर्म हर, पाया केवलज्ञान।
समवसरण के पर्व हुए फिर, हम पूजें भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ समवसरणस्थ केवलज्ञानमण्डित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२४॥

पद्मप्रभ के समवसरण में, इन्द्र आदि सज्जन।
करें दिव्य पूजा सो हम भी, करें यहीं अर्चन॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ समवसरणस्थ महाजनअर्चित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२५॥

हर द्वारों के बाहर मंगल, द्रव्य नाट्यशाला।
तथा धूपघट नव निधियाँ भी, भजतीं प्रभु माला॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ समवसरणस्थ मंगलद्रव्यादि-वैभवसहित अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२६॥

सुपार्श्वनाथ का पूरव वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी पतन तजें॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ समवसरणस्थ पूर्वदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२७॥

सुपार्श्वनाथ का दक्षिण वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी कुपथ तजें॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ समवसरणस्थ दक्षिणदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२८॥

सुपार्श्वनाथ का पश्चिम वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी भूख तजें॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ समवसरणस्थ पश्चिमदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२९॥

सुपार्श्वनाथ का उत्तर वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी प्यास तजें॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ समवसरणस्थ उत्तरदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३०॥

सुपार्श्वनाथ के समवसरण की, भूमि चैत्यप्रासाद।
जिनबिम्बों को करके नमोऽस्तु, मिलता आशीर्वाद॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ समवसरणस्थ चैत्यप्रासादभूमि-सम्बन्धी अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३१॥

बिम्ब खातिका भूमि के भज, समवसरण झलके।
परमानन्द चाहते हम तो, चैन नहीं पल के॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ समवसरणस्थ खातिकाभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३२॥

सुपार्श्वनाथ के समवसरण की, लता भूमि सुंदर।
अर्घ्य चढ़ा हम करके नमोऽस्तु, पूजें जिनमंदिर॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ समवसरणस्थ लताभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३३॥

उपवन भू की चार दिशा में, जिन चैत्यालय हैं।
अर्घ्य चढ़ा हम करके नमोऽस्तु, बोल रहे जय हैं॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ समवसरणस्थ उपवनभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३४॥

सुपार्श्वनाथ के दसों तरह से, जो ध्वज भूमि सजीं।
वहाँ विराजित बिम्ब पक्तियाँ, हमने रोज भजीं॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ समवसरणस्थ ध्वजभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३५॥

प्रभु से बारह गुने बड़े जो, दस विध कल्पतरु।
भजें वहाँ के जिनबिम्बों को, कर लें ध्यान शुरू॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ समवसरणस्थ कल्पवृक्ष-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३६॥

सुपार्श्वनाथ की भवन भूमि के, हों जिनभवन महाँ।
जिनको नमोऽस्तु कर हम पूजें, जिनसा कौन यहाँ॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ समवसरणस्थ भवनभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३७॥

सुपार्श्वनाथ की श्रीमण्डप भू, श्री जी से सोहें।
जिनश्री पाने करें नमोऽस्तु, यही हमें मोहें॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ समवसरणस्थ श्रीमण्डपभूमि-सम्बन्धी अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३८॥

सुपार्श्वनाथ की प्रथम पीठ पर, चार दिशा में सुर।
धर्मचक्र धारें सो हम प्रभु, भजें नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ समवसरणस्थ प्रथमपीठोपरि-चतुर्दिक्-धर्मचक्र-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३९॥

दूजी कटनी आठ दिशा में, ध्वज से लहराये।
आठ तरह के सिद्ध गुणों से, हमको मन भाए॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ समवसरणस्थ द्वितीयपीठोपरि-चतुर्दिक्-अष्टमहाध्वजा-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४०॥

तीजी पीठ उसी पर शोभित, गंधकुटी प्रभु की।
लम्बी-चौड़ी पहले से कम, जहाँ आदि प्रभु जी॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ समवसरणस्थ तृतीयपीठोपरि-चतुर्दिक्-गंधकुटी-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४१॥

सुपार्श्वनाथ की दिव्यध्वनि को, हम भी पूज रहे।
द्वादशांग को समझ-समझकर, आतम खोज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ समवसरणस्थ द्वादशांगरूप-दिव्यध्वनिसहित अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४२॥

बलदत्त हैं मुख्यरूप से, पंचानवें गणधर।
तीन लाख जिन मुनियों को, हम पूजें सिर धर॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ समवसरणस्थ पंचनवति गणधर-त्रिलक्ष-मुनिवरसहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४३॥

बिम्ब वेदियों स्तूपों के, धूलिसाल वाले।
समवसरण में जहाँ-जहाँ जो, भजें भक्ति वाले॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ समवसरणस्थ सकलजिनबिम्ब अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४४॥

सुपार्श्वनाथ ने घातिकर्म हर, पाया केवलज्ञान।
समवसरण के पर्व हुए फिर, हम पूजें भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ समवसरणस्थ केवलज्ञानमण्डित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४५॥

सुपार्श्वनाथ के समवसरण में, इन्द्र आदि सज्जन।
करें दिव्य पूजा सो हम भी, करें यहीं अर्चन॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ समवसरणस्थ महाजनअर्चित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४६॥

हर द्वारों के बाहर मंगल, द्रव्य नाट्यशाला।
तथा धूपघट नव निधियाँ भी, भजतीं प्रभु माला॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ समवसरणस्थ मंगलद्रव्यादि-वैभवसहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४७॥

चन्द्रप्रभ का पूरव वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम दुर्भाव तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ समवसरणस्थ पूर्वदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४८॥

चन्द्रप्रभ का दक्षिण वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी खेद तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ समवसरणस्थ दक्षिणदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४९॥

चन्द्रप्रभ का पश्चिम वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी शूल तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ समवसरणस्थ पश्चिमदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५०॥

चन्द्रप्रभ का उत्तर वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी मैल तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ समवसरणस्थ उत्तरदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५१॥

चन्द्रप्रभ के समवसरण की, भूमि चैत्यप्रासाद।
जिनबिम्बों को करके नमोऽस्तु, मिलता आशीर्वाद॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ समवसरणस्थ चैत्यप्रासादभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५२॥

बिम्ब खातिका भूमि के भज, समवसरण झलके।
परमानन्द चाहते हम तो, चैन नहीं पल के॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ समवसरणस्थ खातिकाभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५३॥

चन्द्रप्रभ के समवसरण की, लता भूमि सुंदर।
अर्घ्य चढ़ा हम करके नमोऽस्तु, पूजें जिनमंदिर॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ समवसरणस्थ लताभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५४॥

उपवन भू की चार दिशा में, जिन चैत्यालय हैं।
अर्घ्य चढ़ा हम करके नमोऽस्तु, बोल रहे जय हैं॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ समवसरणस्थ उपवनभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५५॥

चन्द्रप्रभ के दसों तरह से, जो ध्वज भूमि सजीं।
वहाँ विराजित बिम्ब पक्तियाँ, हमने रोज भजीं॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ समवसरणस्थ ध्वजभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५६॥

प्रभु से बारह गुने बड़े जो, दस विध कल्पतरु।
भजें वहाँ के जिनबिम्बों को, कर लें ध्यान शुरू॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ समवसरणस्थ कल्पवृक्ष-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५७॥

चन्द्रप्रभ की भवन भूमि के, हों जिनभवन महाँ।
जिनको नमोऽस्तु कर हम पूजें, जिनसा कौन यहाँ॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ समवसरणस्थ भवनभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५८॥

चन्द्रप्रभ की श्रीमण्डप भू, श्री जी से सोहें।
जिनश्री पाने करें नमोऽस्तु, यही हमें मोहें॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ समवसरणस्थ श्रीमण्डपभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५९॥

चन्द्रप्रभ की प्रथम पीठ पर, चार दिशा में सुर।
धर्मचक्र धारें सो हम प्रभु, भजें नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ समवसरणस्थ प्रथमपीठोपरि-चतुर्दिक्-धर्मचक्र-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६०॥

दूजी कटनी आठ दिशा में, ध्वज से लहराये।
आठ तरह के सिद्ध गुणों से, हमको मन भाए॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ समवसरणस्थ द्वितीयपीठोपरि-चतुर्दिक्-अष्टमहाध्वजा-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६१॥

तीजी पीठ उसी पर शोभित, गंधकुटी प्रभु की।
लम्बी-चौड़ी पहले से कम, जहाँ आदि प्रभु जी॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ समवसरणस्थ तृतीयपीठोपरि-चतुर्दिक्-गंधकुटी-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६२॥

चन्द्रप्रभ की दिव्यध्वनि को, हम भी पूज रहे।
द्वादशांग को समझ-समझकर, आतम खोज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ समवसरणस्थ द्वादशांगरूप-दिव्यध्वनिसहित अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६३॥

दत्त नाम हैं मुख्यरूप से, तेरानवें गणधर।
दो लाख पचास हजार मुनि, हम पूजें सिर धर॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ समवसरणस्थ त्रिनवति गणधर-द्विलक्षपंचदशसहस्र-मुनिवरसहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६४॥

बिम्ब वेदियों स्तूपों के, धूलिसाल वाले।
समवसरण में जहाँ-जहाँ जो, भजें भक्ति वाले॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ समवसरणस्थ सकलजिनबिम्ब अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६५॥

चन्द्रप्रभ ने घातिकर्म हर, पाया केवलज्ञान।
समवसरण के पर्व हुए फिर, हम पूजें भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ समवसरणस्थ केवलज्ञानमण्डित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६६॥

चन्द्रप्रभ के समवसरण में, इन्द्र आदि सज्जन।
करें दिव्य पूजा सो हम भी, करें यहीं अर्चन॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ समवसरणस्थ महाजनअर्चित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६७॥

हर द्वारों के बाहर मंगल, द्रव्य नाट्यशाला।
तथा धूपघट नव निधियाँ भी, भजतीं प्रभु माला॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ समवसरणस्थ मंगलद्रव्यादि-वैभवसहित अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६८॥

पुष्पदंत का पूरव वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी शोक तजें॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत समवसरणस्थ पूर्वदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६९॥

पुष्पदंत का दक्षिण वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी हार तजें॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत समवसरणस्थ दक्षिणदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७०॥

पुष्पदंत का पश्चिम वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी भोग तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत समवसरणस्थ पश्चिमदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७१॥

पुष्पदंत का उत्तर वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम जगजाल तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत समवसरणस्थ उत्तरदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७२॥

पुष्पदंत के समवसरण की, भूमि चैत्यप्रासाद।
जिनबिम्बों को करके नमोऽस्तु, मिलता आशीर्वाद॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत समवसरणस्थ चैत्यप्रासादभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७३॥

बिम्ब खातिका भूमि के भज, समवसरण झलके।
परमानन्द चाहते हम तो, चैन नहीं पल के॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत समवसरणस्थ खातिकाभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७४॥

पुष्पदंत के समवसरण की, लता भूमि सुंदर।
अर्घ्य चढ़ा हम करके नमोऽस्तु, पूजें जिनमंदिर॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत समवसरणस्थ लताभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७५॥

उपवन भू की चार दिशा में, जिन चैत्यालय हैं।
अर्घ्य चढ़ा हम करके नमोऽस्तु, बोल रहे जय हैं॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत समवसरणस्थ उपवनभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७६॥

पुष्पदंत के दसों तरह से, जो ध्वज भूमि सजीं।
वहाँ विराजित बिम्ब पंक्तियाँ, हमने रोज भजीं॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत समवसरणस्थ ध्वजभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७७॥

प्रभु से बारह गुने बड़े जो, दस विध कल्पतरु।
भजें वहाँ के जिनबिम्बों को, कर लें ध्यान शुरू॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत समवसरणस्थ कल्पवृक्ष-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७८॥

पुष्पदंत की भवन भूमि के, हों जिनभवन महाँ।
जिनको नमोऽस्तु कर हम पूजें, जिनसा कौन यहाँ॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत समवसरणस्थ भवनभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७९॥

पुष्पदंत की श्रीमण्डप भू, श्री जी से सोहें।
जिनश्री पाने करें नमोऽस्तु, यही हमें मोहें॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत समवसरणस्थ श्रीमण्डपभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८०॥

पुष्पदंत की प्रथम पीठ पर, चार दिशा में सुर।
धर्मचक्र धारें सो हम प्रभु, भजें नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत समवसरणस्थ प्रथमपीठोपरि-चतुर्दिक्-धर्मचक्र-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८१॥

दूजी कटनी आठ दिशा में, ध्वज से लहराये।
आठ तरह के सिद्ध गुणों से, हमको मन भाए॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत समवसरणस्थ द्वितीयपीठोपरि-चतुर्दिक्-अष्टमहाध्वजा-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८२॥

तीजी पीठ उसी पर शोभित, गंधकुटी प्रभु की।
लम्बी-चौड़ी पहले से कम, जहाँ पुष्पदंत जी॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत समवसरणस्थ तृतीयपीठोपरि-चतुर्दिक्-गंधकुटी-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८३॥

पुष्पदंत की दिव्यध्वनि को, हम भी पूज रहे।
द्वादशांग को समझ-समझकर, आतम खोज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत समवसरणस्थ द्वादशांगरूप-दिव्यध्वनिसहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८४॥

विदर्भ हैं मुख्यरूप से, अठ्ठासी गणधर।
दो लाख जिन मुनियों को, हम पूजें सिर धर॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत समवसरणस्थ अष्टाशीति गणधर-द्विलक्ष-मुनिवरसहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८५॥

बिम्ब वेदियों स्तूपों के, धूलिसाल वाले।
समवसरण में जहाँ-जहाँ जो, भजें भक्ति वाले॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत समवसरणस्थ सकलजिनबिम्ब अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८६॥

पुष्पदंत ने घातिकर्म हर, पाया केवलज्ञान।
समवसरण के पर्व हुए फिर, हम पूजें भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत समवसरणस्थ केवलज्ञानमण्डित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८७॥

पुष्पदंत के समवसरण में, इन्द्र आदि सज्जन।
करें दिव्य पूजा सो हम भी, करें यहीं अर्चन॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत समवसरणस्थ महाजनअर्चित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८८॥

हर द्वारों के बाहर मंगल, द्रव्य नाट्यशाला।
तथा धूपघट नव निधियाँ भी, भजतीं प्रभु माला॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत समवसरणस्थ मंगलद्रव्यादि-वैभवसहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८९॥

शीतलनाथ का पूरव वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम संसार तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ समवसरणस्थ पूर्वदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९०॥

शीतलनाथ का दक्षिण वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम अवरोध तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ समवसरणस्थ दक्षिणदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९१॥

शीतलनाथ का पश्चिम वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम विद्रूप तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ समवसरणस्थ पश्चिमदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९२॥

शीतलनाथ का उत्तर वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम परतंत्र तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ समवसरणस्थ उत्तरदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९३॥

शीतलनाथ के समवसरण की, भूमि चैत्यप्रासाद।
जिनबिम्बों को करके नमोऽस्तु, मिलता आशीर्वाद॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ समवसरणस्थ चैत्यप्रासादभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९४॥

बिम्ब खातिका भूमि के भज, समवसरण झलके।
परमानन्द चाहते हम तो, चैन नहीं पल के॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ समवसरणस्थ खातिकाभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९५॥

शीतलनाथ के समवसरण की, लता भूमि सुंदर।
अर्घ्य चढ़ा हम करके नमोऽस्तु, पूजें जिनमंदिर॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ समवसरणस्थ लताभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९६॥

उपवन भू की चार दिशा में, जिन चैत्यालय हैं।
अर्घ्य चढ़ा हम करके नमोऽस्तु, बोल रहे जय हैं॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ समवसरणस्थ उपवनभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९७॥

शीतलनाथ के दसों तरह से, जो ध्वज भूमि सजीं।
वहाँ विराजित बिम्ब पंक्तियाँ, हमने रोज भजीं॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ समवसरणस्थ ध्वजभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९८॥

प्रभु से बारह गुने बड़े जो, दस विध कल्पतरु।
भजें वहाँ के जिनबिम्बों को, कर लें ध्यान शुरू॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ समवसरणस्थ कल्पवृक्ष-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९९॥

शीतलनाथ की भवन भूमि के, हों जिनभवन महाँ।
जिनको नमोऽस्तु कर हम पूजें, जिनसा कौन यहाँ॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ समवसरणस्थ भवनभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२००॥

शीतलनाथ की श्रीमण्डप भू, श्री जी से सोहें।
जिनश्री पाने करें नमोऽस्तु, यही हमें मोहें॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ समवसरणस्थ श्रीमण्डपभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०१॥

शीतलनाथ की प्रथम पीठ पर, चार दिशा में सुर।
धर्मचक्र धारें सो हम प्रभु, भजें नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ समवसरणस्थ प्रथमपीठोपरि-चतुर्दिक्-धर्मचक्र-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०२॥

दूजी कटनी आठ दिशा में, ध्वज से लहराये।
आठ तरह के सिद्ध गुणों से, हमको मन भाए॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ समवसरणस्थ द्वितीयपीठोपरि-चतुर्दिक्-अष्टमहाध्वजा-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०३॥

तीजी पीठ उसी पर शोभित, गंधकुटी प्रभु की।
लम्बी-चौड़ी पहले से कम, जहाँ शीतल प्रभु जी॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ समवसरणस्थ तृतीयपीठोपरि-चतुर्दिक्-गंधकुटी-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०४॥

शीतलनाथ की दिव्यध्वनि को, हम भी पूज रहे।
द्वादशांग को समझ-समझकर, आतम खोज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ समवसरणस्थ द्वादशांगरूप-दिव्यध्वनिसहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०५॥

अनगारी हैं मुख्यरूप से, इक्यासी गणधर।
एक लाख जिन मुनियों को, हम पूजें सिर धर॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ समवसरणस्थ एकाशीति गणधर-लक्ष-मुनिवरसहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०६॥

बिम्ब वेदियों स्तूपों के, धूलिसाल वाले।
समवसरण में जहाँ-जहाँ जो, भजें भक्ति वाले॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ समवसरणस्थ सकलजिनबिम्ब अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०७॥

शीतलनाथ ने घातिकर्म हर, पाया केवलज्ञान।
समवसरण के पर्व हुए फिर, हम पूजें भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ समवसरणस्थ केवलज्ञानमण्डित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०८॥

शीतलनाथ के समवसरण में, इन्द्र आदि सज्जन।
करें दिव्य पूजा सो हम भी, करें यहीं अर्चन॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ समवसरणस्थ महाजनअर्चित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०९॥

हर द्वारों के बाहर मंगल, द्रव्य नाट्यशाला।
तथा धूपघट नव निधियाँ भी, भजतीं प्रभु माला॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ समवसरणस्थ मंगलद्रव्यादि-वैभवसहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१०॥

श्रेयांसनाथ का पूरव वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम प्रतिरोध तजें॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ समवसरणस्थ पूर्वदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२११॥

श्रेयांसनाथ का दक्षिण वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम प्रतिशोध तजें॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ समवसरणस्थ दक्षिणदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१२॥

श्रेयांसनाथ का पश्चिम वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम प्रतिकार तजें॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ समवसरणस्थ पश्चिमदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१३॥

श्रेयांसनाथ का उत्तर वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम मिथ्यात्व तजें॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ समवसरणस्थ उत्तरदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१४॥

श्रेयांसनाथ के समवसरण की, भूमि चैत्यप्रासाद।
जिनबिम्बों को करके नमोऽस्तु, मिलता आशीर्वाद॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ समवसरणस्थ चैत्यप्रासादभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१५॥

बिम्ब खातिका भूमि के भज, समवसरण झलके।
परमानन्द चाहते हम तो, चैन नहीं पल के॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ समवसरणस्थ खातिकाभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१६॥

श्रेयांसनाथ के समवसरण की, लता भूमि सुंदर।
अर्घ्य चढ़ा हम करके नमोऽस्तु, पूजें जिनमंदिर॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ समवसरणस्थ लताभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१७॥

उपवन भू की चार दिशा में, जिन चैत्यालय हैं।
अर्घ्य चढ़ा हम करके नमोऽस्तु, बोल रहे जय हैं॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ समवसरणस्थ उपवनभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१८॥

श्रेयांसनाथ के दसों तरह से, जो ध्वज भूमि सजीं।
वहाँ विराजित बिम्ब पक्तियाँ, हमने रोज भजीं॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ समवसरणस्थ ध्वजभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१९॥

प्रभु से बारह गुने बड़े जो, दस विध कल्पतरु।
भजें वहाँ के जिनबिम्बों को, कर लें ध्यान शुरू॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ समवसरणस्थ कल्पवृक्ष-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२०॥

श्रेयांसनाथ की भवन भूमि के, हों जिनभवन महाँ।
जिनको नमोऽस्तु कर हम पूजें, जिनसा कौन यहाँ॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ समवसरणस्थ भवनभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२१॥

श्रेयांसनाथ की श्रीमण्डप भू, श्री जी से सोहें।
जिनश्री पाने करें नमोऽस्तु, यही हमें मोहें॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ समवसरणस्थ श्रीमण्डपभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२२॥

श्रेयांसनाथ की प्रथम पीठ पर, चार दिशा में सुर।
धर्मचक्र धारें सो हम प्रभु, भजें नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ समवसरणस्थ प्रथमपीठोपरि-चतुर्दिक्-धर्मचक्र-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२३॥

दूजी कटनी आठ दिशा में, ध्वज से लहराये।
आठ तरह के सिद्ध गुणों से, हमको मन भाए॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ समवसरणस्थ द्वितीयपीठोपरि-चतुर्दिक्-अष्टमहाध्वजा-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२४॥

तीजी पीठ उसी पर शोभित, गंधकुटी प्रभु की।
लम्बी-चौड़ी पहले से कम, जहाँ श्रेयांस प्रभु जी॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ समवसरणस्थ तृतीयपीठोपरि-चतुर्दिक्-गंधकुटी-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२५॥

श्रेयांसनाथ की दिव्यध्वनि को, हम भी पूज रहे।
द्वादशांग को समझ-समझकर, आतम खोज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ समवसरणस्थ द्वादशांगरूप-दिव्यध्वनिसहित अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२६॥

कुन्थु नाम हैं मुख्यरूप से, सतहत्तर गणधर।
चौरासी हजार मुनियों को, हम पूजें सिर धर॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ समवसरणस्थ सप्तसप्तदश गणधर-चतुर्शीतिसहस्र-मुनिवरसहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२७॥

बिम्ब वेदियों स्तूपों के, धूलिसाल वाले।
समवसरण में जहाँ-जहाँ जो, भजें भक्ति वाले॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ समवसरणस्थ सकलजिनबिम्ब अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२८॥

श्रेयांसनाथ ने घातिकर्म हर, पाया केवलज्ञान।
समवसरण के पर्व हुए फिर, हम पूजें भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ समवसरणस्थ केवलज्ञानमण्डित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२९॥

श्रेयांसनाथ के समवसरण में, इन्द्र आदि सज्जन।
करें दिव्य पूजा सो हम भी, करें यहीं अर्चन॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ समवसरणस्थ महाजनअर्चित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३०॥

हर द्वारों के बाहर मंगल, द्रव्य नाट्यशाला।
तथा धूपघट नव निधियाँ भी, भजतीं प्रभु माला॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ समवसरणस्थ मंगलद्रव्यादि-वैभवसहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३१॥

वासुपूज्य का पूरव वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम संयोग तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य समवसरणस्थ पूर्वदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३२॥

वासुपूज्य का दक्षिण वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम वियोग तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य समवसरणस्थ दक्षिणदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३३॥

वासुपूज्य का पश्चिम वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी खिन्न तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य समवसरणस्थ पश्चिमदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३४॥

वासुपूज्य का उत्तर वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी भिन्न तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य समवसरणस्थ उत्तरदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३५॥

वासुपूज्य के समवसरण की, भूमि चैत्यप्रासाद।
जिनबिम्बों को करके नमोऽस्तु, मिलता आशीर्वाद॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य समवसरणस्थ चैत्यप्रासादभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३६॥

बिम्ब खातिका भूमि के भज, समवसरण झलके।
परमानन्द चाहते हम तो, चैन नहीं पल के॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य समवसरणस्थ खातिकाभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३७॥

वासुपूज्य के समवसरण की, लता भूमि सुंदर।
अर्घ्य चढ़ा हम करके नमोऽस्तु, पूजें जिनमंदिर॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य समवसरणस्थ लताभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३८॥

उपवन भू की चार दिशा में, जिन चैत्यालय हैं।
अर्घ्य चढ़ा हम करके नमोऽस्तु, बोल रहे जय हैं॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य समवसरणस्थ उपवनभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३९॥

वासुपूज्य के दसों तरह से, जो ध्वज भूमि सजीं।
वहाँ विराजित बिम्ब पक्तियाँ, हमने रोज भजीं॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य समवसरणस्थ ध्वजभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४०॥

प्रभु से बारह गुने बड़े जो, दस विध कल्पतरु।
भजें वहाँ के जिनबिम्बों को, कर लें ध्यान शुरू॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य समवसरणस्थ कल्पवृक्ष-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४१॥

वासुपूज्य की भवन भूमि के, हों जिनभवन महाँ।
जिनको नमोऽस्तु कर हम पूजें, जिनसा कौन यहाँ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य समवसरणस्थ भवनभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४२॥

वासुपूज्य की श्रीमण्डप भू, श्री जी से सोहें।
जिनश्री पाने करें नमोऽस्तु, यही हमें मोहें॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य समवसरणस्थ श्रीमण्डपभूमि-सम्बन्धी अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४३॥

वासुपूज्य की प्रथम पीठ पर, चार दिशा में सुर।
धर्मचक्र धारें सो हम प्रभु, भजें नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य समवसरणस्थ प्रथमपीठोपरि-चतुर्दिक्-धर्मचक्र-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४४॥

दूजी कटनी आठ दिशा में, ध्वज से लहराये।
आठ तरह के सिद्ध गुणों से, हमको मन भाए॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य समवसरणस्थ द्वितीयपीठोपरि-चतुर्दिक्-अष्टमहाध्वजा-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४५॥

तीजी पीठ उसी पर शोभित, गंधकुटी प्रभु की।
लम्बी-चौड़ी पहले से कम, जहाँ वासुपूज्य प्रभु जी॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य समवसरणस्थ तृतीयपीठोपरि-चतुर्दिक्-गंधकुटी-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४६॥

वासुपूज्य की दिव्यध्वनि को, हम भी पूज रहे।
द्वादशांग को समझ-समझकर, आतम खोज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य समवसरणस्थ द्वादशांगरूप-दिव्यध्वनिसहित अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४७॥

श्री सधर्म हैं मुख्यरूप से, छ्यासठ गुरु गणधर।
बहत्तर हजार मुनियों को, हम पूजें सिर धर॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य समवसरणस्थ षष्टषष्टि गणधर-द्विसप्तदशसहस्र-मुनिवरसहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४८॥

बिम्ब वेदियों स्तूपों के, धूलिसाल वाले।
समवसरण में जहाँ–जहाँ जो, भजें भक्ति वाले॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य समवसरणस्थ सकलजिनबिम्ब अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४९॥

वासुपूज्य ने घातिकर्म हर, पाया केवलज्ञान।
समवसरण के पर्व हुए फिर, हम पूजें भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य समवसरणस्थ केवलज्ञानमण्डित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५०॥

वासुपूज्य के समवसरण में, इन्द्र आदि सज्जन।
करें दिव्य पूजा सो हम भी, करें यहीं अर्चन॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य समवसरणस्थ महाजनअर्चित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५१॥

हर द्वारों के बाहर मंगल, द्रव्य नाट्यशाला।
तथा धूपघट नव निधियाँ भी, भजतीं प्रभु माला॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य समवसरणस्थ मंगलद्रव्यादि–वैभवसहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५२॥

विमलनाथ का पूरव वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी चपल तजें॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ समवसरणस्थ पूर्वदिक्‌मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त–चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५३॥

विमलनाथ का दक्षिण वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी विकल तजें॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ समवसरणस्थ दक्षिणदिक्‌मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त–चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५४॥

विमलनाथ का पश्चिम वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी भ्रांति तजें॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ समवसरणस्थ पश्चिमदिक्‌मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५५॥

विमलनाथ का उत्तर वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी क्रांति तजें॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ समवसरणस्थ उत्तरदिक्‌मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५६॥

विमलनाथ के समवसरण की, भूमि चैत्यप्रासाद।
जिनबिम्बों को करके नमोऽस्तु, मिलता आशीर्वाद॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ समवसरणस्थ चैत्यप्रासादभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५७॥

बिम्ब खातिका भूमि के भज, समवसरण झलके।
परमानन्द चाहते हम तो, चैन नहीं पल के॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ समवसरणस्थ खातिकाभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५८॥

विमलनाथ के समवसरण की, लता भूमि सुंदर।
अर्घ्य चढ़ा हम करके नमोऽस्तु, पूजें जिनमंदिर॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ समवसरणस्थ लताभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५९॥

उपवन भू की चार दिशा में, जिन चैत्यालय हैं।
अर्घ्य चढ़ा हम करके नमोऽस्तु, बोल रहे जय हैं॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ समवसरणस्थ उपवनभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६०॥

विमलनाथ के दसों तरह से, जो ध्वज भूमि सजीं।
वहाँ विराजित बिम्ब पक्तियाँ, हमने रोज भजीं॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ समवसरणस्थ ध्वजभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६१॥

प्रभु से बारह गुने बड़े जो, दस विध कल्पतरु।
भजें वहाँ के जिनबिम्बों को, कर लें ध्यान शुरू॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ समवसरणस्थ कल्पवृक्ष-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६२॥

विमलनाथ की भवन भूमि के, हों जिनभवन महाँ।
जिनको नमोऽस्तु कर हम पूजें, जिनसा कौन यहाँ॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ समवसरणस्थ भवनभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६३॥

विमलनाथ की श्रीमण्डप भू, श्री जी से सोहें।
जिनश्री पाने करें नमोऽस्तु, यही हमें मोहें॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ समवसरणस्थ श्रीमण्डपभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६४॥

विमलनाथ की प्रथम पीठ पर, चार दिशा में सुर।
धर्मचक्र धारें सो हम प्रभु, भजें नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ समवसरणस्थ प्रथमपीठोपरि-चतुर्दिक्-धर्मचक्र-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६५॥

दूजी कटनी आठ दिशा में, ध्वज से लहराये।
आठ तरह के सिद्ध गुणों से, हमको मन भाए॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ समवसरणस्थ द्वितीयपीठोपरि-चतुर्दिक्-अष्टमहाध्वजा-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६६॥

तीजी पीठ उसी पर शोभित, गंधकुटी प्रभु की।
लम्बी-चौड़ी पहले से कम, जहाँ विमल प्रभु जी॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ समवसरणस्थ तृतीयपीठोपरि-चतुर्दिक्-गंधकुटी-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६७॥

विमलनाथ की दिव्यध्वनि को, हम भी पूज रहे।
द्वादशांग को समझ-समझकर, आतम खोज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ समवसरणस्थ द्वादशांगरूप-दिव्यध्वनिसहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६८॥

श्री मंदार्य हैं मुख्यरूप से, पचपन गुरु गणधर।
अड़सठ हजार मुनियों को, हम पूजें सिर धर॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ समवसरणस्थ पंचपंचादश गणधर-अष्टषष्टिसहस्र-मुनिवरसहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६९॥

बिम्ब वेदियों स्तूपों के, धूलिसाल वाले।
समवसरण में जहाँ-जहाँ जो, भजें भक्ति वाले॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ समवसरणस्थ सकलजिनबिम्ब अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७०॥

विमलनाथ ने घातिकर्म हर, पाया केवलज्ञान।
समवसरण के पर्व हुए फिर, हम पूजें भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ समवसरणस्थ केवलज्ञानमण्डित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७१॥

विमलनाथ के समवसरण में, इन्द्र आदि सज्जन।
करें दिव्य पूजा सो हम भी, करें यहीं अर्चन॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ समवसरणस्थ महाजनअर्चित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७२॥

हर द्वारों के बाहर मंगल, द्रव्य नाट्यशाला।
तथा धूपघट नव निधियाँ भी, भजतीं प्रभु माला॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ समवसरणस्थ मंगलद्रव्यादि-वैभवसहित अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७३॥

अनन्तनाथ का पूरव वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी वर्ण तजें॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ समवसरणस्थ पूर्वदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७४॥

अनन्तनाथ का दक्षिण वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी गंध तजें॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ समवसरणस्थ दक्षिणदिक्‌मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७५॥

अनन्तनाथ का पश्चिम वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी ग्रन्थ तजें॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ समवसरणस्थ पश्चिमदिक्‌मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७६॥

अनन्तनाथ का उत्तर वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी स्वाद तजें॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ समवसरणस्थ उत्तरदिक्‌मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७७॥

अनन्तनाथ के समवसरण की, भूमि चैत्यप्रासाद।
जिनबिम्बों को करके नमोऽस्तु, मिलता आशीर्वाद॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ समवसरणस्थ चैत्यप्रासादभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७८॥

बिम्ब खातिका भूमि के भज, समवसरण झलके।
परमानन्द चाहते हम तो, चैन नहीं पल के॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ समवसरणस्थ खातिकाभूमि-सम्बन्धी अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७९॥

अनन्तनाथ के समवसरण की, लता भूमि सुंदर।
अर्घ्य चढ़ा हम करके नमोऽस्तु, पूजें जिनमंदिर॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ समवसरणस्थ लताभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८०॥

उपवन भू की चार दिशा में, जिन चैत्यालय हैं।
अर्घ्य चढ़ा हम करके नमोऽस्तु, बोल रहे जय हैं॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ समवसरणस्थ उपवनभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८१॥

अनन्तनाथ के दसों तरह से, जो ध्वज भूमि सजीं।
वहाँ विराजित बिम्ब पक्तियाँ, हमने रोज भजीं॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ समवसरणस्थ ध्वजभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८२॥

प्रभु से बारह गुने बड़े जो, दस विध कल्पतरु।
भजें वहाँ के जिनबिम्बों को, कर लें ध्यान शुरू॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ समवसरणस्थ कल्पवृक्ष-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८३॥

अनन्तनाथ की भवन भूमि के, हों जिनभवन महाँ।
जिनको नमोऽस्तु कर हम पूजें, जिनसा कौन यहाँ॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ समवसरणस्थ भवनभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८४॥

अनन्तनाथ की श्रीमण्डप भू, श्री जी से सोहें।
जिनश्री पाने करें नमोऽस्तु, यही हमें मोहें॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ समवसरणस्थ श्रीमण्डपभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८५॥

अनन्तनाथ की प्रथम पीठ पर, चार दिशा में सुर।
धर्मचक्र धारें सो हम प्रभु, भजें नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ समवसरणस्थ प्रथमपीठोपरि-चतुर्दिक्-धर्मचक्र-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८६॥

दूजी कटनी आठ दिशा में, ध्वज से लहराये।
आठ तरह के सिद्ध गुणों से, हमको मन भाए॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ समवसरणस्थ द्वितीयपीठोपरि-चतुर्दिक्-अष्टमहाध्वजा-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८७॥

तीजी पीठ उसी पर शोभित, गंधकुटी प्रभु की।
लम्बी-चौड़ी पहले से कम, जहाँ अनन्त प्रभु जी॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ समवसरणस्थ तृतीयपीठोपरि-चतुर्दिक्-गंधकुटी-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८८॥

अनन्तनाथ की दिव्यध्वनि को, हम भी पूज रहे।
द्वादशांग को समझ-समझकर, आतम खोज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ समवसरणस्थ द्वादशांगरूप-दिव्यध्वनिसहित अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८९॥

जयार्य हैं मुख्यरूप से, पचास गुरु गणधर।
छ्यासठ हजार मुनियों को, हम पूजें सिर धर॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ समवसरणस्थ पंचदश गणधर-षट्षष्टिसहस्र-मुनिवरसहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९०॥

बिम्ब वेदियों स्तूपों के, धूलिसाल वाले।
समवसरण में जहाँ-जहाँ जो, भजें भक्ति वाले॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ समवसरणस्थ सकलजिनबिम्ब अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९१॥

अनन्तनाथ ने घातिकर्म हर, पाया केवलज्ञान।
समवसरण के पर्व हुए फिर, हम पूजें भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ समवसरणस्थ केवलज्ञानमण्डित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९२॥

अनन्तनाथ के समवसरण में, इन्द्र आदि सज्जन।
करें दिव्य पूजा सो हम भी, करें यहीं अर्चन॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ समवसरणस्थ महाजनअर्चित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९३॥

हर द्वारों के बाहर मंगल, द्रव्य नाट्यशाला।
तथा धूपघट नव निधियाँ भी, भजतीं प्रभु माला॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ समवसरणस्थ मंगलद्रव्यादि-वैभवसहित अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९४॥

धर्मनाथ का पूरव वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी प्रश्न तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ समवसरणस्थ पूर्वदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९५॥

धर्मनाथ का दक्षिण वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी स्वप्न तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ समवसरणस्थ दक्षिणदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९६॥

धर्मनाथ का पश्चिम वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी अयश तजें॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ समवसरणस्थ पश्चिमदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९७॥

धर्मनाथ का उत्तर वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी देह तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ समवसरणस्थ उत्तरदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९८॥

धर्मनाथ के समवसरण की, भूमि चैत्यप्रासाद।
जिनबिम्बों को करके नमोऽस्तु, मिलता आशीर्वाद॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ समवसरणस्थ चैत्यप्रासादभूमि-सम्बन्धी अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९९॥

बिम्ब खातिका भूमि के भज, समवसरण झलके।
परमानन्द चाहते हम तो, चैन नहीं पल के॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ समवसरणस्थ खातिकाभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३००॥

धर्मनाथ के समवसरण की, लता भूमि सुंदर।
अर्घ्य चढ़ा हम करके नमोऽस्तु, पूजें जिनमंदिर॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ समवसरणस्थ लताभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३०१॥

उपवन भू की चार दिशा में, जिन चैत्यालय हैं।
अर्घ्य चढ़ा हम करके नमोऽस्तु, बोल रहे जय हैं॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ समवसरणस्थ उपवनभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३०२॥

धर्मनाथ के दसों तरह से, जो ध्वज भूमि सजीं।
वहाँ विराजित बिम्ब पक्तियाँ, हमने रोज भजीं॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ समवसरणस्थ ध्वजभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३०३॥

प्रभु से बारह गुने बड़े जो, दस विध कल्पतरु।
भजें वहाँ के जिनबिम्बों को, कर लें ध्यान शुरू॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ समवसरणस्थ कल्पवृक्ष-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३०४॥

धर्मनाथ की भवन भूमि के, हों जिनभवन महाँ।
जिनको नमोऽस्तु कर हम पूजें, जिनसा कौन यहाँ॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ समवसरणस्थ भवनभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३०५॥

धर्मनाथ की श्रीमण्डप भू, श्री जी से सोहें।
जिनश्री पाने करें नमोऽस्तु, यही हमें मोहें॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ समवसरणस्थ श्रीमण्डपभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३०६॥

धर्मनाथ की प्रथम पीठ पर, चार दिशा में सुर।
धर्मचक्र धारें सो हम प्रभु, भजें नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ समवसरणस्थ प्रथमपीठोपरि-चतुर्दिक्-धर्मचक्र-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३०७॥

दूजी कटनी आठ दिशा में, ध्वज से लहराये।
आठ तरह के सिद्ध गुणों से, हमको मन भाए॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ समवसरणस्थ द्वितीयपीठोपरि-चतुर्दिक्-अष्टमहाध्वजा-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३०८॥

तीजी पीठ उसी पर शोभित, गंधकुटी प्रभु की।
लम्बी-चौड़ी पहले से कम, जहाँ धर्म प्रभु जी॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ समवसरणस्थ तृतीयपीठोपरि-चतुर्दिक्-गंधकुटी-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३०९॥

धर्मनाथ की दिव्यध्वनि को, हम भी पूज रहे।
द्वादशांग को समझ-समझकर, आतम खोज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ समवसरणस्थ द्वादशांगरूप-दिव्यध्वनिसहित अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३१०॥

अरिष्टसेन हैं मुख्यरूप से, तैंतालीस गणधर।
चौंसठ हजार मुनियों को, हम पूजें सिर धर॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ समवसरणस्थ त्रिचत्वारिंशत गणधर-चतुषष्टिसहस्त्र-मुनिवरसहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३११॥

बिम्ब वेदियों स्तूपों के, धूलिसाल वाले।
समवसरण में जहाँ-जहाँ जो, भजें भक्ति वाले॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ समवसरणस्थ सकलजिनबिम्ब अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३१२॥

धर्मनाथ ने घातिकर्म हर, पाया केवलज्ञान।
समवसरण के पर्व हुए फिर, हम पूजें भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ समवसरणस्थ केवलज्ञानमण्डित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३१३॥

धर्मनाथ के समवसरण में, इन्द्र आदि सज्जन।
करें दिव्य पूजा सो हम भी, करें यहीं अर्चन॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ समवसरणस्थ महाजनअर्चित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३१४॥

हर द्वारों के बाहर मंगल, द्रव्य नाट्यशाला।
तथा धूपघट नव निधियाँ भी, भजतीं प्रभु माला॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ समवसरणस्थ मंगलद्रव्यादि-वैभवसहित अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३१५॥

शान्तिनाथ का पूरव वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम उपभोग तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ समवसरणस्थ पूर्वदिक्‌मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३१६॥

शान्तिनाथ का दक्षिण वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम अब्रह्म तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ समवसरणस्थ दक्षिणदिक्‌मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३१७॥

शान्तिनाथ का पश्चिम वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम अवलंब तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ समवसरणस्थ पश्चिमदिक्‌मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३१८॥

शान्तिनाथ का उत्तर वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम अवसाद तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ समवसरणस्थ उत्तरदिक्‌मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३१९॥

शान्तिनाथ के समवसरण की, भूमि चैत्यप्रासाद।
जिनबिम्बों को करके नमोऽस्तु, मिलता आशीर्वाद॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ समवसरणस्थ चैत्यप्रासादभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२०॥

बिम्ब खातिका भूमि के भज, समवसरण झलके।
परमानन्द चाहते हम तो, चैन नहीं पल के॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ समवसरणस्थ खातिकाभूमि-सम्बन्धी अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२१॥

शान्तिनाथ के समवसरण की, लता भूमि सुंदर।
अर्घ्य चढ़ा हम करके नमोऽस्तु, पूजें जिनमंदिर॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ समवसरणस्थ लताभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२२॥

उपवन भू की चार दिशा में, जिन चैत्यालय हैं।
अर्घ्य चढ़ा हम करके नमोऽस्तु, बोल रहे जय हैं॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ समवसरणस्थ उपवनभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२३॥

शान्तिनाथ के दसों तरह से, जो ध्वज भूमि सजीं।
वहाँ विराजित बिम्ब पक्तियाँ, हमने रोज भजीं॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ समवसरणस्थ ध्वजभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२४॥

प्रभु से बारह गुने बड़े जो, दस विध कल्पतरु।
भजें वहाँ के जिनबिम्बों को, कर लें ध्यान शुरू॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ समवसरणस्थ कल्पवृक्ष-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२५॥

शान्तिनाथ की भवन भूमि के, हों जिनभवन महां।
जिनको नमोऽस्तु कर हम पूजें, जिनसा कौन यहाँ॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ समवसरणस्थ भवनभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२६॥

शान्तिनाथ की श्रीमण्डप भू, श्री जी से सोहें।
जिनश्री पाने करें नमोऽस्तु, यही हमें मोहें॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ समवसरणस्थ श्रीमण्डपभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२७॥

शान्तिनाथ की प्रथम पीठ पर, चार दिशा में सुर।
धर्मचक्र धारें सो हम प्रभु, भजें नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ समवसरणस्थ प्रथमपीठोपरि-चतुर्दिक्-धर्मचक्र-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२८॥

दूजी कटनी आठ दिशा में, ध्वज से लहराये।
आठ तरह के सिद्ध गुणों से, हमको मन भाए॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ समवसरणस्थ द्वितीयपीठोपरि-चतुर्दिक्-अष्टमहा-ध्वजा-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२९॥

तीजी पीठ उसी पर शोभित, गंधकुटी प्रभु की।
लम्बी-चौड़ी पहले से कम, जहाँ शान्ति प्रभु जी॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ समवसरणस्थ तृतीयपीठोपरि-चतुर्दिक्-गंधकुटी-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३०॥

शान्तिनाथ की दिव्यध्वनि को, हम भी पूज रहे।
द्वादशांग को समझ-समझकर, आतम खोज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ समवसरणस्थ द्वादशांगरूप-दिव्यध्वनिसहित अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३१॥

चक्रायुध हैं मुख्यरूप से, छत्तीस गुरु गणधर।
बासठ हजार मुनियों को, हम पूजें सिर धर॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ समवसरणस्थ षट्त्रिंशत गणधर-द्विषष्टिसहस्र-मुनिवरसहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३२॥

बिम्ब वेदियों स्तूपों के, धूलिसाल वाले।
समवसरण में जहाँ-जहाँ जो, भजें भक्ति वाले॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ समवसरणस्थ सकलजिनबिम्ब अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३३॥

शान्तिनाथ ने घातिकर्म हर, पाया केवलज्ञान।
समवसरण के पर्व हुए फिर, हम पूजें भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ समवसरणस्थ केवलज्ञानमण्डित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३४॥

शान्तिनाथ के समवसरण में, इन्द्र आदि सज्जन।
करें दिव्य पूजा सो हम भी, करें यहीं अर्चन॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ समवसरणस्थ महाजनअर्चित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३५॥

हर द्वारों के बाहर मंगल, द्रव्य नाट्यशाला।
तथा धूपघट नव निधियाँ भी, भजतीं प्रभु माला॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ समवसरणस्थ मंगलद्रव्यादि-वैभवसहित अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३६॥

कुन्थुनाथ का पूरव वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी द्वित्व तजें॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ समवसरणस्थ पूर्वदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३७॥

कुन्थुनाथ का दक्षिण वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी अहित तजें॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ समवसरणस्थ दक्षिणदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३८॥

कुन्थुनाथ का पश्चिम वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम जड़भोग तजें॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ समवसरणस्थ पश्चिमदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३९॥

कुन्थुनाथ का उत्तर वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी उपसर्ग तजें॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ समवसरणस्थ उत्तरदिक्‌मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४०॥

कुन्थुनाथ के समवसरण की, भूमि चैत्यप्रासाद।
जिनबिम्बों को करके नमोऽस्तु, मिलता आशीर्वाद॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ समवसरणस्थ चैत्यप्रासादभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४१॥

बिम्ब खातिका भूमि के भज, समवसरण झलके।
परमानन्द चाहते हम तो, चैन नहीं पल के॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ समवसरणस्थ खातिकाभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४२॥

कुन्थुनाथ के समवसरण की, लता भूमि सुंदर।
अर्घ्य चढ़ा हम करके नमोऽस्तु, पूजें जिनमंदिर॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ समवसरणस्थ लताभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४३॥

उपवन भू की चार दिशा में, जिन चैत्यालय हैं।
अर्घ्य चढ़ा हम करके नमोऽस्तु, बोल रहे जय हैं॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ समवसरणस्थ उपवनभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४४॥

कुन्थुनाथ के दसों तरह से, जो ध्वज भूमि सजीं।
वहाँ विराजित बिम्ब पक्तियाँ, हमने रोज भजीं॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ समवसरणस्थ ध्वजभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४५॥

प्रभु से बारह गुने बड़े जो, दस विध कल्पतरु।
भजें वहाँ के जिनबिम्बों को, कर लें ध्यान शुरू॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ समवसरणस्थ कल्पवृक्ष-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४६॥

कुन्थुनाथ की भवन भूमि के, हों जिनभवन महाँ।
जिनको नमोऽस्तु कर हम पूजें, जिनसा कौन यहाँ॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ समवसरणस्थ भवनभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४७॥

कुन्थुनाथ की श्रीमण्डप भू, श्री जी से सोहें।
जिनश्री पाने करें नमोऽस्तु, यही हमें मोहें॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ समवसरणस्थ श्रीमण्डपभूमि-सम्बन्धी अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४८॥

कुन्थुनाथ की प्रथम पीठ पर, चार दिशा में सुर।
धर्मचक्र धारें सो हम प्रभु, भजें नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ समवसरणस्थ प्रथमपीठोपरि-चतुर्दिक्-धर्मचक्र-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४९॥

दूजी कटनी आठ दिशा में, ध्वज से लहराये।
आठ तरह के सिद्ध गुणों से, हमको मन भाए॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ समवसरणस्थ द्वितीयपीठोपरि-चतुर्दिक्-अष्टमहाध्वजा-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५०॥

तीजी पीठ उसी पर शोभित, गंधकुटी प्रभु की।
लम्बी-चौड़ी पहले से कम, जहाँ कुन्थु प्रभु जी॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ समवसरणस्थ तृतीयपीठोपरि-चतुर्दिक्-गंधकुटी-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५१॥

कुन्थुनाथ की दिव्यध्वनि को, हम भी पूज रहे।
द्वादशांग को समझ-समझकर, आतम खोज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ समवसरणस्थ द्वादशांगरूप-दिव्यध्वनिसहित अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५२॥

स्वयंभू हैं मुख्यरूप से, पैंतीस गुरु गणधर।
साठ हजार मुनियों को, हम पूजें सिर धर॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ समवसरणस्थ पंचत्रिंशत गणधर-षष्ठिसहस्र-मुनिवर-सहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५३॥

बिम्ब वेदियों स्तूपों के, धूलिसाल वाले।
समवसरण में जहाँ-जहाँ जो, भजें भक्ति वाले॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ समवसरणस्थ सकलजिनबिम्ब अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५४॥

कुन्थुनाथ ने घातिकर्म हर, पाया केवलज्ञान।
समवसरण के पर्व हुए फिर, हम पूजें भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ समवसरणस्थ केवलज्ञानमण्डित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५५॥

कुन्थुनाथ के समवसरण में, इन्द्र आदि सज्जन।
करें दिव्य पूजा सो हम भी, करें यहीं अर्चन॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ समवसरणस्थ महाजनअर्चित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५६॥

हर द्वारों के बाहर मंगल, द्रव्य नाट्यशाला।
तथा धूपघट नव निधियाँ भी, भजतीं प्रभु माला॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ समवसरणस्थ मंगलद्रव्यादि-वैभवसहित अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५७॥

अरहनाथ का पूरव वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम दुखचक्र तजें॥

ॐ ह्रीं श्री अरनाथ समवसरणस्थ पूर्वदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५८॥

अरहनाथ का दक्षिण वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भवचक्र तजें॥

ॐ ह्रीं श्री अरनाथ समवसरणस्थ दक्षिणदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५९॥

अरहनाथ का पश्चिम वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी भेद तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री अरनाथ समवसरणस्थ पश्चिमदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६०॥

अरहनाथ का उत्तर वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी खेद तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री अरनाथ समवसरणस्थ उत्तरदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६१॥

अरहनाथ के समवसरण की, भूमि चैत्यप्रासाद।
जिनबिम्बों को करके नमोऽस्तु, मिलता आशीर्वाद॥

ॐ ह्रीं श्री अरनाथ समवसरणस्थ चैत्यप्रासादभूमि-सम्बन्धी अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६२॥

बिम्ब खातिका भूमि के भज, समवसरण झलके।
परमानन्द चाहते हम तो, चैन नहीं पल के॥

ॐ ह्रीं श्री अरनाथ समवसरणस्थ खातिकाभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६३॥

अरहनाथ के समवसरण की, लता भूमि सुंदर।
अर्घ्य चढ़ा हम करके नमोऽस्तु, पूजें जिनमंदिर॥

ॐ ह्रीं श्री अरनाथ समवसरणस्थ लताभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६४॥

उपवन भू की चार दिशा में, जिन चैत्यालय हैं।
अर्घ्य चढ़ा हम करके नमोऽस्तु, बोल रहे जय हैं॥

ॐ ह्रीं श्री अरनाथ समवसरणस्थ उपवनभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६५॥

अरहनाथ के दसों तरह से, जो ध्वज भूमि सजीं।
वहाँ विराजित बिम्ब पक्तियाँ, हमने रोज भजीं॥

ॐ ह्रीं श्री अरनाथ समवसरणस्थ ध्वजभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६६॥

प्रभु से बारह गुने बड़े जो, दस विध कल्पतरु।
भजें वहाँ के जिनबिम्बों को, कर लें ध्यान शुरू॥

ॐ ह्रीं श्री अरनाथ समवसरणस्थ कल्पवृक्ष-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६७॥

अरहनाथ की भवन भूमि के, हों जिनभवन महाँ।
जिनको नमोऽस्तु कर हम पूजें, जिनसा कौन यहाँ॥

ॐ ह्रीं श्री अरनाथ समवसरणस्थ भवनभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६८॥

अरहनाथ की श्रीमण्डप भू, श्री जी से सोहें।
जिनश्री पाने करें नमोऽस्तु, यही हमें मोहें॥

ॐ ह्रीं श्री अरनाथ समवसरणस्थ श्रीमण्डपभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६९॥

अरहनाथ की प्रथम पीठ पर, चार दिशा में सुर।
धर्मचक्र धारें सो हम प्रभु, भजें नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं श्री अरनाथ समवसरणस्थ प्रथमपीठोपरि-चतुर्दिक्-धर्मचक्र-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७०॥

दूजी कटनी आठ दिशा में, ध्वज से लहराये।
आठ तरह के सिद्ध गुणों से, हमको मन भाए॥

ॐ ह्रीं श्री अरनाथ समवसरणस्थ द्वितीयपीठोपरि-चतुर्दिक्-अष्टमहाध्वजा-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७१॥

तीजी पीठ उसी पर शोभित, गंधकुटी प्रभु की।
लम्बी-चौड़ी पहले से कम, जहाँ अरह प्रभु जी॥

ॐ ह्रीं श्री अरनाथ समवसरणस्थ तृतीयपीठोपरि-चतुर्दिक्-गंधकुटी-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७२॥

अरहनाथ की दिव्यध्वनि को, हम भी पूज रहे।
द्वादशांग को समझ-समझकर, आतम खोज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री अरनाथ समवसरणस्थ द्वादशांगरूप-दिव्यध्वनिसहित अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७३॥

कुंभार्य हैं मुख्यरूप से, तीस गुरु गणधर।
पचास हजार मुनियों को, हम पूजें सिर धर॥

ॐ ह्रीं श्री अरनाथ समवसरणस्थ त्रिंशत गणधर-पंचाशतसहस्र-मुनिवर-सहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७४॥

बिम्ब वेदियों स्तूपों के, धूलिसाल वाले।
समवसरण में जहाँ-जहाँ जो, भजें भक्ति वाले॥

ॐ ह्रीं श्री अरनाथ समवसरणस्थ सकलजिनबिम्ब अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७५॥

अरहनाथ ने घातिकर्म हर, पाया केवलज्ञान।
समवसरण के पर्व हुए फिर, हम पूजें भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री अरनाथ समवसरणस्थ केवलज्ञानमण्डित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७६॥

अरहनाथ के समवसरण में, इन्द्र आदि सज्जन।
करें दिव्य पूजा सो हम भी, करें यहीं अर्चन॥

ॐ ह्रीं श्री अरनाथ समवसरणस्थ महाजनअर्चित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७७॥

हर द्वारों के बाहर मंगल, द्रव्य नाट्यशाला।
तथा धूपघट नव निधियाँ भी, भजतीं प्रभु माला॥

ॐ ह्रीं श्री अरनाथ समवसरणस्थ मंगलद्रव्यादि-वैभवसहित अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७८॥

मल्लिनाथ का पूरव वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम षट्काल तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ समवसरणस्थ पूर्वदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७९॥

मल्लिनाथ का दक्षिण वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी वेद तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ समवसरणस्थ दक्षिणदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८०॥

मल्लिनाथ का पश्चिम वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी योग तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ समवसरणस्थ पश्चिमदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८१॥

मल्लिनाथ का उत्तर वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी कलंक तजें॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ समवसरणस्थ उत्तरदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८२॥

मल्लिनाथ के समवसरण की, भूमि चैत्यप्रासाद।
जिनबिम्बों को करके नमोऽस्तु, मिलता आशीर्वाद॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ समवसरणस्थ चैत्यप्रासादभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८३॥

बिम्ब खातिका भूमि के भज, समवसरण झलके।
परमानन्द चाहते हम तो, चैन नहीं पल के॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ समवसरणस्थ खातिकाभूमि-सम्बन्धी अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८४॥

मल्लिनाथ के समवसरण की, लता भूमि सुंदर।
अर्घ्य चढ़ा हम करके नमोऽस्तु, पूजें जिनमंदिर॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ समवसरणस्थ लताभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८५॥

उपवन भू की चार दिशा में, जिन चैत्यालय हैं।
अर्घ्य चढ़ा हम करके नमोऽस्तु, बोल रहे जय हैं॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ समवसरणस्थ उपवनभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८६॥

मल्लिनाथ के दसों तरह से, जो ध्वज भूमि सजीं।
वहाँ विराजित बिम्ब पक्तियाँ, हमने रोज भजीं॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ समवसरणस्थ ध्वजभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८७॥

प्रभु से बारह गुने बड़े जो, दस विध कल्पतरु।
भजें वहाँ के जिनबिम्बों को, कर लें ध्यान शुरू॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ समवसरणस्थ कल्पवृक्ष-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८८॥

मल्लिनाथ की भवन भूमि के, हों जिनभवन महाँ।
जिनको नमोऽस्तु कर हम पूजें, जिनसा कौन यहाँ॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ समवसरणस्थ भवनभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८९॥

मल्लिनाथ की श्रीमण्डप भू, श्री जी से सोहें।
जिनश्री पाने करें नमोऽस्तु, यही हमें मोहें॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ समवसरणस्थ श्रीमण्डपभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३९०॥

मल्लिनाथ की प्रथम पीठ पर, चार दिशा में सुर।
धर्मचक्र धारें सो हम प्रभु, भजें नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ समवसरणस्थ प्रथमपीठोपरि-चतुर्दिक्-धर्मचक्र-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३९१॥

दूजी कटनी आठ दिशा में, ध्वज से लहराये।
आठ तरह के सिद्ध गुणों से, हमको मन भाए॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ समवसरणस्थ द्वितीयपीठोपरि-चतुर्दिक्-अष्टमहाध्वजा-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३९२॥

तीजी पीठ उसी पर शोभित, गंधकुटी प्रभु की।
लम्बी-चौड़ी पहले से कम, जहाँ मल्लि प्रभु जी॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ समवसरणस्थ तृतीयपीठोपरि-चतुर्दिक्-गंधकुटी-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३९३॥

मल्लिनाथ की दिव्यध्वनि को, हम भी पूज रहे।
द्वादशांग को समझ-समझकर, आतम खोज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ समवसरणस्थ द्वादशांगरूप-दिव्यध्वनिसहित अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३९४॥

श्री विशाख हैं मुख्यरूप से, अट्ठाईस गणधर।
चालीस हजार मुनियों को, हम पूजें सिर धर॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ समवसरणस्थ अष्टाविंशति गणधर-चत्वारिंशतसहस्र-मुनिवरसहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३९५॥

बिम्ब वेदियों स्तूपों के, धूलिसाल वाले।
समवसरण में जहाँ-जहाँ जो, भजें भक्ति वाले॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ समवसरणस्थ सकलजिनबिम्ब अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३९६॥

मल्लिनाथ ने घातिकर्म हर, पाया केवलज्ञान।
समवसरण के पर्व हुए फिर, हम पूजें भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ समवसरणस्थ केवलज्ञानमण्डित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३९७॥

मल्लिनाथ के समवसरण में, इन्द्र आदि सज्जन।
करें दिव्य पूजा सो हम भी, करें यहीं अर्चन॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ समवसरणस्थ महाजनअर्चित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३९८॥

हर द्वारों के बाहर मंगल, द्रव्य नाट्यशाला।
तथा धूपघट नव निधियाँ भी, भजतीं प्रभु माला॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ समवसरणस्थ मंगलद्रव्यादि-वैभवसहित अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३९९॥

मुनिसुव्रत का पूरव वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम बहिरंग तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत समवसरणस्थ पूर्वदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४००॥

मुनिसुव्रत का दक्षिण वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी अतप तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत समवसरणस्थ दक्षिणदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४०१॥

मुनिसुव्रत का पश्चिम वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी क्लेश तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत समवसरणस्थ पश्चिमदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४०२॥

मुनिसुव्रत का उत्तर वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी शयन तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत समवसरणस्थ उत्तरदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४०३॥

मुनिसुव्रत के समवसरण की, भूमि चैत्यप्रासाद।
जिनबिम्बों को करके नमोऽस्तु, मिलता आशीर्वाद॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत समवसरणस्थ चैत्यप्रासादभूमि-सम्बन्धी अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४०४॥

बिम्ब खातिका भूमि के भज, समवसरण झलके।
परमानन्द चाहते हम तो, चैन नहीं पल के॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत समवसरणस्थ खातिकाभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४०५॥

मुनिसुव्रत के समवसरण की, लता भूमि सुंदर।
अर्घ्य चढ़ा हम करके नमोऽस्तु, पूजें जिनमंदिर॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत समवसरणस्थ लताभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४०६॥

उपवन भू की चार दिशा में, जिन चैत्यालय हैं।
अर्घ्य चढ़ा हम करके नमोऽस्तु, बोल रहे जय हैं॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत समवसरणस्थ उपवनभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४०७॥

मुनिसुव्रत के दसों तरह से, जो ध्वज भूमि सजीं।
वहाँ विराजित बिम्ब पंक्तियाँ, हमने रोज भजीं॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत समवसरणस्थ ध्वजभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४०८॥

प्रभु से बारह गुने बड़े जो, दस विध कल्पतरु।
भजें वहाँ के जिनबिम्बों को, कर लें ध्यान शुरू॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत समवसरणस्थ कल्पवृक्ष-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४०९॥

मुनिसुव्रत की भवन भूमि के, हों जिनभवन महाँ।
जिनको नमोऽस्तु कर हम पूजें, जिनसा कौन यहाँ॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत समवसरणस्थ भवनभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४१०॥

मुनिसुव्रत की श्रीमण्डप भू, श्री जी से सोहें।
जिनश्री पाने करें नमोऽस्तु, यही हमें मोहें॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत समवसरणस्थ श्रीमण्डपभूमि-सम्बन्धी अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४११॥

मुनिसुव्रत की प्रथम पीठ पर, चार दिशा में सुर।
धर्मचक्र धारें सो हम प्रभु, भजें नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत समवसरणस्थ प्रथमपीठोपरि-चतुर्दिक्-धर्मचक्र-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४१२॥

दूजी कटनी आठ दिशा में, ध्वज से लहराये।
आठ तरह के सिद्ध गुणों से, हमको मन भाए॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत समवसरणस्थ द्वितीयपीठोपरि-चतुर्दिक्-अष्टमहा-ध्वजा-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४१३॥

तीजी पीठ उसी पर शोभित, गंधकुटी प्रभु की।
लम्बी-चौड़ी पहले से कम, जहाँ सुव्रत प्रभु जी॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत समवसरणस्थ तृतीयपीठोपरि-चतुर्दिक्-गंधकुटी-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४१४॥

मुनिसुव्रत की दिव्यध्वनि को, हम भी पूज रहे।
द्वादशांग को समझ-समझकर, आतम खोज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत समवसरणस्थ द्वादशांगरूप-दिव्यध्वनिसहित अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४१५॥

मल्लि नाम हैं मुख्यरूप से, अठारह गुरु गणधर।
तीस हजार मुनियों को, हम पूजें सिर धर॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत समवसरणस्थ अष्टादश गणधर-त्रिंशतसहस्र-मुनिवरसहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४१६॥

बिम्ब वेदियों स्तूपों के, धूलिसाल वाले।
समवसरण में जहाँ-जहाँ जो, भजें भक्ति वाले॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत समवसरणस्थ सकलजिनबिम्ब अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४१७॥

मुनिसुव्रत ने घातिकर्म हर, पाया केवलज्ञान।
समवसरण के पर्व हुए फिर, हम पूजें भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत समवसरणस्थ केवलज्ञानमण्डित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४१८॥

मुनिसुव्रत के समवसरण में, इन्द्र आदि सज्जन।
करें दिव्य पूजा सो हम भी, करें यहीं अर्चन॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत समवसरणस्थ महाजनअर्चित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४१९॥

हर द्वारों के बाहर मंगल, द्रव्य नाट्यशाला।
तथा धूपघट नव निधियाँ भी, भजतीं प्रभु माला॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत समवसरणस्थ मंगलद्रव्यादि-वैभवसहित अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४२०॥

नमिनाथ का पूरव वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम दुर्ध्यान तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ समवसरणस्थ पूर्वदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४२१॥

नमिनाथ का दक्षिण वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम दुर्भाग्य तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ समवसरणस्थ दक्षिणदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४२२॥

नमिनाथ का पश्चिम वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी स्वार्थ तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ समवसरणस्थ पश्चिमदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४२३॥

नमिनाथ का उत्तर वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी कलुष तजें॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ समवसरणस्थ उत्तरदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४२४॥

नमिनाथ के समवसरण की, भूमि चैत्यप्रासाद।
जिनबिम्बों को करके नमोऽस्तु, मिलता आशीर्वाद॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ समवसरणस्थ चैत्यप्रासादभूमि-सम्बन्धी अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४२५॥

बिम्ब खातिका भूमि के भज, समवसरण झलके।
परमानन्द चाहते हम तो, चैन नहीं पल के॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ समवसरणस्थ खातिकाभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४२६॥

नमिनाथ के समवसरण की, लता भूमि सुंदर।
अर्घ्य चढ़ा हम करके नमोऽस्तु, पूजें जिनमंदिर॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ समवसरणस्थ लताभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४२७॥

उपवन भू की चार दिशा में, जिन चैत्यालय हैं।
अर्घ्य चढ़ा हम करके नमोऽस्तु, बोल रहे जय हैं॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ समवसरणस्थ उपवनभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४२८॥

नमिनाथ के दसों तरह से, जो ध्वज भूमि सजीं।
वहाँ विराजित बिम्ब पंक्तियाँ, हमने रोज भजीं॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ समवसरणस्थ ध्वजभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४२९॥

प्रभु से बारह गुने बड़े जो, दस विध कल्पतरु।
भजें वहाँ के जिनबिम्बों को, कर लें ध्यान शुरू॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ समवसरणस्थ कल्पवृक्ष-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३०॥

नमिनाथ की भवन भूमि के, हों जिनभवन महाँ।
जिनको नमोऽस्तु कर हम पूजें, जिनसा कौन यहाँ॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ समवसरणस्थ भवनभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३१॥

नमिनाथ की श्रीमण्डप भू, श्री जी से सोहें।
जिनश्री पाने करें नमोऽस्तु, यही हमें मोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ समवसरणस्थ श्रीमण्डपभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३२॥

नमिनाथ की प्रथम पीठ पर, चार दिशा में सुर।
धर्मचक्र धारें सो हम प्रभु, भजें नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ समवसरणस्थ प्रथमपीठोपरि-चतुर्दिक्-धर्मचक्र-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३३॥

दूजी कटनी आठ दिशा में, ध्वज से लहराये।
आठ तरह के सिद्ध गुणों से, हमको मन भाए॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ समवसरणस्थ द्वितीयपीठोपरि-चतुर्दिक्-अष्टमहा-ध्वजा-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३४॥

तीजी पीठ उसी पर शोभित, गंधकुटी प्रभु की।
लम्बी-चौड़ी पहले से कम, जहाँ नमि प्रभु जी॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ समवसरणस्थ तृतीयपीठोपरि-चतुर्दिक्-गंधकुटी-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३५॥

नमिनाथ की दिव्यध्वनि को, हम भी पूज रहे।
द्वादशांग को समझ-समझकर, आतम खोज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ समवसरणस्थ द्वादशांगरूप-दिव्यध्वनिसहित अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३६॥

सुप्रभ नाम हैं मुख्यरूप से, सत्रह गुरु गणधर।
बीस हजार मुनियों को, हम पूजें सिर धर॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ समवसरणस्थ सप्तदश गणधर-विंशतिसहस्त्र-मुनिवर-सहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३७॥

बिम्ब वेदियों स्तूपों के, धूलिसाल वाले।
समवसरण में जहाँ-जहाँ जो, भजें भक्ति वाले॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ समवसरणस्थ सकलजिनबिम्ब अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३८॥

नमिनाथ ने घातिकर्म हर, पाया केवलज्ञान।
समवसरण के पर्व हुए फिर, हम पूजें भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ समवसरणस्थ केवलज्ञानमण्डित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३९॥

नमिनाथ के समवसरण में, इन्द्र आदि सज्जन।
करें दिव्य पूजा सो हम भी, करें यहीं अर्चन॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ समवसरणस्थ महाजनअर्चित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४०॥

हर द्वारों के बाहर मंगल, द्रव्य नाट्यशाला।
तथा धूपघट नव निधियाँ भी, भजतीं प्रभु माला॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ समवसरणस्थ मंगलद्रव्यादि-वैभवसहित अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४१॥

नेमिनाथ का पूरव वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी त्रुटि तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ समवसरणस्थ पूर्वदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४२॥

नेमिनाथ का दक्षिण वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी चौर्य तजें॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ समवसरणस्थ दक्षिणदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४३॥

नेमिनाथ का पश्चिम वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी झूठ तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ समवसरणस्थ पश्चिमदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४४॥

नेमिनाथ का उत्तर वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भी कुशील तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ समवसरणस्थ उत्तरदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४५॥

नेमिनाथ के समवसरण की, भूमि चैत्यप्रासाद।
जिनबिम्बों को करके नमोऽस्तु, मिलता आशीर्वाद॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ समवसरणस्थ चैत्यप्रासादभूमि-सम्बन्धी अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४६॥

बिम्ब खातिका भूमि के भज, समवसरण झलके।
परमानन्द चाहते हम तो, चैन नहीं पल के॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ समवसरणस्थ खातिकाभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४७॥

नेमिनाथ के समवसरण की, लता भूमि सुंदर।
अर्घ्य चढ़ा हम करके नमोऽस्तु, पूजें जिनमंदिर॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ समवसरणस्थ लताभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४८॥

उपवन भू की चार दिशा में, जिन चैत्यालय हैं।
अर्घ्य चढ़ा हम करके नमोऽस्तु, बोल रहे जय हैं॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ समवसरणस्थ उपवनभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४९॥

नेमिनाथ के दसों तरह से, जो ध्वज भूमि सजीं।
वहाँ विराजित बिम्ब पंक्तियाँ, हमने रोज भजीं॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ समवसरणस्थ ध्वजभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५०॥

प्रभु से बारह गुने बड़े जो, दस विध कल्पतरु।
भजें वहाँ के जिनबिम्बों को, कर लें ध्यान शुरू॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ समवसरणस्थ कल्पवृक्ष-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५१॥

नेमिनाथ की भवन भूमि के, हों जिनभवन महाँ।
जिनको नमोऽस्तु कर हम पूजें, जिनसा कौन यहाँ॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ समवसरणस्थ भवनभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५२॥

नेमिनाथ की श्रीमण्डप भू, श्री जी से सोहें।
जिनश्री पाने करें नमोऽस्तु, यही हमें मोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ समवसरणस्थ श्रीमण्डपभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५३॥

नेमिनाथ की प्रथम पीठ पर, चार दिशा में सुर।
धर्मचक्र धारें सो हम प्रभु, भजें नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ समवसरणस्थ प्रथमपीठोपरि-चतुर्दिक्-धर्मचक्र-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५४॥

दूजी कटनी आठ दिशा में, ध्वज से लहराये।
आठ तरह के सिद्ध गुणों से, हमको मन भाए॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ समवसरणस्थ द्वितीयपीठोपरि-चतुर्दिक्-अष्टमहा-ध्वजा-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५५॥

तीजी पीठ उसी पर शोभित, गंधकुटी प्रभु की।
लम्बी-चौड़ी पहले से कम, जहाँ नेमि प्रभु जी॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ समवसरणस्थ तृतीयपीठोपरि-चतुर्दिक्-गंधकुटी-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५६॥

नेमिनाथ की दिव्यध्वनि को, हम भी पूज रहे।
द्वादशांग को समझ-समझकर, आतम खोज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ समवसरणस्थ द्वादशांगरूप-दिव्यध्वनिसहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५७॥

श्री वरदत्त हैं मुख्यरूप से, ग्यारह गुरु गणधर।
अठारह हजार मुनियों को, हम पूजें सिर धर॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ समवसरणस्थ एकादश गणधर-अष्टादशसहस्त्र-मुनिवरसहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५८॥

बिम्ब वेदियों स्तूपों के, धूलिसाल वाले।
समवसरण में जहाँ-जहाँ जो, भजें भक्ति वाले॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ समवसरणस्थ सकलजिनबिम्ब अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५९॥

नेमिनाथ ने घातिकर्म हर, पाया केवलज्ञान।
समवसरण के पर्व हुए फिर, हम पूजें भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ समवसरणस्थ केवलज्ञानमण्डित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६०॥

नेमिनाथ के समवसरण में, इन्द्र आदि सज्जन।
करें दिव्य पूजा सो हम भी, करें यहीं अर्चन॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ समवसरणस्थ महाजनअर्चित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६१॥

हर द्वारों के बाहर मंगल, द्रव्य नाट्यशाला।
तथा धूपघट नव निधियाँ भी, भजतीं प्रभु माला॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ समवसरणस्थ मंगलद्रव्यादि-वैभवसहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६२॥

पार्श्वनाथ का पूरव वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम आक्रोश तजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ समवसरणस्थ पूर्वदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६३॥

पार्श्वनाथ का दक्षिण वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भवविषय तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ समवसरणस्थ दक्षिणदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६४॥

पार्श्वनाथ का पश्चिम वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम दासत्व तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ समवसरणस्थ पश्चिमदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६५॥

पार्श्वनाथ का उत्तर वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भवकूप तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ समवसरणस्थ उत्तरदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६६॥

पार्श्वनाथ के समवसरण की, भूमि चैत्यप्रासाद।
जिनबिम्बों को करके नमोऽस्तु, मिलता आशीर्वाद॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ समवसरणस्थ चैत्यप्रासादभूमि-सम्बन्धी अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६७॥

बिम्ब खातिका भूमि के भज, समवसरण झलके।
परमानन्द चाहते हम तो, चैन नहीं पल के॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ समवसरणस्थ खातिकाभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६८॥

पार्श्वनाथ के समवसरण की, लता भूमि सुंदर।
अर्घ्य चढ़ा हम करके नमोऽस्तु, पूजें जिनमंदिर॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ समवसरणस्थ लताभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६९॥

उपवन भू की चार दिशा में, जिन चैत्यालय हैं।
अर्घ्य चढ़ा हम करके नमोऽस्तु, बोल रहे जय हैं॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ समवसरणस्थ उपवनभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७०॥

पार्श्वनाथ के दसों तरह से, जो ध्वज भूमि सजीं।
वहाँ विराजित बिम्ब पक्तियाँ, हमने रोज भजीं॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ समवसरणस्थ ध्वजभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७१॥

प्रभु से बारह गुने बड़े जो, दस विध कल्पतरु।
भजें वहाँ के जिनबिम्बों को, कर लें ध्यान शुरू॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ समवसरणस्थ कल्पवृक्ष-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७२॥

पार्श्वनाथ की भवन भूमि के, हों जिनभवन महाँ।
जिनको नमोऽस्तु कर हम पूजें, जिनसा कौन यहाँ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ समवसरणस्थ भवनभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७३॥

पार्श्वनाथ की श्रीमण्डप भू, श्री जी से सोहें।
जिनश्री पाने करें नमोऽस्तु, यही हमें मोहें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ समवसरणस्थ श्रीमण्डपभूमि-सम्बन्धी अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७४॥

पार्श्वनाथ की प्रथम पीठ पर, चार दिशा में सुर।
धर्मचक्र धारें सो हम प्रभु, भजें नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ समवसरणस्थ प्रथमपीठोपरि-चतुर्दिक्-धर्मचक्र-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७५॥

दूजी कटनी आठ दिशा में, ध्वज से लहराये।
आठ तरह के सिद्ध गुणों से, हमको मन भाए॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ समवसरणस्थ द्वितीयपीठोपरि-चतुर्दिक्-अष्टमहा-ध्वजा-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७६॥

तीजी पीठ उसी पर शोभित, गंधकुटी प्रभु की।
लम्बी-चौड़ी पहले से कम, जहाँ पार्श्व प्रभु जी॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ समवसरणस्थ तृतीयपीठोपरि-चतुर्दिक्-गंधकुटी-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७७॥

पार्श्वनाथ की दिव्यध्वनि को, हम भी पूज रहे।
द्वादशांग को समझ-समझकर, आतम खोज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ समवसरणस्थ द्वादशांगरूप-दिव्यध्वनिसहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७८॥

स्वयंभू हैं मुख्यरूप से, दस हैं गुरु गणधर।
सोलह हजार जिन मुनियों को, हम पूजें सिर धर॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ समवसरणस्थ दश गणधर-षष्टदशसहस्त्र-मुनिवर-सहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७९॥

बिम्ब वेदियों स्तूपों के, धूलिसाल वाले।
समवसरण में जहाँ-जहाँ जो, भजें भक्ति वाले॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ समवसरणस्थ सकलजिनबिम्ब अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८०॥

पार्श्वनाथ ने घातिकर्म हर, पाया केवलज्ञान।
समवसरण के पर्व हुए फिर, हम पूजें भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ समवसरणस्थ केवलज्ञानमण्डित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८१॥

पार्श्वनाथ के समवसरण में, इन्द्र आदि सज्जन।
करें दिव्य पूजा सो हम भी, करें यहीं अर्चन॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ समवसरणस्थ महाजनअर्चित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८२॥

हर द्वारों के बाहर मंगल, द्रव्य नाट्यशाला।
तथा धूपघट नव निधियाँ भी, भजतीं प्रभु माला॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ समवसरणस्थ मंगलद्रव्यादि-वैभवसहित अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८३॥

महावीर का पूरव वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भवआग तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर समवसरणस्थ पूर्वदिक्‌मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८४॥

महावीर का दक्षिण वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम दुखपक्ष तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर समवसरणस्थ दक्षिणदिक्‌मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८५॥

महावीर का पश्चिम वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम विध्वंस तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर समवसरणस्थ पश्चिमदिक्‌मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८६॥

महावीर का उत्तर वाला, मानस्तम्भ भजें।
हो नमोऽस्तु जिनबिम्ब पूजकर, हम भवलोक तजें ॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर समवसरणस्थ उत्तरदिक्‌मानस्तम्भ चतुर्दिक् अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८७॥

महावीर के समवसरण की, भूमि चैत्यप्रासाद।
जिनबिम्बों को करके नमोऽस्तु, मिलता आशीर्वाद॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर समवसरणस्थ चैत्यप्रासादभूमि-सम्बन्धी अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८८॥

बिम्ब खातिका भूमि के भज, समवसरण झलके।
परमानन्द चाहते हम तो, चैन नहीं पल के॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर समवसरणस्थ खातिकाभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८९॥

महावीर के समवसरण की, लता भूमि सुंदर।
अर्घ्य चढ़ा हम करके नमोऽस्तु, पूजें जिनमंदिर॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर समवसरणस्थ लताभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४९०॥

उपवन भू की चार दिशा में, जिन चैत्यालय हैं।
अर्घ्य चढ़ा हम करके नमोऽस्तु, बोल रहे जय हैं॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर समवसरणस्थ उपवनभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४९१॥

महावीर के दसों तरह से, जो ध्वज भूमि सजीं।
वहाँ विराजित बिम्ब पक्तियाँ, हमने रोज भजीं॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर समवसरणस्थ ध्वजभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४९२॥

प्रभु से बारह गुने बड़े जो, दस विध कल्पतरु।
भजें वहाँ के जिनबिम्बों को, कर लें ध्यान शुरू॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर समवसरणस्थ कल्पवृक्ष-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४९३॥

महावीर की भवन भूमि के, हों जिनभवन महाँ।
जिनको नमोऽस्तु कर हम पूजें, जिनसा कौन यहाँ॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर समवसरणस्थ भवनभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४९४॥

महावीर की श्रीमण्डप भू, श्री जी से सोहें।
जिनश्री पाने करें नमोऽस्तु, यही हमें मोहें॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर समवसरणस्थ श्रीमण्डपभूमि-सम्बन्धी अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४९५॥

महावीर की प्रथम पीठ पर, चार दिशा में सुर।
धर्मचक्र धारें सो हम प्रभु, भजें नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर समवसरणस्थ प्रथमपीठोपरि-चतुर्दिक्-धर्मचक्र-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४९६॥

दूजी कटनी आठ दिशा में, ध्वज से लहराये।
आठ तरह के सिद्ध गुणों से, हमको मन भाए॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर समवसरणस्थ द्वितीयपीठोपरि-चतुर्दिक्-अष्टमहा-ध्वजा-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४९७॥

तीजी पीठ उसी पर शोभित, गंधकुटी प्रभु की।
लम्बी-चौड़ी पहले से कम, जहाँ वीर प्रभु जी॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर समवसरणस्थ तृतीयपीठोपरि-चतुर्दिक्-गंधकुटी-विभूषित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४९८॥

महावीर की दिव्यध्वनि को, हम भी पूज रहे।
द्वादशांग को समझ-समझकर, आतम खोज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर समवसरणस्थ द्वादशांगरूप-दिव्यध्वनिसहित अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४९९॥

गौतम गुरु हैं मुख्यरूप से, ग्यारह गुरु गणधर।
चौदह हजार मुनियों को, हम पूजें सिर धर॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर समवसरणस्थ एकादश गणधर-चतुर्दशसहस्र-मुनिवर-सहित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५००॥

बिम्ब वेदियों स्तूपों के, धूलिसाल वाले।
समवसरण में जहाँ-जहाँ जो, भजें भक्ति वाले॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर समवसरणस्थ सकलजिनबिम्ब अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५०१॥

महावीर ने घातिकर्म हर, पाया केवलज्ञान।
समवसरण के पर्व हुए फिर, हम पूजें भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर समवसरणस्थ केवलज्ञानमण्डित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५०२॥

महावीर के समवसरण में, इन्द्र आदि सज्जन।
करें दिव्य पूजा सो हम भी, करें यहीं अर्चन॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर समवसरणस्थ महाजनअर्चित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५०३॥

हर द्वारों के बाहर मंगल, द्रव्य नाट्यशाला।
तथा धूपघट नव निधियाँ भी, भजतीं प्रभु माला॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर समवसरणस्थ मंगलद्रव्यादि-वैभवसहित अरिहन्त-चक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५०४॥

(दोहा)

प्रभु सेवा में चँवर हों, मंगल-मंगल द्रव्य।
जीवन के उत्थान को, करते नमोऽस्तु भव्य॥

ॐ ह्रीं श्री मंगलद्रव्य-चँवर-सुशोभित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५०५॥

प्रभु सेवा में छत्र हों, मंगल-मंगल द्रव्य।
छत्र छाँव की प्रीति को, करते नमोऽस्तु भव्य॥

ॐ ह्रीं श्री मंगलद्रव्य-छत्र-सुशोभित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५०६॥

झारी हो प्रभु चरण में, मंगल-मंगल द्रव्य।
धारा निज की शान्ति को, करते नमोऽस्तु भव्य॥

ॐ ह्रीं श्री मंगलद्रव्य-झारी-सुशोभित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५०७॥

दर्पण निज अर्पण करे, मंगल-मंगल द्रव्य।
आतम के शृंगार को, करते नमोऽस्तु भव्य॥

ॐ ह्रीं श्री मंगलद्रव्य-दर्पण-सुशोभित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५०८॥

प्रभु सेवा में कलश हों, मंगल-मंगल द्रव्य।
समयसार के कलश को, करते नमोऽस्तु भव्य॥

ॐ ह्रीं श्री मंगलद्रव्य-कलश-सुशोभित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५०९॥

प्रभु सेवा में बीजना, मंगल-मंगल द्रव्य।
सम्यक् की पाने हवा, करते नमोऽस्तु भव्य॥

ॐ ह्रीं श्री मंगलद्रव्य-बीजना-सुशोभित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५१०॥

सुप्रतिष्ठ प्रभु चरण में, मंगल-मंगल द्रव्य।
निजी प्रतिष्ठा प्राप्ति को, करते नमोऽस्तु भव्य॥

ॐ ह्रीं श्री मंगलद्रव्य-सुप्रतिष्ठ-सुशोभित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५११॥

ध्वजा उड़े प्रभु की शरण, मंगल-मंगल द्रव्य।
ध्वजा उड़ाने धर्म की, करते नमोऽस्तु भव्य॥

ॐ ह्रीं श्री मंगलद्रव्य-ध्वजा-सुशोभित अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५१२॥

पूर्णार्घ्य

(शुद्ध गीता)

अगर हम भक्त बन जाएँ, तो भगवन बस तुम्हीं बनना।
अगर हम ग्रन्थ बन जाएँ, तो गाथा बस तुम्हीं बनना॥
हमारे आप हो स्वामी, यही ऊर्जा भरे रहना।
अगर हम देह बन जाएँ, तो धड़कन बस तुम्हीं बनना॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं द्वादशाधिक-पंचशतगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये पूर्णार्घ्यं...।

(जाप्य मंत्र)

ॐ ह्रीं श्री अरिहन्तचक्रेभ्यो नमः। अथवा
ॐ ह्रीं णमो अरिहन्ताणं। अथवा **ॐ ह्रीं अर्हं नमः।**

जयमाला

(दोहा)

समवसरण वैभव रहा, अतिशय उपमातीत।
कमल तुल्य प्रभु को करें, नमोऽस्तु हम अगणीत ॥

(ज्ञानोदय)

पुण्यफला अरिहन्ता प्रभु जी, तीर्थंकर के रूप हुए।
समवसरण में हुए विराजित, चित चैतन्य स्वरूप हुए॥
समवसरण की सभा सजी तो, भक्त खचाखच भर बैठे।
चित विलास के दर्शन करने, प्रभु चरणों में जा लेटे॥१॥
पाप नशाने पुण्य कमाने, अरिहन्तो के गुण गाएँ।
निज अरिहन्त अवस्था पाने, करें भावना हर्षाएँ॥
समवसरण विस्तार वाँचकर, करें भेद-विज्ञान अहा।
ऋषभ प्रभु का बारह योजन, क्रमिक वीर का एक कहा॥२॥
बीस हजार सीढ़ियाँ चढ़कर, धूलिसाल परिकोट पड़े।
चार दिशा से मुख्य द्वार के, अन्दर मानस्तम्भ खड़े॥
अष्ट भूमि की गली चली फिर भलीं, भलीं चहुँओर चलीं।
शिला बावरी कोट वेदियाँ, नृत्यशाल रचना रच लीं॥३॥
प्रथम चैत्य प्रासाद भूमि है, दूजी खातिका भूमि है।
पुष्प वाटिका भूमि तीसरी, चौथी उपवन भूमि है॥
ध्वजा भूमि पंचम भूमि है, कल्पवृक्ष छठवीं भूमि।
सप्तम भूमि मंदिर भूमि, अष्टम भूमि सभा भूमि॥४॥
अष्टम भूमि सभा भूमि में, बारह सभा खचाखच हैं।
वहीं केंद्र में गन्ध कुटी में, सिंहासन कमलासन हैं॥
परम पूज्य अरिहन्त जिनेश्वर, वही गगन में शोभित हैं।
गणधर मुनि नर इन्द्र सभा से, जगत श्रेष्ठ प्रभु पूजित हैं॥ ५॥
जन्म-जन्म के बैरी शत्रु, समवसरण में मित्र हुए।
भव्य जीव प्रभु शरण प्राप्त कर, आतम सुखी पवित्र हुए॥

श्री अरिहन्त चक्र विधान कर, साक्षात् समवसरण पाएँ।
'मुनिसुव्रत' अरिहन्त रूप हो, विश्व प्रेम सुख झलकाएँ॥६॥

(सोरठा)

समवसरण को पाएँ, चौबीसों अरिहन्त के।
कर नमोस्तु गुण गाएँ, बने स्वयं भगवंत से॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं द्वादशाधिक-पंचशतगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

अरिहन्तचक्र स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, अरिहन्तचक्र जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

अष्टम पूजन

स्थापना (शंभू)

अरिहन्त प्रभु! अरिहन्त प्रभु!, हो समवसरण आसीन तुम्हीं।
हे! वीतराग सर्वज्ञ प्रभु, हितकारी कमलासीन तुम्हीं॥
सो मुक्तिवधू आमंत्रण दे, पर हम तो पूजा रचा रहे।
दुख दर्द हरो सुख शान्ति करो, हम नमोऽस्तु कर सिर झुका रहे॥

(दोहा)

सहस्रनाम अरिहन्त के, पूजें चक्री इन्द्र।
नमोऽस्तु कर हम भी भजें, श्री तीर्थेश जिनेन्द्र॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं चतुर्विंशत्यधिकसहस्त्रगुणी श्रीअरिहन्तचक्र! अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(जोगीरासा)

जग में अपने नाम करोड़ों, फिर भी काम न आवें।
कभी हसावें कभी रुलावें, कभी-कभी तड़पावें॥
लेकिन प्रभु के एक नाम बस, भव से पार लगाएँ।
सहस्रनाम को करके नमोऽस्तु, सादर नीर चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं चतुर्विंशत्यधिकसहस्त्रगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

जग में नाम कमाया जिसने, आखिर वो भी रोये।
लगा नाम में दाग अगर तुम, घुट-घुट कर सब खोये॥
जिसने प्रभु के नाम पुकारे, आत्म शान्ति वो पाएँ।
सहस्रनाम को करके नमोऽस्तु, चंदन चरण चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं चतुर्विंशत्यधिकसहस्त्रगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

अपना नाम अमर करने को, कितने नाम मिटाए।
फिर भी अपने नाम मिट गए, अमर नहीं हो पाए॥
लेकिन प्रभु के नाम रटें जो, वे अक्षय बन जाएँ।
सहस्रनाम को करके नमोऽस्तु, अक्षत पुंज चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं चतुर्विंशत्यधिकसहस्रगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

नाम मिले तो खिले पुष्प सम, बदनामी में सूखे।
काँटों जैसे सूख-सूख के, जन्म हो गए रूखे॥
प्रभु नामों के पुष्प खिला के, चेतन बाग सजाएँ।
सहस्रनाम को करके नमोऽस्तु, सादर पुष्प चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं चतुर्विंशत्यधिकसहस्रगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

अरे! नाम के खातिर हमने, क्या-क्या पाप कमाए।
फिर भी पेट न भरे नाम से, नाम काम ना आए॥
लेकिन प्रभु के नाम अकेले, सारे रोग नशाएँ।
सहस्रनाम को करके नमोऽस्तु, हम नैवेद्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं चतुर्विंशत्यधिकसहस्रगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

प्रभु के नाम बिना इस जग में, चारों ओर अँधेरा।
भटक रहे हैं जिसमें प्राणी, जिन्हें दुखों ने घेरा॥
प्रभु नामों की ज्योति जला के, मिथ्या अन्ध मिटाएँ।
सहस्रनाम को करके नमोऽस्तु, हम तो दीप जलाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं चतुर्विंशत्यधिकसहस्रगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

बद अच्छा बदनाम बुरा फिर, जग क्यों रूप सजाए।
कर्मों का क्यों भरे पिटारा, अपने धर्म लजाए॥
प्रभु के नाम कर्म सब हर लें, आतम रूप सजाएँ।
सहस्रनाम को करके नमोऽस्तु, हम तो धूप चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं चतुर्विंशत्यधिकसहस्रगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

काम करो ऐसे जग में कि, स्वयं नाम हो जाए।
नाम कमाओ ऐसा जिससे, स्वयं काम हो जाए॥
प्रभु के नाम जाप की माला, हमको सफल बनाए।
सहस्रनाम को करके नमोऽस्तु, श्री फल रोज चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं चतुर्विंशत्यधिकसहस्रगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

इस दुनियाँ में प्रभु से बढ़कर, प्रभु के नाम सहारे।
उसका होगा बाल न बाँका, जो प्रभु नाम पुकारे॥
प्रभु के नाम न छूटें चाहे, प्राण निकलते जाएं।
सहस्रनाम को करके नमोऽस्तु, सादर अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं चतुर्विंशत्यधिकसहस्रगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अर्घ्यावली (दोहा)

अंतरंग बहिरंग की, लक्ष्मी से धनवान
प्रथम नाम श्रीमान को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री श्रीमान-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१॥

बिन गुरु के उपदेश के, कर लेते कल्याण।
पूज्य स्वयंभू नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री स्वयंभू-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२॥

धर्म रूप जिन ऋषभ है, दे धर्मामृत दान।
पूज्य वृषभ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३॥

स्वर्ग मोक्ष सुख जो भरे, आतम सुख दे दान।
शम्भव सब सम्भव करें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री शम्भव-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४॥

इन्द्रिय सुख से दूर हो, करे आत्म रसपान।
अतीन्द्रियशंभू नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अतीन्द्रियशंभू-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५॥

किए आत्म पुरुषार्थ जो, पाए आतमज्ञान।
पूज्य आत्मभू नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री आत्मभू-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६॥

कोटि सूर्य से तेज है, जिनका केवलज्ञान।
पूज्य स्वयंप्रभ नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री स्वयंप्रभ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७॥

जग की प्रभुता प्राप्त कर, पूज्य हुए भगवान।
सार्थक प्रभु जिन नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री प्रभु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८॥

पर भावों को त्याग कर, किया आत्म का ध्यान।
निज भोक्ता प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री भोक्ता-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९॥

तीन लोक त्रय काल में, व्यापक जिनका ज्ञान।
पूज्य विश्व भू नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वभू-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०॥

पुनर्जन्म जो ले नहीं, करके जन्म महान।
अपुनर्भव प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अपुनर्भव-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११॥

विश्वरूप आतम किए, कर आतम सम्मान।
विश्वात्मा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वात्मा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२॥

विश्व लोक के ईश हैं, विश्व तत्त्व दे दान।
पूज्य विश्व लोकेश को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वलोकेश-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३॥

केवलदर्शन चक्षु से, देखे सकल जहान।
पूज्य विश्वतश्चक्षु को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वतश्चक्षु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४॥

जिनका कभी न नाश हो, क्षरण रहित भगवान।
प्रभु के अक्षर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अक्षर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५॥

छह द्रव्यों के विश्व को, जाने जिनका ज्ञान।
पूज्य विश्ववित् नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विश्ववित्-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६॥

हर विद्या के ईश है, गणधर के भगवान।
पूज्य विश्वविद्येश को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वविद्येश-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७॥

उपदेशक हर वस्तु के,उत्पत्ति के स्थान।
विश्वयोनि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वयोनि-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८॥

अविनश्वर निज रूप है, स्वरूप का न हान।
पूज्य अनश्वर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अनश्वर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९॥

लोकालोक निहार के, हुए स्वस्थ भगवान।
पूज्य विश्वदृश्वा जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वदृश्वा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०॥

विश्व व्याप्त हैं केवली, जग तारे धनवान।
परमपूज्य विभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विभु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१॥

चउ गतियों को तार के, देते मोक्ष स्थान।
प्रभु के धाता नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री धाता-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२॥

सकल चराचर विश्व के, जो स्वामी भगवान।
परम पूज्य विश्वेश को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वेश-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३॥

सबको सुख की राह दें, जो हैं नेत्र समान।
पूज्य विश्वलोचन जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वलोचन-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४॥

कण-कण में जो व्याप्त हैं, पाकर केवलज्ञान।
विश्वव्यापी प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वव्यापी-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५॥

मोह कर्म हर कर उगा, सूरज केवलज्ञान।
जिनवर के विधि नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विधि-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६॥

धर्म मंत्र जग को दिया, मोक्षमार्ग दे दान।
प्रभु के वेधा नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री वेधा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७॥

विद्यमान रहते सदा, क्षण भंगुर ना जान।
प्रभु के शाश्वत नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री शाश्वत-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८॥

चतुर्मुखी के दर्श से, होते नीर समान।
पूज्य विश्वतोमुख जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वतोमुख-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९॥

दुखद कर्म हरने दिया, षट्कर्मों का ज्ञान।
पूज्य विश्वकर्मा जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वकर्मा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३०॥

जग में सबसे श्रेष्ठ हैं, अरिहन्ता भगवान।
जगज्येष्ठ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री जगज्येष्ठ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३१॥

अनन्त गुण मय आप हैं, जग में पूज्य महान।
विश्वमूर्ति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वमूर्ति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२॥

कर्मजयी इन्द्रीजयी, भक्तों के भगवान।
पूज्य जिनेश्वर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री जिनेश्वर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३॥

सकल विश्व प्रभु देखते, फिर भी निज का ध्यान।
पूज्य विश्वदृक नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वदृक-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४॥

जग जन के ईश्वर तुम्हीं, लक्ष्मी के स्थान।
पूज्य विश्वभूतेश को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वभूतेश-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५॥

करो प्रकाशित विश्व को, पाकर सम्यग्ज्ञान।
विश्वज्योति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वज्योति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६॥

कौन आपका ईश है, तुम सबके भगवान।
पूज्य अनीश्वर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अनीश्वर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७॥

कर्म शत्रु को जीत के, इन्द्री लगा लगाम।
परम पूज्य जिन नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री जिन-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८॥

कर्म शत्रु को जीतना, जिनको है आसान।
पूज्य जिष्णु जिन नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री जिष्णु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३९॥

जिनकी गणना कठिन है, अनन्त जिन का ज्ञान।
पूज्य अमेयात्मा जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अमेयात्मा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४०॥

जो धरती के देवता, पृथ्वी के भगवान।
विश्वरीश प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वरीश-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४१॥

तीन लोक के नाथ हो, भक्तों के श्रद्धान।
पूज्य जगत्पति नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री जगत्पति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४२॥

अनन्त भव को जीतके, चले मोक्ष के धाम।
अनन्तजित प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तजित-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३॥

प्रभु का चिंतन कर सके, यहाँ कौन बलवान।
पूज्य अचिंत्यात्मा जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अचिंत्यात्मा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४॥

भव्यों का उपकार तुम, करते आत्म समान।
भव्यबन्धु प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री भव्यबन्धु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५॥

बंधन में बँधते नहीं, बंधन से अनजान।
पूज्य अबंधन नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अबन्धन-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६॥

शुभ युग युग प्रारंभ में, जन्म लिए भगवान।
युगादिपुरुष प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री युगादिपुरुष-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७॥

ब्रह्म तत्त्व विकसित हुए, जब प्रकटा निज ज्ञान।
पूज्य ब्रह्म प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री ब्रह्म-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८॥

परमेष्ठी के रूप हो, पाकर पंचम ज्ञान।
पंच-ब्रह्ममय नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री पंचब्रह्ममय-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४९॥

रहते परमानन्द में, करते जग कल्याण।
परम पूज्य शिव नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री शिव-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५०॥

अपने आश्रित जीव को, पहुँचाते शिव धाम।
परम पूज्य पर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री पर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५१॥

उपदेशक प्रभु धर्म के, सबसे श्रेष्ठ महान।
प्रभु के परतर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री परतर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५२॥

जान सके न इन्द्रियाँ, जाने केवलज्ञान।
पूज्य सूक्ष्म प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सूक्ष्म-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५३॥

इन्द्राधिक से पूज्य हो, स्थित परम स्थान।
परमेष्ठी प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री परमेष्ठी-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५४॥

तीनों कालों में रहो, जिनवर विराजमान।
पूज्य सनातन नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सनातन-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५५॥

स्वयं प्रकाशित आप है, जग में सूर्य समान।
स्वयंज्योति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री स्वयंज्योति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५६॥

जग में न उत्पन्न हो, जन्म रहित भगवान।
परम पूज्य अज नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अज-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५७॥

कभी देह न धारते, न हो गर्भाधान।
पूज्य अजन्मा नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अजन्मा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५८॥

ब्रह्म रूप परमात्मा, रत्नत्रय के खान।
ब्रह्मयोनि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मयोनि-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५९॥
चौरासी लख योनियाँ, तज पाए निर्वाण।
पूज्य अयोनिज नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अयोनिज-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६०॥
मोह कर्म रिपु जय किए, हम सबके श्रद्धान।
मोहारि विजयी जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री मोहारिविजयी-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६१॥
रहन सहन सबसे भला, जग करता सम्मान।
प्रभु के जेता नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जेता-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६२॥
प्रभु पथ में आगे चलें, जो दें धार्मिक ज्ञान।
पूज्य धर्मचक्री जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मचक्री-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६३॥
दया ध्वजा फहरा रहे, दयालु दया निधान।
पूज्य दयाध्वज नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री दयाध्वज-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६४॥
कर्म शत्रु को शान्त कर, करे चिदातम ध्यान।
प्रशान्तारि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्रशान्तारि-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६५॥
अनन्त गुणों को धारते, नष्ट न हों भगवान।
पूज्य अनन्तात्मा जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अनन्तात्मा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६६॥

सकल योग का निरोध कर, योगी बने महान।
प्रभु के योगी नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री योगी-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६७॥

गणधर आदिक आप को, पूजा कर श्रद्धान।
योगिश्वार्चित नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री योगिश्वार्चित-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६८॥

अपने ब्रह्म स्वरूप का, पाया सम्यग्ज्ञान।
पूज्य ब्रह्मवित् नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मवित्-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६९॥

कामदेव हर पा लिया, आत्मब्रह्म परिज्ञान।
पूज्य ब्रह्मतत्त्वज्ञ को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मतत्त्वज्ञ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७०॥

ब्रह्मतत्त्व को जानकर, निज विद्या पहचान।
ब्रह्मोद्यावित नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मोद्यावित-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७१॥

यतियों के यतिराज हैं, रत्नत्रय भगवान।
पूज्य यतीश्वर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री यतीश्वर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७२॥

सकल कषायों से रहित, किया आत्म सम्मान।
पूज्य शुद्ध प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्ध-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७३॥

सकल चराचर जानते, फिर भी निज का ध्यान।
पूज्य बुद्ध प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री बुद्ध-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७४॥

निज स्वरूप को जानकर, जानो सकल जहान।
प्रबुद्धात्मा नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्रबुद्धात्मा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७५॥

उपदेशक पुरुषार्थ के, सिद्ध अर्थ के धाम।
परम पूज्य सिद्धार्थ को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥॥
ॐ ह्रीं श्री सिद्धार्थ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७६॥

जिनमत पूर्ण प्रसिद्ध है, जिससे सब हैरान।
पूज्य सिद्धशासन जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥॥
ॐ ह्रीं श्री सिद्धशासन-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७७॥

अष्ट कर्म को नष्ट कर, बने सिद्ध भगवान।
पूज्य सिद्ध प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सिद्ध-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७८॥

निज ध्यानी हो पा गए, द्वादशांग का ज्ञान।
सिद्धांतवित् प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥॥
ॐ ह्रीं श्री सिद्धांतवित्-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७९॥

योगी के योगीश हो, लक्ष्य प्रयोजन ज्ञान।
पूज्य ध्येय प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥॥
ॐ ह्रीं श्री ध्येय-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८०॥

मुनियों के आराध्य हो, देवों के भगवान।
सिद्धसाध्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सिद्धसाध्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८१॥

आप जगत का हित करो, हम पर भी दो ध्यान।
पूज्य जगद्हित नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जगद्हित-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८२॥

सहनशील प्रभु आप हो, समता के भगवान।
सहिष्णु प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सहिष्णु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८३॥

निज स्वरूप से च्युत नहीं, होते हैं भगवान।
अच्युत प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अच्युत-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८४॥

गिन न सकें न अंत हों, अनन्त गुण की खान।
अनन्त प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्त-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८५॥

अनन्त प्रभाव है आपका, हो अनन्त बलवान।
प्रभविष्णु प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री प्रभविष्णु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८६॥

जन्म मरण की हर क्रिया, सार्थक जन्म महान।
भवोद्भव प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री भवोद्भव-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८७॥

स्वाभाविक परिणत हुए, इन्द्रों के भगवान।
प्रभूष्णु प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री प्रभुष्णु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८८॥

अर्धमृतक सम वृद्धपन, दूर किए भगवान।
अजर अमर प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अजर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८९॥

जीर्ण नहीं जर-जर नहीं, पूर्ण तरुण भगवान।
अजर्य प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अजर्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९०॥

कोटि सूर्य व चन्द्र से, ज्यादा प्रकाशमान।
भ्राजिष्णु प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री भ्राजिष्णु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९१॥

पूर्ण ज्ञान के ईश हो, सबसे बुद्धिमान।
धीश्वर प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री धीश्वर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९२॥

अधिक नहीं कम भी नहीं, उचित-उचित परिमाण।
अव्यय प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अव्यय-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९३॥

धर्मामृत वर्षा रहे, विभाव है हैरान।
पूज्य विभावसु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विभावसु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९४॥

जग में जन्म न ले सको, पाई नई पहचान।
असंभूष्णु प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री असंभूष्णु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९५॥

स्वयं प्रकाशित हो रहे, स्वयं प्रकट भगवान।
स्वयंभूष्णु प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री स्वयंभूष्णु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९६॥

अनादिकाल से सिद्ध हैं, रखें हमारा ध्यान।
पूज्य पुरातन नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री पुरातन-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९७॥

परम-परम उत्कृष्ट हो, परमेष्ठी के नाम।
परमात्मा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री परमात्मा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९८॥

मोक्षमार्ग दर्शा रहे, भक्तों को लें थाम।
परमज्योति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री परमज्योति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९९॥

त्रय जग में उत्कृष्ट हैं, त्रय जग के भगवान।
त्रिजगत् परमेश्वर जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिजगत्परमेश्वर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१००॥

दिव्य ध्वनि के नाथ हो, धर्मरत्न दो दान।
दिव्यभाषापति नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री दिव्यभाषापति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०१॥

अतिशय सुन्दर आप हो, पूज्य मनोहर धाम।
पूज्य दिव्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री दिव्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०२॥

जिनवाणी निर्दोष है, हरे सभी संग्राम।
पूतवाक् प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री पूतवाक्-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०३॥

जिनमत अति पावन रहा, भक्त करो भगवान।
पूज्य पूतशासन जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री पूतशासन-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०४॥

करते जगत पवित्र हो, हो पवित्र भगवान।
पूतात्मा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री पूतात्मा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०५॥

उज्ज्वल सर्वोत्कृष्ट हो, पाकर केवलज्ञान।
परमज्योति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री परमज्योति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०६॥

अधिकारी हो धर्म के, देते धार्मिक ज्ञान।
धर्माध्यक्ष प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री धर्माध्यक्ष-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०७॥

इन्द्रियों का करके दमन, ईश्वर हुए महान।
पूज्य दमीश्वर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री दमीश्वर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०८॥

जड़-चेतन में उच्च हो, मोक्ष लक्ष्मी धाम।
श्रीपति प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री श्रीपति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०९॥

आप महाज्ञानी रहे, ज्ञानवान धनवान।
परम पूज्य भगवान् को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री भगवान्-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११०॥

परमपूज्य हो जगत में, जगत करे सम्मान।
अर्हन् प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अर्हन्-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१११॥

कर्मों की रज हर चुके, कर्मजयी भगवान।
अरजा प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अरजा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११२॥

हरो कर्ममल भव्य के, पाप रहित भगवान।
विरजा प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विरजा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११३॥

ब्रह्मचर्य पालन करो, निर्मल हो गुणवान।
परमपूज्य शुचि नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री शुचि-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११४॥

धर्म तीर्थ कर्त्ता! तुम्हीं, द्वादशांग के स्थान।
पूज्य तीर्थकृत नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थकृत-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११५॥

नाथ! आप में शोभते, दर्शन केवलज्ञान।
पूज्य केवली नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री केवली-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११६॥

अनन्त बल संपन्न हो, सबसे शक्तिमान।
ईशान प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री ईशान-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११७॥

पूजा के हो योग्य तुम, श्रद्धा के श्रद्धान।
प्रभु के पूजार्ह नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री पूजार्ह-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११८॥

घातिकर्म नाशक तुम्हीं, पाकर पूरण ज्ञान।
स्नातक प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री स्नातक-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११९॥

धातु और उपधातु के, मल का करके हान।
पूज्य अमल प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अमल-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२०॥

अनन्त केवलज्ञान से, होते कान्तिमान।
अनन्तदीप्ति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तदीप्ति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२१॥

ज्ञान स्वरूपी आप हो, ज्ञान-ज्ञान बस ज्ञान।
ज्ञानात्मा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानात्मा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२२॥

मोक्षमार्ग में चल पड़े, पाकर बिन गुरु ज्ञान।
स्वयंबुद्ध प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री स्वयंबुद्ध-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२३॥

त्रय जग के स्वामी रहे, जग पालक भगवान।
पूज्य प्रजापति नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री प्रजापति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२४॥

मुक्त रहे संसार से, कर्मों से अनजान।
पूज्य मुक्त प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री मुक्त-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२५॥

जग में आप समर्थ हो, अनन्त शक्तिमान।
पूज्य शक्त प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री शक्त-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२६॥

आप रहे बाधा रहित, दुख से रहित महान।
निराबाध प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री निराबाध-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२७॥

देह सहित दुनियाँ रही, देह रहित भगवान।
निष्कल प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री निष्कल-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२८॥

तीन भुवन के ईश हो, करो भक्त कल्याण।
भुवनेश्वर प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री भुवनेश्वर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२९॥

कर्मकालिमा हर चुके, चमक उठे भगवान।
पूज्य निरंजन नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री निरंजन-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३०॥

जगत प्रकाशित कर रहे, मोक्षमार्ग दे ज्ञान।
जगज्ज्योति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री जगज्ज्योति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३१॥

जिनका नहीं विरोध हो, जिनके वचन प्रमाण।
निरुक्तोक्ति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री निरुक्तोक्ति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३२॥

रोग पसीना से रहित, रोग हरें भगवान।
पूज्य अनामय नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अनामय-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३३॥

आप अचल रहते सदा, गए अचल स्थान।
अचलस्थिति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अचलस्थिति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३४॥

शान्ति भंग कितनी हुई, किन्तु क्षोभ ना जान।
अक्षोभ्य प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अक्षोभ्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३५॥

नित्य रहो जग के शिखर, पर हो विराजमान।
कूटस्थ प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री कूटस्थ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३६॥

गमनागमन विमुक्त हो, निज में मग्न महान।
स्थाणु प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री स्थाणु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३७॥

कभी नहीं क्षय हो सके, रहते एक समान।
अक्षय प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अक्षय-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३८॥

तीन लोक में मुख्य हो, हरते सब अपमान।
पूज्य अग्रणी नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अग्रणी-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३९॥

महा मोक्षपद पा लिया, करके जग कल्याण।
पूज्य ग्रामणी नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री ग्रामणी-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४०॥

जगत चलाते धर्म को, देकर शिक्षा ज्ञान।
नेता प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री नेता-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४१॥

आप स्वयं निर्ग्रन्थ हो, रचो ग्रन्थ का ज्ञान।
पूज्य प्रणेता नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्रणेता-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४२॥

प्रमाण नय के रूप के, वक्ता देते ज्ञान।
न्यायशास्त्रकृत नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री न्यायशास्त्रकृत-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४३॥

हितोपदेशी आप हो, रखते सबका ध्यान।
शास्ता प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री शास्ता-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४४॥

रत्नत्रय की नाव हो, दस धर्मों के यान।
पूज्य धर्मपति नाम को हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मपति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४५॥

धर्मस्वरूपी आप हो, अधर्म है हैरान।
पूज्य धर्म्य प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री धर्म्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४६॥

धर्मवृद्धि के फल तुम्हीं, हो धार्मिक सोपान।
धर्मात्मा प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मात्मा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४७॥

धर्म प्रवर्तक तीर्थ हो, पार करो भवि-यान।
धर्मतीर्थकृत नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मतीर्थकृत-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४८॥

धर्मध्वजा फहरा रहे, धर्म चिह्न के नाम।
वृषध्वज प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री वृषध्वज-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४९॥

नाथ अहिंसा धर्म के, तुम हो दया निधान।
वृषाधीश प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री वृषाधीश-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५०॥

प्रसिद्ध करके धर्म की, अलग किए पहचान।
वृषकेतु प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री वृषकेतु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५१॥

कर्म शत्रु को नाशने, धारा धर्म कृपाण।
पूज्य वृषायुध नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री वृषायुध-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५२॥

धर्म वृष्टि से हर लिया, दुख का रेगिस्तान।
परम पूज्य वृष नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री वृष-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५३॥

नायक हो तुम धर्म के, करो पाप का हान।
वृषपति प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री वृषपति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५४॥

हम सबके स्वामी रहे, भक्तों के भगवान।
भर्ता प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री भर्ता-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५५॥
वृषभ चिह्न से शोभते, हम सबकी पहचान।
परम पूज्य वृषभाक् को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री वृषभाक् -अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५६॥
वृषभ स्वप्न माँ को दिया, फिर जन्मे भगवान।
वृषोद्भव प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री वृषोद्भव-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५७॥
नाभिराय के पुत्र हो, नाभि स्वर्ण समान।
हिरण्यनाभि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री हिरण्यनाभि-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५८॥
जग में आप यथार्थ हो, अविनाशी शिवधाम।
भूतात्मा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री भूतात्मा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५९॥
जीवों की रक्षा करो, करते हो कल्याण।
पूज्य भूतभृत नाम को हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री भूतभृत-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६०॥
श्रेष्ठ भावना रूप हो, मंगलमय भगवान।
पूज्य भूतभावन जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री भूतभावन-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६२॥
प्रशंसनीय प्रभु जन्म है, कुलदीपक भगवान।
पूज्य प्रभव प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्रभव-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६२॥

आप रहित संसार हो, निज के वैभववान।
पूज्य विभव प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विभव-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६३॥
स्वामी केवलज्ञान से, होते प्रकाशमान।
भास्वान प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री भास्वान-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६४॥
समय-समय में आप में, हो उत्पाद् महान।
परम पूज्य भव नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री भव-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६५॥
आत्म भाव में लीन हो, किन्तु नहीं नादान।
पूज्य भाव प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री भाव-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६६॥
भ्रमण तजा संसार का, पाया मोक्ष महान।
पूज्य भवांतक नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री भवांतक-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६७॥
गर्भ वास के समय में, वर्षा स्वर्ण समान।
हिरण्यगर्भ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री हिरण्यगर्भ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६८॥
गर्भ समय में माँ हुई, लक्ष्मी शोभामान।
परम पूज्य श्रीगर्भ को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री श्रीगर्भ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६९॥
अनन्त विभूति आप की, जिससे हो धनवान।
प्रभूतविभव प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्रभूतविभव-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७०॥

जन्म रहित प्रभु आप हो, भव से हो अनजान।
पूज्य अभवप्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अभव-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७१॥

निज में आप समर्थ हो, हो आत्मिक बलवान।
पूज्य स्वयंप्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री स्वयंप्रभु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७२॥

निज आतम में व्याप्त हो, पाकर केवलज्ञान।
पूज्य प्रभूतात्मा नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री प्रभूतात्मा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७३॥

स्वामी हो हर जीव के, दो हमको कुछ ज्ञान।
भूतनाथ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री भूतनाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७४॥

स्वामी हो त्रय लोक के, करो जगत कल्याण।
पूज्य जगत्प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री जगत्प्रभु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७५॥

आप प्रथम हो पूज्य हो, जग के हो सम्मान।
सर्वादि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वादि-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७६॥

लोकालोक निहारते, निज से ना अंजान।
पूज्य सर्वदृक नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वदृक-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७७॥

हित का दे उपदेश तुम, करते जग कल्याण।
पूज्य सार्व प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सार्व-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७८॥

तीन लोक त्रय काल का, जानो सारा ज्ञान।
परम पूज्य सर्वज्ञ को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सर्वज्ञ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७९॥

सम्यग्दर्शन धार के, सबको देते ज्ञान।
पूज्य सर्वदर्शन प्रभु, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सर्वदर्शन-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८०॥

सबको प्रिय लगते तुम्हीं, तुम बिन क्या कल्याण।
सर्वात्मा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सर्वात्मा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८१॥

त्रय जग के स्वामी तुम्हीं, प्राणी के हो प्राण।
पूज्य सर्वलोकेश को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सर्वलोकेश-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८२॥

हर पदार्थ को जानते, रखते निज का ध्यान।
पूज्य सर्ववित् नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सर्ववित्-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८३॥

सर्व लोक को जीतते, करो नहीं हैरान।
सर्व लोकजित् नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री लोकजित्-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८४॥

चारों गतियाँ तज हुए, पंचम विराजमान।
पूज्य सुगति नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुगति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८५॥

स्वामी बहुत प्रसिद्ध हो, रखो शास्त्र का ज्ञान।
सुश्रुत प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुश्रुत-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८६॥

सुनो भक्त की प्रार्थना, रखो भक्त का ध्यान।
सुश्रुत् प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुश्रुत्-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८७॥
सप्त भंग मय वचन है, देते हित का ज्ञान।
सुवाक् प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुवाक्-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८८॥
गुरुवर हो संसार के, हम सबके भगवान।
पूज्य सूरि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सूरि-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८९॥
शास्त्र पारगामी हुए, पाकर अनन्तज्ञान।
बहुश्रुत प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९०॥
स्वामी जगत प्रसिद्ध हो, शास्त्र सके न जान।
विश्रुत प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विश्रुत-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९१॥
किरणें केवलज्ञान की, फैलें सकल जहान।
विश्वतःपाद नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विश्वतःपाद-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९२॥
तीन लोक के शिखर पर, रहते विराजमान।
विश्वशीर्ष प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विश्वशीर्ष-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९३॥
दोष सहित तज ज्ञान को, पाया निर्मल ज्ञान।
शुचिश्रवा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान
ॐ ह्रीं श्री शुचिश्रवा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९४॥

अनन्तसुख प्रभु आप हो, दुख का करके हान।
सहस्रशीर्ष प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सहस्रशीर्ष-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९५॥

आत्म स्वरूपी आप हो, लोकालोक सुजान।
क्षेत्रज्ञ प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री क्षेत्रज्ञ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९६॥

अनन्तदर्शी आप हो, देखो निज स्थान।
सहस्राक्ष प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सहस्राक्ष-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९७॥

अनन्तवीर्य प्रभु धारते, हो अनन्त बलवान।
सहस्रपात् प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सहस्रपात्-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९८॥

स्वामी हो त्रय काल के, किन्तु न काल समान।
भूत-भव्य-भवद्भर्ता को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री भूत-भव्य-भवद्भर्ता-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९९॥

प्रभु हो केवलज्ञान के, विद्या के भगवान।
विश्व विद्या महेश्वर को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वविद्यामहेश्वर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२००॥

सद्गुण से भूषित तुम्हीं, दो सबको स्थान।
स्थविष्ठ प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री स्थविष्ट-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०१॥

अंत रहित सौ वृद्ध हो, वृद्ध हुए पा ज्ञान।
स्थविर प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री स्थविर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०२॥

स्वामी तुम तो मुख्य हो, हम बच्चे नादान।
ज्येष्ठ प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री ज्येष्ठ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०३॥

सबके अग्रेसर तुम्हीं, प्रथम पूज्य स्थान।
पूज्य पृष्ट प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री पृष्ट-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०४॥

सबके प्रिय अत्यंत हो, तुम बिन लगे न ध्यान।
पूज्य प्रेष्ठ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री प्रेष्ठ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०५॥

अतिशय बुद्धि धारते, अतिशय बुद्धिमान।
वरिष्ठधी प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री वरिष्ठधी-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०६॥

स्थिर प्रभु अत्यंत हो, अविनाशी भगवान।
परम पूज्य स्थेष्ठ को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री स्थेष्ठ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०७॥

सबके गुरु अत्यंत हो, गुरुवर गरिमावान।
गरिष्ठ प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री गरिष्ठ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०८॥

अनेक स्वरूपी हो प्रभु, हो अनन्त गुणवान।
परम पूज्य बंहिष्ठ को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री बंहिष्ठ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०९॥

प्रशंसनीय प्रभु आप हो, गुण समूह की खान।
पूज्य श्रेष्ठ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेष्ठ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१०॥

स्वामी अतिशय सूक्ष्म हो, तुम्हें न जाने ज्ञान।
अणिष्ठ प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अणिष्ठ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२११॥

जिनवाणी जगपूज्य है, दे शुद्धातम ज्ञान।
गरिष्ठगी प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री गरिष्ठगी-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१२॥

चतुर्गति संसार के, हर्त्ता हो बलवान।
पूज्य विश्वभृट् नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वभृट्-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१३॥

सम्यक् चर्या के धनी, विधि का करो विधान।
पूज्य विश्वसृट् नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्रीविश्वसृट्-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१४॥

त्रिभुवन के स्वामी तुम्हीं, सकल विश्व के धाम।
परम पूज्य विश्वेट् को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वेट्-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१५॥

जग की रक्षा तुम करो, करते रक्षित प्राण।
पूज्य विश्वभुक् नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वभुक्-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१६॥

सब के स्वामी आप हो, हम भक्तों की शान।
पूज्य विश्वनायक जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वनायक-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१७॥

योग्य रहे विश्वास के, कण-कण में स्थान।
विश्वासी प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वासी-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१८॥

विश्व रूप है आत्मा, विश्व रूप है ज्ञान।
विश्व-रूपात्मा को सदा, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वरूपात्मा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१९॥

विश्व विजेता आप हो, दो हमको जय यान।
पूज्य विश्वजित नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वजित-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२०॥

कालबली को जीतकर, गए नहीं श्मसान।
विजितान्तक प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विजितान्तक-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२१॥

मनोविकार कुछ भी नहीं, नाशा खोटा ध्यान।
पूज्य विभव प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विभव-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२२॥

हरो हमारे सप्त भय, आप नहीं भयवान।
पूज्य विभय प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विभय-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२३॥

लक्ष्मी के स्वामी तुम्हीं, हो अतिशय बलवान।
पूज्य वीर प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री वीर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२४॥

शोक रहित प्रभु आप हो, हरो शोक स्थान।
पूज्य विशोक प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विशोक-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२५॥

जरा बुढ़ापे से रहित, करो जरा का हान।
पूज्य विजर प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विजर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२६॥

अनादिकाल से आप हो, नहीं नवीन पहचान।
पूज्य जरन् प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री जरन्-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२७॥

राग रहित प्रभु आप हो, वीतराग विज्ञान।
पूज्य विराग प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विराग-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२८॥

तुम तो विषय विरक्त हो,काम न ये आसान
पूज्य विरत प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विरत-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२९॥

परिग्रह से सम्बन्ध ना, ना ही उसका ध्यान।
असंग प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री असंग-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३०॥

एकाकी प्रभु आप हो, अलग-अलग पहचान।
विविक्त प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विविक्त-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३१॥

ईर्ष्यालु प्रभु हो नहीं, गए देव अभिमान।
पूज्य वीत्मत्सर जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री वीत्मत्सर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३२॥

विनम्र जनता को दिए, भक्त-बन्धु वरदान।
विनेयजनताबंधु को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विनेयजनताबन्धु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३३॥

कर्मकालिमा हर चुके, हरो पाप अज्ञान।
विलीनाशेष-कल्मष प्रभु, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विलीनाशेष-कल्मष अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३४॥

पर में कुछ संयोग ना, योग हरे कर ध्यान।
पूज्य वियोग प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री वियोग-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३५॥
णमोकार जिन योग दो, योगों के विद्वान।
पूज्य योगवित् नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री योगवित्-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३६॥
पण्डित के पण्डित महा, मण्डित पूरण ज्ञान।
परम पूज्य विद्वान को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विद्वान-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३७॥
धर्मसृष्टि करतार हो, जग के गुरु महान।
पूज्य विधाता नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विधाता-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३८॥
प्रशंसनीय प्रभु आपका, क्रियाकांड अनुष्ठान।
पूज्य सुविधि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुविधि-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३९॥
बुद्धि के सम्राट हो, अतिशय प्रज्ञावान।
पूज्य सुधी प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुधी-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४०॥
प्रभु धारो उत्तम-क्षमा, हरो क्रोध अभिमान।
क्षान्तिभाक् प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री क्षान्तिभाक्-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४१॥
सहनशील प्रभु आप हो, पृथ्वी मात समान।
पृथिवीमूर्ति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पृथिवीमूर्ति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४२॥

सब अशान्तियाँ हर चुके, करो शान्ति रसपान।
शान्तिभाक् प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिभाक्-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४३॥

शुद्ध करो विधि मल हरो, निर्मल नीर समान।
सलिलात्मक प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सलिलात्मक-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४४॥

बँधते ना सम्बन्ध में, बहते पवन समान।
वायुमूर्ति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री वायुमूर्ति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४५॥

संग रहित निस्संग हो, फिर भी हो धनवान।
पूज्य असंगात्मक जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री असंगात्मक-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४६॥

कर्मकाष्ट को भस्म कर, प्रज्ज्वल अग्नि समान।
वह्निमूर्त प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री वह्निमूर्त-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४७॥

धर्मामृत वर्षा रहे, हर अधर्म अज्ञान।
अधर्मधृक् प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अधर्मधृक्-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४८॥

ध्यान अग्नि के कुंड में, करो कर्म का होम।
पूज्य सुयज्वा नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सुयज्वा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४९॥

निज मंदिर में कर रहे, भावार्चन निज ज्ञान।
यजमानात्मा नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री यजमानात्मा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५०॥

परम परम आनन्द में, नहा रहे भगवान।
सुत्वा प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सुत्वा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५१॥

इन्द्र पूज्य प्रभु आप हो, शत इन्द्रों के प्राण।
सुत्रामपूजित नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सुत्रामपूजित-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५२॥

ध्यान अग्नि से कर्म हर, यज्ञ रूप कर ज्ञान।
ऋत्विक प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री ऋत्विक-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५३॥

मुखिया हो उस यज्ञ के, जहाँ होम है ज्ञान।
पूज्य यज्ञपति नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री यज्ञपति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५४॥

पूज्यों के भी पूज्य हो, भक्त करें सम्मान।
पूज्य याज्यप्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री याज्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५५॥

धर्म यज्ञ के हेतु हो, यज्ञों के सामान।
परम पूज्य यज्ञांग को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री यज्ञांग-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५६॥

भव त्यागे त्यागे मरण, करो सुखामृत पान।
अमृत प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अमृत-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५७॥

निज आतम में लीन हो, छोड़ा सकल जहान।
परम पूज्य हवि नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री हवि-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५८॥

आप सर्व व्यापी हुए, निर्मल गगन समान।
व्योममूर्ति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री व्योममूर्ति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५९॥
चित रूपी सो क्या रहा, रूप रंग का ज्ञान।
पूज्य अमूर्तात्मा जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अमूर्तात्मा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६०॥
कर्म लेप से हो रहित, स्वाभाविक भगवान।
परम पूज्य निर्लेप को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री निर्लेप-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६१॥
मल-मूत्रादिक से रहित, राग-द्वेष ना मान।
निर्मल प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री निर्मल-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६२॥
आप सदा स्थिर रहो, ऊँचे मेरु समान।
पूज्य अचल प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अचल-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६३॥
शान्त सुशोभित आप हो, शीतल चन्द्र समान।
सोममूर्ति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सोममूर्ति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६४॥
आतम छवि अति सौम्य है, मन मोहक मुस्कान।
सुसौम्यात्मा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुसौम्यात्मा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६५॥
परम प्रतापी तेजमय, चमको सूर्य समान।
सूर्यमूर्ति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सूर्यमूर्ति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६६॥

परम प्रभावी केवली, अतिशय प्रतिभावान।
पूज्य महाप्रभ नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री महाप्रभ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६७॥

मंत्रों के ज्ञाता तुम्हीं, मंत्रों के विद्वान।
पूज्य मंत्रवित् नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री मंत्रवित्-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६८॥

मंत्रों के कर्त्ता तुम्हीं, दो मंत्रों का ज्ञान।
पूज्य मंत्रकृत नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री मंत्रकृत-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६९॥

मंत्रों की कर मंत्रणा, करते आतम ध्यान।
मंत्री प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री मंत्री-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७०॥

मंत्र स्वरूपी आप हो, हमें मंत्र दो दान।
मंत्रमूर्ति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री मंत्रमूर्ति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७१॥

अनन्त वस्तुएँ जानते, पाकर अनन्तज्ञान।
अनन्तग प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तग-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७२॥

आतम ना परतंत्र है, पराधीन ना जान।
स्वतंत्र प्रभु के नाम को,हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री स्वतंत्र-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७३॥

कर्त्ता हो सिद्धांत के, तंत्रों की हो शान।
पूज्य तंत्रकृत् नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री तंत्रकृत्-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७४॥

अंतःकरण पवित्र है, पवित्रता दो दान।
पूज्य स्वन्त प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री स्वन्त-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७५॥
यम के तुम यमराज हो, त्याग दिया श्मशान।
कृतान्तान्त प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कृतान्तान्त-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७६॥
पुण्य बृद्धि के हेतु हो, हरो पाप ज्ञान।
पूज्य कृतान्तकृत् नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कृतान्तकृत्-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७७॥
देवों के भी देव हो, पुण्यफला भगवान।
पूज्य कृति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कृति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७८॥
महा मोक्ष पुरुषार्थ को, सिद्ध किए भगवान।
कृतार्थ प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कृतार्थ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७९॥
प्रशंसनीय पुण्यात्मा हो, सब करते सम्मान।
परम पूज्य सत्कृत्य को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सत्कृत्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८०॥
कर डाले कर्तव्य सब, सब में सफल महान।
परम पूज्य कृतकृत्य को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कृतकृत्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८१॥
भस्म कर्म नोकर्म कर, पूर्ण यज्ञ तप ध्यान।
कृतकृतु प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कृतकृतु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८२॥

अविनाशी प्रभु आप हो, शाश्वत पुण्य निधान।
पूज्य नित्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री नित्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८३॥
मृत्यु विजेता आप हो, मौत से न भयवान।
मृत्युंजय प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री मृत्युंजय-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८४॥
आत्मा कभी न मर सके, मरे ना दर्शन-ज्ञान।
अमृत्यु प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अमृत्यु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८५॥
मरण रहित अमृत रहे, दो अमृत का दान।
अमृतात्मा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अमृतात्मा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८६॥
अविनश्वर प्रभु हो गए, करो मोक्ष का दान।
अमृतोद्भव प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अमृतोद्भव-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८७॥
आत्मब्रह्म में लीन हो, ब्रह्म रूप विज्ञान।
ब्रह्मनिष्ठ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मनिष्ठ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८८॥
ब्रह्म ज्ञान उत्कृष्ट है, पंचम केवलज्ञान।
परमब्रह्म प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री परमब्रह्म-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८९॥
ब्रह्म स्वरूपी आत्मा, सुखदा दर्शन-ज्ञान।
ब्रह्मात्मा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मात्मा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९०॥

आत्म-ब्रह्म को पा लिया, हुआ ब्रह्म जब ज्ञान।
पूज्य ब्रह्मसम्भव जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मसम्भव-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९१॥

ब्रह्म रूप गणधर रहे, जिनके हो भगवान।
महाब्रह्मपति नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री महाब्रह्मपति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९२॥

सामान्य केवली आपका, करते हैं गुणगान।
परम पूज्य ब्रह्मेश को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मेश-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९३॥

समवसरण या मोक्ष के, ब्रह्म रूप भगवान।
महाब्रह्मपदेश्वर को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री महाब्रह्मपदेश्वर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९४॥

भक्तों को आनन्द दो, रहते सदा प्रसन्न।
सुप्रसन्न प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सुप्रसन्न-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९५॥

द्रव्य भाव नौ कर्म के, मल से रहित प्रसन्न।
प्रसन्नात्मा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री प्रसन्नात्मा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९६॥

इन्द्रीजय को तप किया, पाया धार्मिक ज्ञान।
ज्ञानधर्मदम-प्रभु को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानधर्मदमप्रभु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९७॥

किया कषायों को प्रशम, उद्‌घाटित निज ज्ञान।
प्रशमात्मा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री प्रशमात्मा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९८॥

परम शान्त प्रभु रूप हैं, देते शान्ति महान।
प्रशान्तात्मा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री प्रशान्तात्मा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९९॥

आप शलाका पुरुष में, उत्तम हुए महान।
पुराण-पुरुषोत्तम नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री पुराणपुरुषोत्तम-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३००॥

अशोक तरु के चिह्न से, जिनवर की पहचान।
महाअशोकध्वज नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री महाअशोकध्वज-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३०१॥

शोक रहित प्रभु आप हो, हरो आर्त्त दुख ध्यान।
अशोक प्रभु जिननाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अशोक-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३०२॥

हम सबके तुम हो पिता, देते हो सुख दान।
परम पूज्य क नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री क-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३०३॥

स्वर्ग घुमाते हो हमें, देकर स्वर्ग विमान।
स्रष्टा प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री स्रष्टा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३०४॥

कमलासन पर शोभते है, खिलते पद्म समान।
पूज्य पद्मविष्टर जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मविष्टर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३०५॥

लक्ष्मी के स्वामी तुम्हीं, हो सबसे धनवान।
परम पूज्य पद्मेश को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मेश-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३०६॥

गमन समय चरणों तले, पंकज स्वर्ण समान।
पूज्य पद्मसंभूति को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पद्मसंभूति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३०७॥
सुन्दर सी काया रही, नाभि कमल समान।
पद्मनाभि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पद्मनाभि-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३०८॥
समाधान उत्तर तुम्हीं, हम सब तो हैं प्रश्न।
पूज्य अनुत्तर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अनुत्तर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३०९॥
पद्माकृति की योनि से, हुए आप उत्पन्न।
पद्मयोनि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पद्मयोनि-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३१०॥
इस जग में उत्पन्न हो, करो जगत उत्पन्न।
जगद्योनि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जगद्योनि-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३११॥
ज्ञान गम्य सो इत्य हो, करते सब गुणगान।
पूज्य इत्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री इत्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३१२॥
स्तुति के ईश्वर रहे, चरण शरण दो दान।
स्तुतीश्वर प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री स्तुतीश्वर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३१३॥
स्तुति के प्रभु योग्य हैं, हम गुण करें बखान।
स्तुत्य प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री स्तुत्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३१४॥

स्तुति के प्रभु पात्र हैं, पूज्य भेद विज्ञान।
स्तवनार्ह प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री स्तवनार्ह-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३१५॥

इन्द्रियों को वश में किए, ऐसे हो बलवान।
हृषीकेश प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री हृषीकेश-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३१६॥

कौन तुम्हें जीते यहाँ, तुम जीते मद मान।
जितजेय प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री जितजेय-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३१७॥

योग्य क्रियाएँ कर चुके, पा शुद्धातम ज्ञान।
कृतक्रिय प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री कृतक्रिय-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३१८॥

बारह बारह गण सभा, अधिपति है भगवान।
पूज्य गणाधिप नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री गणाधिप-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३१९॥

सकल संघ के मुख्य हो, गण में ज्येष्ठ महान।
परम पूज्य गणज्येष्ठ को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री गणज्येष्ठ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२०॥

गुण गण के स्वामी रहे, अनन्त गुण भगवान।
पूज्य गण्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री गण्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२१॥

पवित्र हो सो पुण्य हो, दिए सातिशय पुण्य।
पूज्य पुण्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री पुण्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२२॥

गण के अग्रेसर बड़े, हम को करो महान।
गणाग्रणी प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री गणाग्रणी-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२३॥

हम सब को गुण बाँटते, सकल गुणों की खान।
पूज्य गुणाकर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री गुणाकर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२४॥

गुण के भरे समुद्र हो, रखो गुणों का ज्ञान।
गुणांभोधि प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री गुणांभोधि-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२५॥

आप स्वयं गुणवान हो, रखो गुणों का ज्ञान।
गुणज्ञ प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री गुणज्ञ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२६॥

गुण गण के नायक रहे, हरो दोष अज्ञान।
गुणनायक प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री गुणनायक-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२७॥

गुण समूह की कर विनय, बन बैठे गुणवान।
पूज्य गुणादरी नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री गुणादरी-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२८॥

अवगुण के उच्छेद कर, प्रकटाया गुण-ज्ञान।
पूज्य गुणोच्छेदी जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री गुणोच्छेदी-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२९॥

वैभाविक गुण जब मिटे, प्रकटे स्वभाव ज्ञान।
निर्गुण प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री निर्गुण-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३०॥

पवित्र गुणों को धारते, पुण्यफला परिणाम।
पूज्य पुण्यगी नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पुण्यगी-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३१॥

आप शुद्ध गुण रूप हो, गुण गण के संस्थान।
परम पूज्य गुण नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री गुण-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३२॥

हम सब की प्रभु हो शरण, चरण शरण दो दान।
शरण्य प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री शरण्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३३॥

वचन आपके पुण्य हैं, हरें वचन संग्राम
पुण्यवाक् प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पुण्यवाक्-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३४॥

स्वामी परम पवित्र हो,पावन करो जहान
पूज्य पूत प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पूत-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३५॥

जग में सबसे श्रेष्ठ हो, सबको दो वरदान।
वरेण्य प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री वरेण्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३६॥

स्वामी हो तुम पुण्य के, पुण्यफला भगवान।
पूज्य पुण्यनायक जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पुण्यनायक-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३७॥

तुम गणना के पात्र हो, अनगिन गुण परिणाम।
अगण्य प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अगण्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३८॥

पुण्य बुद्धि को धारते, हरो पाप अज्ञान।
पूज्य पुण्यधी नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री पुण्यधी-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३९॥

समवसरण के योग्य हो, हम सबके कल्याण।
पूज्य गुण्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री गुण्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४०॥

करता हो तुम पुण्य के, हरता पाप महान।
पूज्य पुण्यकृत नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री पुण्यकृत-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४१॥

पुण्य रूप जिनमार्ग हो, हरो कुपथ नादान।
पूज्य पुण्यशासन जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री पुण्यशासन-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४२॥

सम्यक धर्म समूह हो, आतम के आराम।
जिनवर धर्माराम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री धर्माराम-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४३॥

गुण समूह अरिहन्त हो,गुण गण के निर्वाण।
परम पूज्य गुणग्राम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री गुणग्राम-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४४॥

पुण्य पाप को रोकते, निज में कर विश्राम।
पुण्यापुण्यनिरोधक को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री पुण्यापुण्यनिरोधक-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४५॥

हिंसादिक हर पाप को, दूर किए भगवान।
अर्हत पापापेत को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री पापापेत-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४६॥

सकल पाप से हो रहित, पापों का क्या काम।
पूज्य विपापात्मा जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विपापात्मा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४७॥

पाप कर्म को भस्म कर, खिला पुण्य उद्यान।
पूज्य विपात्मा नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विपात्मा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४८॥

वीत गया कल्मष करम, खिला भेद विज्ञान।
पूज्य वीतकल्मष जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री वीतकल्मष-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४९॥

परिग्रह करता द्वन्द्व है, यही त्याग दुख खान।
परम पूज्य निर्द्वन्द्व को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री निर्द्वन्द्व-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५०॥

सकल दोष के कोश को, वह त्यागा मदमान।
निर्मद प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री निर्मद-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५१॥

शान्त कषायों को किया, तजे उपाधि नाम।
पूज्य शान्त प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री शान्त-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५२॥

निज मोही से काँपता, मोह महा बलवान।
परम पूज्य निर्मोही को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री निर्मोही-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५३॥

दूर उपद्रव से हुए, हरो उपद्रव शाम।
निरुपद्रव प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री निरुपद्रव-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५४॥

पलक न झपकें आपकी, भक्त तके दिन रैन।
निर्निमेष प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री निर्निमेष-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५५॥

कवलाहार न तुम करो, तजा भोज्य रसपान।
निराहार प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री निराहार-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५६॥

जगत क्रियाएँ तज चुके, जिनवर आतमराम।
निष्क्रिय प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री निष्क्रिय-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५७॥

हुए संकटों से रहित, संकट मोचन नाम।
निरुपप्लव प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री निरुपप्लव-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५८॥

कर्म कलंकों से रहित, निर्मल उज्ज्वल धाम।
निष्कलंक प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री निष्कलंक-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५९॥

पापों की रैना गई, चहकी मैना पुण्य।
पूज्य निरस्तैना जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री निरस्तैना-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६०॥

प्रज्ञा के अपराध के, जला दिए बागान।
अर्हम् निर्धूतांग को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री निर्धूतांग-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६१॥

रोका आस्रव कर्म का, नौका चली महान।
पूज्य निरास्रव नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री निरास्रव-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६२॥

तुम तो बड़े विशाल हो, हमको करो महान।
विशाल प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विशाल-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६३॥
सूर्य चाँद से भी अधिक, ज्योतित केवलज्ञान।
विपुलज्योति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विपुलज्योति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६४॥
अतुलनीय अनुपम रहे, तुल न सके भगवान।
पूज्य अतुल प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अतुल-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६५॥
अचिंत्य वैभव आपका, कौन कर सके ध्यान।
अचिंत्यवैभव नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अचिंत्यवैभव-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६६॥
गणधर शिष्यों से सदा, वेष्टित हो भगवान।
सुसंवृत प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुसंवृत-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६७॥
गुप्त आत्मा को किया, किया गुप्ति मय ध्यान।
सुगुप्तात्मा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुगुप्तात्मा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६८॥
उत्तम ज्ञाता आप हो, हो पुंगव विद्वान।
पूज्य सुभृत् प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुभृत्-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६९॥
सकल विकल नय जानते, बोलो सम्यग्ज्ञान।
सुनयतत्त्ववित् नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुनयतत्त्ववित्-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७०॥

अध्यातम विद्या धरो, धारो केवलज्ञान।
एकविद्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री एकविद्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७१॥

अनेक विद्याएँ धरो, आप महा विद्वान।
महाविद्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाविद्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७२॥

मन से रहते मौन जो, धारो प्रत्यक्ष ज्ञान।
परम पूज्य मुनि नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री मुनि-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७३॥

तपस्वियों के ईश हो, साधक संत प्रधान।
जिनवर परिवृढ़ नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री परिवृढ़-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७४॥

सब जग की रक्षा करो, सबको दो स्थान।
परम पूज्य पति नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७५॥

बुद्धि के तुम ईश हो, बाँटो धी धीमान।
पूज्य धीश प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री धीश-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७६॥

विद्या के सागर तुम्हीं, विद्या के हो ज्ञान।
परम पूज्य विद्यानिधि, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विद्यानिधि-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७७॥

जानो सब प्रत्यक्ष तुम, तज परोक्ष अज्ञान।
साक्षी प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री साक्षी-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७८॥

मोक्षमार्ग दिखला रहे, परमत का हर ज्ञान।
पूज्य विनेता नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विनेता-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७९॥

हरण मरण का कर चुके, जय हो करुणावान।
विहितान्तक प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विहितान्तक -अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८०॥

संरक्षक तुम हो पिता, हम तेरी संतान।
पूज्य पिता प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री पिता-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८१॥

गुरुओं के भी हो गुरु, दादा गुरु महान।
पूज्य पितामह नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री पितामह-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८२॥

पालनहारे जग प्रभु, रक्षक हो भगवान।
पाता प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री पाता-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८३॥

तुम तो पूर्ण पवित्र हो, त्यागा नाम निशान।
पवित्र प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री पवित्र-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८४॥

सबको करते शुद्ध तुम, चिदानन्द भगवान।
पावन प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री पावन-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८५॥

ज्ञान स्वरूपी आप हो, गमनागमन ना जान।
परम पूज्य गति नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री गति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८६॥

रक्षक हो भक्षक नहीं, ज्ञान चेतनावान।
त्राता प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री त्राता-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८७॥

रोग हरें जिनवैद्य सब, जपो जाप जिननाम।
पूज्य भिषग्वर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री भिषग्वर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८८॥

कौन आप सा है यहाँ, जग में श्रेष्ठ महान।
पूज्य वर्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री वर्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८९॥

स्वर्ग मोक्ष दाता तुम्हीं, हो साँचे वरदान।
पूज्य वरद प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री वरद-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३९०॥

मनोकामना पूर्ण तुम, दिए मोक्ष का दान।
पूज्य परम प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री परम-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३९१॥

पावन हो पावन करो, करते हो कल्याण।
पुमान प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पुमान-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३९२॥

छन्द शास्त्र व्याकरण से, करो निरूपित ज्ञान।
परम पूज्य कवि नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कवि-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३९३॥

पुरुषों में उत्तम रहे, गाते वेद पुराण।
पुराणपुरुष प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पुराणपुरुष-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३९४॥

स्वामी अतिशय वृद्ध हो, फिर भी रहे जवान।
वर्षीयान् प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री वर्षीयान्-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३९५॥

ज्ञान चेतना के धनी, रखो वृषभ निज ज्ञान।
पूज्य वृषभ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३९६॥

आदि देव पुरुदेव हो, सबसे बड़े महान।
परम पूज्य पुरु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री पुरु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३९७॥

जगत प्रतिष्ठा आपकी, भक्त हुए जगमान्य।
प्रतिष्ठाप्रसव नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री प्रतिष्ठाप्रसव-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३९८॥

भवसागर के सेतु हो, हेतु मोक्ष मुकाम।
पूज्य हेतु प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री हेतु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३९९॥

त्रय जग के रक्षक तुम्हीं, मुमुक्षु के निर्वाण।
भुवनैकपितामह नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री भुवनैकपितामह-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४००॥

अशोक तरुतल शोभते, धार्मिक हो श्रीमान।
श्रीवृक्षलक्षण नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री श्रीवृक्षलक्षण-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४०१॥

श्री से आलिंगित रहे, यह लक्षण जिन चिह्न।
श्लक्षण प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री श्लक्षण-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४०२॥

जिन लक्षण से सहित हो, जिनशासन की शान।
लक्षण्य प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री लक्षण्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४०३॥

श्रेष्ठ एक सौ आठ हैं, शुभ लक्षण पहचान।
शुभलक्षण प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री शुभलक्षण-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४०४॥

अक्ष इन्द्रियों से रहित, मिला अतीन्द्रिय ज्ञान।
निरक्ष प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री निरक्ष-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४०५॥

लोचन हैं राजीव सम, सुन्दर कमल समान।
पुण्डरीकाक्ष प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पुण्डरीकाक्ष-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४०६॥

वृद्धिंगत प्रभु हो रहे, पुष्ट करो सुख ज्ञान।
पुष्कल प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पुष्कल-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४०७॥

सुन्दर-सुन्दर कमल दल, जैसे नयन महान।
पुष्करेक्षण प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पुष्करेक्षण-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४०८॥

मोक्ष सिद्धि दाता तुम्हीं, देते हो निर्वाण।
सिद्धिद प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सिद्धिद-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४०९॥

हुए मनोरथ सफल सब, सफल करो सब काम।
सिद्धसंकल्प प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सिद्धसंकल्प-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४१०॥

पूर्ण रूप से सिद्ध हो, आदि अंत अवसान।
सिद्धात्मा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सिद्धात्मा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४११॥

मोक्षमार्ग साधन तुम्हीं, करते सिद्ध महान।
पूज्य सिद्धसाधन जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सिद्धसाधन-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४१२॥

बुद्धिमान जानें तुम्हें, जानें सम्यग्ज्ञान।
बुद्धबोध्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री बुद्धबोध्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४१३॥

प्रशंसनीय अत्यंत हैं, बोधि समाधि ज्ञान।
महाबोधि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाबोधि-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४१४॥

पूज्यपना अतिशय हुआ, हुआ कर्म का हान।
वर्धमान प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री वर्धमान-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४१५॥

महा ऋद्धियों के धनी, ऋद्धि-सिद्धि दो दान।
पूज्य महर्धिक नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महर्धिक-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४१६॥

चार-चार अनुयोग के, जानो वेद पुराण।
परम पूज्य वेदाङ्ग को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री वेदाङ्ग-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४१७॥

भेद-ज्ञान जानो तुम्हीं, समक्ष वेद विज्ञान।
पूज्य वेदविद् नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री वेदविद्-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४१८॥

ऋषियों द्वारा जानने, योग्य आप भगवान।
पूज्य वेद्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री वेद्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४१९॥

हुए दिगम्बर जन्म से, यथाजात भगवान।
जातरूप प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री जातरूप-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४२०॥

विद्वानों से श्रेष्ठ हो, ज्ञानी के हो ज्ञान।
पूज्य विदाम्वर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विदाम्वर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४२१॥

तुम्हें जानते केवली, या फिर वेद-पुराण।
वेदवेद्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री वेदवेद्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४२२॥

तुम तो अनुभव गम्य हो, स्वानुभूति के धाम।
स्वसंवेद्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री स्वसंवेद्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४२३॥

वेद रहित हो क्या तुम्हें, जानें वेद पुराण।
विवेद प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विवेद-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४२४॥

वक्ताओं में श्रेष्ठ हो, आगम वचन प्रमाण।
वदतांवर प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री वदतांवर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४२५॥

आदि अंत से हो रहित, शुद्धातम परिमाण।
अनादिनिधन प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अनादिनिधन-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४२६॥

प्रतिभाषित हो ज्ञान से, व्यक्त रूप भगवान।
पूज्य व्यक्त प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री व्यक्त-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥॥४२७
बोधगम्य प्रभु वचन हैं, समझे सकल जहान।
व्यक्तवाक् प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री व्यक्तवाक्-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४२८॥
जिन आज्ञा सब मानते,विरोध रहित श्रुत ज्ञान।
पूज्य व्यक्तशासन जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री व्यक्तशासन-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४२९॥
युग के आदि में दिए, षट्कर्मों का ज्ञान।
युगादिकृत प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री युगादिकृत-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३०॥
युग-युग के आधार हो, करते युग उत्थान।
युगाधार प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री युगाधार-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३१॥
युग के आदि में हुए, भक्तों के भगवान।
युगादि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री युगादि-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३२॥
कर्मभूमि जग आदि में, आप हुए उत्पन्न।
जगदादिज प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जगदादिज-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३३॥
स्वामी इन्द्र नरेन्द्र के, हम सबके सम्मान।
अतीन्द्र प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अतीन्द्र-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३४॥

इन्द्रिय गोचर हो नहीं, तुमको जाने कौन।
अतीन्द्रिय प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अतीन्द्रिय-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३५॥
शुक्ल ध्यान कर हो गए, परमातम भगवान।
पूज्य धीन्द्र प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री धीन्द्र-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३६॥
इन्द्रों से ज्यादा रहे, प्रभु सम्पत्तिवान।
महेन्द्र प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महेन्द्र-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३७॥
इन्द्रिय मन से दूर भी, जानो पदार्थ ज्ञान।
अतीन्द्रयार्थ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अतीन्द्रयार्थ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३८॥
पुद्गल इन्द्रियों से रहित, आप शुद्ध चैतन्य।
अनिन्द्रिय प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अनिन्द्रिय-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३९॥
अहमिन्द्रों से पूज्य हो, जग में पूज्य महान।
अहमिन्द्राचार्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अहमिन्द्राचार्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४०॥
बड़े-बड़े सुर इन्द्र से, पूजित हो भगवान।
महेन्द्रमहित प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महेन्द्रमहित-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४१॥
जग में सबसे पूज्य हो, सबसे उच्च महान।
महान प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महान-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४२॥

जन्म-मरण से रहित हो, अरिहन्तों का जन्म।
उद्‍भव प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री उद्‍भव-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४३॥
कारण हो तुम मोक्ष के, पहुँचाते शिवधाम।
कारण प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कारण-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४४॥
शुद्ध भाव कर्त्ता तुम्हीं, हरो शुभाशुभ ध्यान।
कर्त्ता प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कर्त्ता-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४५॥
आप पारगामी रहे, पार करो भव-धाम।
पारक प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पारक-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४६॥
भवसागर के तीर तक, करो भव्य का यान।
भवतारक प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री भवतारक-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४७॥
कौन आपको छू सके, ग्राह्य नहीं भगवान।
अग्राह्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अग्राह्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४८॥
वीतराग विज्ञान को, सभी सकें ना जान।
पूज्य गहन प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री गहन-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४९॥
परम रहस्यमय आप हो, गुप्त रूप भगवान।
पूज्य गुह्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री गुह्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५०॥

उत्तम वैभव के धनी, महा पूज्य भगवान।
परार्घ्य प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री परार्घ्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५१॥

मुक्तिवल्लभा आप हो, परमेश्वर भगवान।
परमेश्वर प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री परमेश्वर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५२॥

धारो अनन्त ऋद्धियाँ, ऋद्धीश्वर भगवान।
अनन्तर्धि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अनन्तर्धि-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५३॥

अपरिमित ऐश्वर्य धरो, सबसे महिमावान।
अमेयर्धि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अमेयर्धि-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५४॥

अचिंत्य सम्पत्ति धरो, जिसका ना परिमाण।
अचिंत्यर्धि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अचिंत्यर्धि-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५५॥

सकल जानने के लिए, सम्पूरण है ज्ञान।
समग्रधी प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री समग्रधी-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५६॥

सब में होते मुख्य हो, मुख्य बिना ना काम।
प्राग्रय प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्राग्रय-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५७॥

सबमें पाई श्रेष्ठता, तजा अधम अभिमान।
प्राग्रहर प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्राग्रहर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५८॥

सब में होते श्रेष्ठ हो, श्रेष्ठ बिना क्या काम।
अभ्यग्र प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अभ्यग्र-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५९॥

प्रति-प्रति तुम अग्र हो, सबसे हो बलवान।
प्रत्यग्र प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्रत्यग्र-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६०॥

स्वामी होने से हुए, भक्त पुकारे नाम।
अग्रय प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अग्रय-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६१॥

सबके अग्रेसर रहे, तुम्हीं सर्व प्रधान।
अग्रिम प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अग्रिम-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६२॥

आप बड़े सबसे रहे, तुमसे हो शुभ काम।
अग्रज प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अग्रज-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६३॥

तपश्चरण करके कठिन, पाया मोक्ष मुकाम।
महातपा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महातपा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६४॥

तेजस्वी सबसे अधिक, चमका सकल जहान।
महातेजा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महातेजा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६५॥

तप का फल ऐसा मिला, अक्षय केवलज्ञान।
महोदर्क प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महोदर्क-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६६॥

महापुण्य के उदय से, हुआ प्रतापी नाम।
पूज्य महोदय नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री महोदय-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६७॥

महा यशस्वी आप हो, यश फैले हर धाम।
महायशा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री महायशा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६८॥

महा धाम में वस रहे, अतिशय प्रकाशमान।
महाधामा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री महाधामा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६९॥

महाशौर्य से युक्त हो, महा महा बलवान।
महासत्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री महासत्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७०॥

धीर-वीर-गंभीर हो, अतिशय हो गुणवान।
महाधृति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री महाधृति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७१॥

आकुल व्याकुल व्यग्र ना, धरो धैर्य महान।
महाधैर्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री महाधैर्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७२॥

महा वीर्य से युक्त हो, अतिशय सामर्थ्य महान।
महावीर्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७३॥

समवसरण वैभव धरा, हो सम्पत्तिवान।
पूज्य महासंपत जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री महासंपत-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७४॥

महाबली बाहुबली, हो अतिशय बलवान।
पूज्य महाबल नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री महाबल-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७५॥

महा शक्ति तुम भारती, अनन्त शक्तिमान।
महाशक्ति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री महाशक्ति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७६॥

चमक रहे दिन रात हो, अतिशय कान्तिमान।
महाज्योति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री महाज्योति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७७॥

मिला पंचकल्याणक विभव, पूजे जिसे जहान।
महाभूति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री महाभूति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७८॥

सूर्य चाँद जिन दरश से, होते लज्जावान।
महाद्युति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री महाद्युति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७९॥

अनन्त मति जिनकी रही, अतिशय बुद्धिमान।
महामति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री महामति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८०॥

नीति न्याय जिससे मिले, न्यायाधीश महान।
महानीति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री महानीति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८१॥

क्षमा मूर्ति प्रभु आप हो, अतिशय क्षमावान।
महाक्षांति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री महाक्षांति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८२॥

महा दयालु आप हो, सबके दयानिधान।
पूज्य महादय नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महादय-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८३॥

स्वामी बड़े प्रवीण हो, अतिशय प्रज्ञावान।
महाप्राज्ञ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाप्राज्ञ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८५॥

बड़े भाग्यशाली रहे, भाग्यवान भगवान।
महाभाग्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाभाग्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८६॥

भक्तों को आनन्द दो, निजानन्द के धाम।
महानन्द प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महानन्द-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८६॥

कवियों के हो महाकवि, सम्यक आगम ज्ञान।
महाकवि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाकवि-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८७॥

तेजस्वी तुम हो महा, तुम सा कौन महान।
महा-महा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महामहा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८८॥

जग की कम पड़ती चमक, रचते कीर्तिमान।
महाकीर्ति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाकीर्ति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८९॥

महाकान्ति से युक्त हो, मनमोहक छविमान।
महाकान्ति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाकान्ति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४९०॥

अतिशय सुन्दर देह है, विदेह के स्थान।
महावपु प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री महावपु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४९१॥

बहुत बड़े दानी रहे, दानतीर्थ के धाम।
महादान प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री महादान-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४९२॥

क्षुद्र ज्ञान सब जा चुके, धारो केवलज्ञान।
महाज्ञान प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री महाज्ञान-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४९३॥

महायोग योगी तुम्हीं, धरते आतम ध्यान।
महायोग प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री महायोग-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४९४॥

महा-महा गुण धारते, अनन्त गुण के धाम।
पूज्य महागुण नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री महागुण-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४९५॥

मिली महापूजा तुम्हें, हुए पंचकल्याण।
महामहपति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री महामहपति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४९६॥

गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान के, मोक्ष पाँच कल्याण।
प्राप्तमहाकल्याणपञ्चक, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री प्राप्तमहाकल्याणपंचक-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४९७॥

महा प्रभावी आप हो, स्वामी बड़े महान।
पूज्य महाप्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री महाप्रभु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४९८॥

प्रातिहार्य से शोभते, हो वैभव सम्पन्न।
महाप्रातिहार्याधीश को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाप्रातिहार्याधीश-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४९९॥

स्वामी हो शत इन्द्र के, महा महेश्वर धाम।
महा महेश्वर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महेश्वर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५००॥

मुनियों में उत्तम रहे, मुनियों के भगवान।
महामुनि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महामुनि-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५०१॥

दिव्या देशना दो मगर, अंतस से हो मौन।
महामौनी प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महामौनी-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५०२॥

महा ध्यान करके करो, परमानन्दी ध्यान।
महाध्यानी प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाध्यानी-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५०३॥

विषय कषायों का दमन, करते शक्तिमान।
पूज्य महादम नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महादम-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५०४॥

महा क्रोधि को भी दिए, क्षमादान भगवान।
पूज्य महाक्षम नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाक्षम-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५०५॥

महा ब्रह्म में लीन हैं, शील युक्त भगवान।
महाशील प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाशील-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५०६॥

ज्ञान अग्नि में कर रहे, महा यज्ञ भगवान।
महायज्ञ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महायज्ञ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५०७॥

महा पूज्य जग में रहे, त्यागे सब अपमान।
पूज्य महामख नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महामख-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५०८॥

महा व्रतों के हो प्रभु, हरो पाप अज्ञान।
पूज्य महाव्रतपति जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाव्रतपति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५०९॥

महापूज्य होकर हुए, आत्मलीन भगवान।
पूज्य मह्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री मह्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५१०॥

तेज कान्ति अतिशय धरें, रौशन करें जहान।
महाकान्तिधर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाकान्तिधर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५११॥

जग रक्षक अधिपति रहे, सबके हो भगवान।
पूज्य अधिप प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अधिप-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५१२॥

सबसे रखते मित्रता, मैत्री भाव महान।
महामैत्रीमय नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महामैत्रीमय-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५१३॥

तुम्हें नापने का नहीं, तंत्र मंत्र विज्ञान।
अमेय प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अमेय-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५१४॥

महामोक्ष पाने तुम्हीं, हो उपाय आसान।
महोपाय प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महोपाय-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५१५॥
मंगलमय मंगलकरन, वीतराग विज्ञान।
पूज्य महोमय नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महोमय-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५१६॥
आप महाकरुणा करो, करुणा कृपा निधान।
महाकारुणिक नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाकारुणिक-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५१७॥
सकल द्रव्यगुण जानते, जानो निज पर ज्ञान।
मंता प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री मंता-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५१८॥
जानो मानो रच रहे, मंत्रों के विज्ञान।
महामंत्र प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महामंत्र-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५१९॥
यतियों के यतिराज हो, करो आत्म संधान।
पूज्य महायति नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महायति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५२०॥
महा दिव्य ध्वनि गूँजती, मेघनाद सम वान।
महानाद प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महानाद-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५२१॥
सिंहनाद ओंकार मय, महाघोष जिन-वान।
महाघोष प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाघोष-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५२२॥

महाजनों से पूज्य हो, महाज्ञान के धाम।
महेज्य प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महेज्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५२३॥

तेजो से अति तेज हो, सम्यक् शीतल धाम।
महसांपति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महसांपति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५२४॥

महा अहिंसा व्रत धरो, चारण-चरण महान।
महाध्वरधर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाध्वरधर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५२५॥

धर्म धुरंधर नाम को, धर्म धुरी लो थाम।
पूज्य धुर्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री धुर्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५२६॥

हो उदार अपनी निधि, लुटा रहे दिन रैन।
महोदार्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महोदार्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५२७॥

हित मित प्रिय वाणी रही, सब करते सम्मान।
महेष्टवाक् प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महेष्टवाक्-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५२८॥

महा आत्मा आपकी, अंतर बाह्य न जान।
पूज्य महात्मा नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महात्मा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५२९॥

सारे तेज प्रकाश से, ऊँचा है स्थान।
महासांधाम प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महासांधाम-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५३०॥

हर ऋद्धि को प्राप्त हो, हर गुण से सम्पन्न।
महर्षि प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री महर्षि-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५३१॥

पुण्योदय से आप हो, तीर्थंकर भगवान।
महितोदय प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री महितोदय-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५३२॥

क्लेशों के अंकुश तुम्हीं, संकटमोचक नाम।
महाक्लेशांकुश जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री महाक्लेशांकुश-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५३३॥

घाति कर्म रिपु जय किए, हरा दिए बलवान।
पूज्य शूर प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री शूर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५३४॥

गणधर चक्री इन्द्र जो, उनके भी भगवान।
महाभूतपति नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री महाभूतपति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५३५॥

अन्ध हरें ज्योतित करें, देकर धार्मिक ज्ञान।
परम पूज्य गुरु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री गुरु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५३६॥

विजित पराक्रम में हुए, किया न कुछ संग्राम।
महापराक्रम नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री महापराक्रम-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५३७॥

अंत रहित प्रभु आत्मा, अंत रहित गुण ज्ञान।
अनन्त प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्त-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५३८॥

क्रोध शत्रु जग का रहा, आप क्रोध के जान।
महाक्रोधरिपु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री महाक्रोधरिपु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५३९॥

इन्द्रियों को वश में किया, वश कर डाला काम।
पूज्य वशी प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री वशी-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५४०॥

नभ तारे उतने नहीं, तारे जितने यान।
महाभवाब्धिसंतारी को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री महाभवाब्धिसंतारी-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५४१॥

मोह अचल भेदन किया, किया विजित शिवधाम।
महामोहाद्रिसूदन जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री महामोहाद्रिसूदन-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५४२॥

सम्यग्दर्शन ज्ञान गुण, महाचरित गुणखान।
महागुणाकर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री महागुणाकर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५४३॥

शान्त कषायों को किया, अपराधों का हान।
पूज्य क्षांत प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री क्षांत-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५४४॥

महा योगियों के प्रभु, ज्ञानी के हो ज्ञान।
महायोगीश्वर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री महायोगीश्वर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५४५॥

परम सुखी कर्मक्षयी, परम शान्ति के धाम।
पूज्य शमी प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री शमी-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५४६॥

शुक्ल ध्यान में रमण कर, करो निजातम ध्यान।
महाध्यानपति नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री महाध्यानपति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५४७॥

धर्म अहिंसा ध्यान से, करो स्व-पर कल्याण।
ध्यातमहाधर्म नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री ध्यातमहाधर्म-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५४८॥

पंच महाव्रत धारते, व्रतियों के भगवान।
पूज्य महाव्रत नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री महाव्रत-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५४९॥

कर्म शत्रु को मार के, हो अरिहन्त महान।
पूज्य महाकर्मारिहा, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री महाकर्मारिहा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५५०॥

निज आतम में लीन हो, कर आतम का ज्ञान।
परम पूज्य आत्मज्ञ को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री आत्मज्ञ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५५१॥

देवों के भी देव हो, महापूज्य भगवान।
महादेव प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री महादेव-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५५२॥

अद्वितीय ऐश्वर्य को, धरें ईश भगवान।
महेशिता प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री महेशिता-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५५३॥

तन मन के संक्लेश हर, हुए शुद्ध भगवान।
सर्वक्लेशापह जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वक्लेशापह-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५५४॥

रत्नत्रय को सिद्ध कर, हुए साधु भगवान।
पूज्य साधु प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री साधु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५५५॥

हरो भव्य के दोष सब, दोष रहित भगवान।
सर्वदोषहर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सर्वदोषहर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५५६॥

अनेक जन्मों में हुए, हरो पाप अज्ञान।
परम पूज्य हर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री हर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५५७॥

असंख्यात गुण धारते, दोषों का क्या काम।
असंख्येय प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री असंख्येय-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५५८॥

जिसका कोई पार ना, सीमा का क्या काम।
अप्रमेयात्मा नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अप्रमेयात्मा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५५९॥

परम शान्त स्वरूप हो, हमें शान्ति दो दान।
पूज्य शमात्मा नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री शमात्मा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५६०॥

शान्ति मूर्ति प्रभु आप हो, प्रशम करो परिणाम।
प्रशमाकर प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्रशमाकर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५६१॥

सभी योगियों के तुम्हीं, ईश्वर हो भगवान।
पूज्य सर्व योगीश्वरा, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सर्वयोगीश्वरा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५६२॥

जग के चिंतन से रहे, दूर तुम्हारा ज्ञान।
अचिंत्य प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अचिंत्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५६३॥

सकल वाङ्मय रूप है, चिदानन्द श्रुत ज्ञान।
पूज्य श्रुतात्मा नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री श्रुतात्मा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५६४॥

तीन लोक को जानते, बाँटो आतम ज्ञान।
विस्तरश्रवा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विस्तरश्रवा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५६५॥

मन इन्द्रियाँ वश में किए, दो शिक्षा का दान।
दान्तात्मा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री दान्तात्मा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५६६॥

मन इन्द्रियों के दमन के, तीर्थों के भगवान।
दमतीर्थेश प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री दमतीर्थेश-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५६७॥

योग रूप आतम रही, पर न योग न ध्यान।
योगात्मा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री योगात्मा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५६८॥

रहो ज्ञान से हर जगह, मन में करो मुकाम।
पूज्य ज्ञानसर्वग जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री ज्ञानसर्वग-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५६९॥

निज ध्यायो एकाग्र हो, मन मंदिर के प्राण।
प्रधान प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्रधान-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५७०॥

ज्ञान स्वरूपी आत्मा, ज्ञान आत्म के प्राण।
आत्मा प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री आत्मा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५७१॥
समवसरण के हो धनी, सहज करो कल्याण।
प्रकृति प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्रकृति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५७२॥
परम-परम उत्कृष्ट हो, परम लक्ष्मी धाम।
पूज्य परम प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री परम-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५७३॥
परम उदय धारण करो, परम करो कल्याण।
परमोदय प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री परमोदय-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५७४॥
कर्म बंध क्षय कर चुके, क्षीण किया अज्ञान।
प्रक्षीणबंध प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्रक्षीणबन्ध-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५७५॥
कामदेव के शत्रु हो, सुशील आतमराम।
कामारि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कामारि-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५७६॥
करते जग कल्याण हो, शान्ति सुधा दो दान।
पूज्य क्षेमकृत नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री क्षेमकृत-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५७७॥
शान्ति रूप उपदेश है, शान्ति रूप निज ज्ञान।
क्षेमशासन प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री क्षेमशासन-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५७८॥

आप स्वयं ओंकार हो, ओम् रूप निज ज्ञान।
प्रणव प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री प्रणव-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५७९॥

जीव मात्र के मित्र हो, हम सबके प्रिय धाम।
प्रणय प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री प्रणय-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५८०॥

प्रियवर तुम बिन क्या जिएँ, हम सब के तुम प्राण।
प्राण प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री प्राण-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५८१॥

प्राणदान हमको दिया, हो दयालु भगवान।
प्राणद प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री प्राणद-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५८२॥

नत इन्द्रों के नाथ हो, भव्यों के भगवान।
प्रणतेश्वर प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री प्रणतेश्वर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५८३॥

प्रमाण नय मय हैं वचन, आतम लोक प्रमाण।
प्रमाण प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री प्रमाण-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५८४॥

योगी की चिंतन निधि, हो मर्मज्ञ महान।
प्रणधि प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री प्रणधि-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५८५॥

मोक्ष प्राप्ति में दक्ष हो, समक्ष सामर्थवान।
दक्ष प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री दक्ष-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५८६॥

सरल सहज समभाव हो, दक्षिण भाव समान।
दक्षिण प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री दक्षिण-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५८७॥

ज्ञान यज्ञ में कर रहे, पाप कर्म का होम।
अध्वर्यु प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अध्वर्यु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५८८॥

दिग्दर्शक सन्मार्ग के,करो आत्म-विश्राम।
अध्वर प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अध्वर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५८९॥

हमको परमानन्द के, दो आनन्द निधान।
आनन्द प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री आनन्द-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५९०॥

हम सब को आनन्द दो, सुखनन्दन श्री धाम।
नन्दन प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दन-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५९१॥

स्वयं रूप आनन्द हो, नन्द छंद आनन्द।
नन्द प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री नन्द-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५९२॥

जगत वंद्य स्तुत्य हो, पग में झुके जहान।
पूज्य वंद्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री वंद्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५९३॥

दोष अठारह से रहित, निन्दा का क्या काम।
अनिंद्य प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अनिंद्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५९४॥

अभिनन्दन जिनका करें, आनन्दों के धाम।
अभिनन्दन प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दन-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५९५॥

कामदेव को जय किए, करके काम तमाम।
पूज्य कामहा नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री कामहा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५९६॥

भव्य प्राणियों के करो, इच्छा पूरण काम।
पूज्य कामदा नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री कामदा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५९७॥

बहुत मनोहर आप हो, चाहे तुम्हें जहान।
पूज्य काम्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री काम्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५९८॥

मनवांछित वस्तु दिए, किए भक्त के काम।
कामधेनु प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री कामधेनु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५९९॥

रागादिक अरि के जयी, मन में करो मुकाम।
अरिञ्जय प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अरिञ्जय-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६००॥

बिना किसी संस्कार के, सुन्दर हो भगवान।
असंस्कृतसुसंस्कार को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री असंस्कृतसुसंस्कार-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६०१॥

नग्न दिगम्बर हो अतः, प्रकृति से उत्पन्न।
प्राकृत प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री प्राकृत-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६०२॥

रागादिक का अंत कर, चखे भेद-विज्ञान।
वैकृतान्तकृत नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री वैकृतान्तकृत-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६०३॥

जन्म मरण का अंत कर, सुगम करो शिवधाम।
पूज्य अंतकृत नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अंतकृत-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६०४॥

वाणी सुन्दर कान्ति है, हम तो करें प्रणाम।
कान्तगु प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री कान्तगु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६०५॥

परमौदारिक देह है, अतिशय कान्तिमान।
पूज्य कान्त प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री कान्त-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६०६॥

चिन्तामणि के समान हो, दो इच्छित वरदान।
चिन्तामणि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणि-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६०७॥

दाता इष्ट पदार्थ के, स्वर्ग मोक्ष दो दान।
पूज्य अभीष्टद नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अभीष्टद-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६०८॥

काम क्रोध इत्यादि से, अजित रहे भगवान।
पूज्य अजित प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अजित-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६०९॥

ब्रह्म विहारी हो चुके, विजित किया जब काम।
जितकामारि नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री जितकामारि-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६१०॥

अनन्त ज्ञानादिक रहे, अमित गुणों की खान।
पूज्य अमित प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अमित-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६११॥

अनन्त है मिट न सके, जिनशासन जिन नाम।
पूज्य अमितशासन जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अमितशासन-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६१२॥

क्रोध विजेता आप हो, हमें क्षमा दो दान।
जितक्रोध प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री जितक्रोध-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६१३॥

कर्म विजेता आप हो, भक्त मित्र भगवान।
जितामित्र प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री जितामित्र-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६१४॥

क्लेश विजेता आप हो, हरो क्लेश संग्राम।
जितक्लेश प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री जितक्लेश-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६१५॥

यम अंतक जीता अतः, जीत गए मैदान।
पूज्य जितान्तक नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री जितान्तक-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६१६॥

गणधर मुनिवर आदि के, जिन है इन्द्र महान।
जिनेन्द्र प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६१७॥

परम परम आनन्द हो, परमेष्ठी भगवान।
परमानन्द प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री परमानन्द-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६१८॥

मुनियों के प्रभु इन्द्र है, मुनि दीक्षा दो दान।
मुनीन्द्र प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री मुनीन्द्र-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६१९॥

दिव्या देशना आपकी, दुंदुभि के है समान।
दुंदुभिस्वन नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री दुंदुभिस्वन-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६२०॥

इन्द्र महेन्द्रों से रहे, वंदित जिन भगवान।
महेन्द्रवंद्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री महेन्द्रवंद्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६२१॥

महा योगियों के रहे, इन्द्र जिनेन्द्र महान।
योगेन्द्र प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री योगेन्द्र-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६२२॥

यतियों के प्रभु इन्द्र हैं, महायत्न के धाम।
यतीन्द्र प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री यतीन्द्र-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६२३॥

नाभि के नन्दन तुम्हीं, जग के पिता समान।
नाभिनन्दन नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री नाभिनन्दन-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६२४॥

नाभिराज के पुत्र हो, हम तेरी संतान।
नाभेय प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री नाभेय-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६२५॥

नाभिराज के वंश में, हुए आप उत्पन्न।
नाभिज प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री नाभिज-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६२६॥

जन्म रहित जन्मे तुम्हीं, कुलदीपक भगवान।
अजात प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अजात-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६२७॥

अपने व्रत सुव्रत किए, मुनिसुव्रत दो दान।
सुव्रत प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सुव्रत-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६२८॥

कर्मभूमि का सच दिया, मोक्षमार्ग का ज्ञान।
मनु प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री मनु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६२९॥

उत्तम के उत्तम रहे, दोष रहित गुणधाम।
उत्तम प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६३०॥

नाथ! आपका कोई भी, भेद सके न नाम।
अभेद्य प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अभेद्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६३१॥

नाश रहित अविनाश हो, शाश्वत हो भगवान।
अनत्यय प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अनत्यय-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६३२॥

तपश्चरण करते महा, रुके न हुई थकान।
अनाश्वान प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अनाश्वान-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६३३॥

पूज्य रहे सबसे अधिक, वीतराग भगवान।
अधिक प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अधिक-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६३४॥

सर्वोत्तम उपदेश दे, करते गुरु कल्याण।
अधिगुरु प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अधिगुरु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६३५॥

गौ माता जैसी रही, जिनवाणी जिननाम।
सुगी प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुगी-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६३६॥

अद्भुत मेधा धार के, बाँटो सम्यग्ज्ञान।
पूज्य सुमेधा नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुमेधा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६३७॥

महापराक्रम कर रहे, करो कर्म का हान।
विक्रमी प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विक्रमी-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६३८॥

निज-पर के स्वामी तुम्हीं, दो यथार्थ का ज्ञान।
स्वामी प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री स्वामी-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६३९॥

कौन आपका कर सके, पूर्ण निवारण काम।
दुराधर्ष प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री दुराधर्ष-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६४०॥

जग में कुछ उत्साह ना, करते आतम ध्यान।
निरुत्सुक प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री निरुत्सुक-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६४१॥

जग में आप विशेष हो, मंगलमय भगवान।
विशिष्ट प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विशिष्ट-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६४२॥

शिष्ट जनों को पालते, सज्जन के भगवान।
पूज्य शिष्टभुक् नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री शिष्टभुक्-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६४३॥

सब दोषों से हो रहित, इष्ट रहे भगवान।
शिष्ट प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री शिष्ट-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६४४॥

प्रत्यय हो प्रत्यय नहीं, बाँटो आतमज्ञान।
प्रत्यय प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री प्रत्यय-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६४५॥

रम्य मनोहर रूप है, कामन हो ना काम।
कामन प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री कामन-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६४६॥

पाप रहित पुण्यात्मा, पुण्यवान भगवान।
अनघ प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अनघ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६४७॥

क्षमारूप दुख क्रोध हर, पाए मोक्ष मुकाम।
क्षेमी प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री क्षेमी-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६४८॥

क्षेमंकर कल्याण कर, सबको किए प्रसन्न।
क्षेमंकर प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री क्षेमंकर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६४९॥

कभी नहीं क्षय हो सको, अक्षय हो भगवान।
अक्षय प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अक्षय-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६५०॥

मंगलकारी आप हो, जिनशासन के प्राण।
क्षेमधर्मपति नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री क्षेमधर्मपति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६५१॥

हरो क्रोध की आग तुम, खिले आत्म बागान।
क्षमी प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री क्षमी-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६५२॥

इन्द्रियों के अग्राह्य हो, जाने ना अज्ञान।
अग्राह्य प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अग्राह्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६५३॥

मिथ्याज्ञान न जानता, जाने निश्चय ज्ञान।
ज्ञाननिग्राह्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञाननिग्राह्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६५४॥

आप नमोऽस्तु योग्य हो, जान सके बस ध्यान।
ध्यानगम्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री ध्यानगम्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६५५॥

उत्तर का उत्तर रहे, किन्तु निरुत्तर नाम।
पूज्य निरुत्तर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री निरुत्तर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६५६॥

पुण्यवान दो पुण्य को, सुकृत के वरदान।
सुकृती प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सुकृती-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६५७॥

शब्दों के भण्डार हो, धातु शब्द की खान।
पूज्य धातु प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री धातु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६५८॥

तुम ही पूजा योग्य हो, पूज्य करो भगवान।
इज्यार्ह प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री इज्यार्ह-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६५९॥

सभी नयों को जानते, प्रमाण को रख ध्यान।
सुनय प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सुनय-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६६०॥

एकमुखी होकर दिखो ,चतुर्मुखी भगवान।
चतुरानन प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री चतुरानन-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६६१॥

दोनों लक्ष्मी के रहे, प्रभु निवास स्थान।
श्रीनिवास प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री श्रीनिवास-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६६२॥

समवसरण में एक मुख, दिखते चारों धाम।
चतुर्वक्त्र प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्वक्त्र-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६६३॥

चार-चार मुख दिख रहे, एकमुखी भगवान।
चतुरास्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री चतुरास्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६६४॥

दिखे चतुर्मुख चतुर के, अंतर्मुख भगवान।
पूज्य चतुर्मुख नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्मुख-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६६५॥

सत्यस्वरूपी आत्मा, करते जग कल्याण।
सत्यात्मा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सत्यात्मा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६६६॥

किया पराजित झूठ को, दिया सत्यविज्ञान।
पूज्य सत्यविज्ञान को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सत्यविज्ञान-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६६७॥

सत्य सप्त भंगी वचन, दे यथार्थ विज्ञान।
सत्यवाक् प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सत्यवाक्-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६६८॥

सत्यरूप शासन रहा, सत्यरूप भगवान।
पूज्य सत्यशासन जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सत्यशासन-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६६९॥

प्रत्याशी हो सत्य के, फल दो आशावान।
सत्याशी प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सत्याशी-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६७०॥

सत्य प्रतिज्ञा बद्ध हो, करो सत्य संधान।
पूज्य सत्यसंधान को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सत्यसंधान-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६७१॥

सत्यस्वरूपी मोक्ष हो, सत्यमयी भगवान।
पूज्य सत्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सत्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६७२॥

पारंगत हो सत्य में, सत्य रूप हैं प्राण।
सत्यपरायण नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सत्यपरायण-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६७३॥

स्थायी अत्यंत हो, स्थिर हो भगवान।
स्थेयान प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री स्थेयान-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६७४॥

औदारिक स्थूल हो, दूर जगत से जान।
स्थवीयान प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री स्थवीयान-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६७५॥

भक्तों के तो पास हो, भक्तों के भगवान।
नेदीयान प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री नेदीयान-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६७६॥

पापों से तो दूर हो, पुण्यों की हो खान।
दवियान प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री दवियान-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६७७॥

भक्त दूर दर्शन करें, दर्शन दो भगवान।
दूरदर्शन प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री दूरदर्शन-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६७८॥

अणुओं से भी सूक्ष्म हो, बहुत बड़े भगवान।
अणोरणीयान नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अणोरणीयान-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६७९॥

सूक्ष्म नहीं हो आप सो, सूक्ष्म तत्त्व दो दान।
आनणु प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री आनणु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६८०॥

जगत गुरु सबसे बड़े, परम पूज्य भगवान।
आद्यगुरु प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री आद्यगुरु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६८१॥

सदा योग के रूप हो, योगीश्वर भगवान।
सदायोग प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सदायोग-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६८२॥

सदाभोग निज का करो, सदानन्द भगवान।
सदाभोग प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सदाभोग-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६८३॥

सदा तृप्त निज में रहो, संतोषी भगवान।
सदातृप्त प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सदातृप्त-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६८४॥

सत्यशिवम् सुन्दर रहे, शिव स्वरूप भगवान।
सदाशिव प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सदाशिव-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६८५॥

चतुर्गति के दुख हरो, रहो सदा गतिज्ञान।
पूज्य सदागति नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सदागति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६८६॥

अनन्त सुख में लीन हो, सुखस्वरूप भगवान।
सदासौख्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सदासौख्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६८७॥

ज्ञान स्वरूपी हो सदा, विद्यमान भगवान।
सदाविद्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सदाविद्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६८८॥

सदा उदय रूपी रहे, हरो उदय के धाम।
पूज्य सदोदय नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सदोदय-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६८९॥

वचन शब्द सुन्दर रहे, दिव्यघोष के नाम।
सुघोष प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सुघोष-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६९०॥

सुन्दर मुखड़ा चाँद सा, चन्द्रमुखी भगवान।
सुमुख प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सुमुख-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६९१॥

आकर्षक हो शान्त हो, करते शान्ति प्रदान।
सौम्य प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सौम्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६९२॥

सुख बाँटो सुख से रहो, हरो दुखों की खान।
सुखद प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सुखद-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६९३॥

जगतहितैषी आप हो, हित-मित-प्रिय भगवान।
सुहित प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सुहित-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६९४॥

हितकारी निर्मल रहे, हिय में विराजमान।
सुहृत प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सुहृत-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६९५॥

मिथ्यादृष्टि आपको, कभी सकें ना जान।
सुगुप्त प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सुगुप्त-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६९६॥

पालन करके गुप्तियाँ, गुप्त हुए भगवान।
पूज्य गुप्तिभृत नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री गुप्तिभृत-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६९७॥

पापों से खुद गुप्त हो, करते गुप्त जहान।
गोप्ता प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री गोप्ता-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६९८॥

त्रय जग के अध्यक्ष हो, लोक निहारे ज्ञान।
लोकाध्यक्ष प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री लोकाध्यक्ष-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६९९॥

इन्द्रिय-मन का दमन कर, तप से लगा लगाम।
पूज्य दमीश्वर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री दमीश्वर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७००॥

इन्द्रों के गुरुवर तुम्हीं, ज्ञानी के हो ज्ञान।
बृहद्बृहस्पति नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री बृहद्बृहस्पति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७०१॥

हर त्रस तो वक्ता रहा, आप विलक्षण ज्ञान।
वाग्मी प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री वाग्मी-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७०२॥

जिनवाणी के नाथ तुम, स्वामी ज्ञान निधान।
वाचस्पति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री वाचस्पति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७०३॥

उदार बुद्धि है आपकी, रखते सबके ध्यान।
उदारधी प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री उदारधी-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७०४॥

महा मनीषी आप हो, सबसे बुद्धिमान।
पूज्य मनीषी नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री मनीषी-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७०५॥

चिंता से अति दूर हो, चिंतन ये सम्पन्न।
धिषण प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री धिषण-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७०६॥

चतुर विवेकी आप हो, बुद्धिमान विद्वान।
धीमान् प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री धीमान्-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७०७॥
स्वामी हो धी बुद्धि के, चित चैतन्य मुकाम।
शेमुशीष प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री शेमुशीष-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७०८॥
हर भाषा को जानते, ज्ञानवान भगवान।
गिराम्पति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री गिराम्पति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७०९॥
अनेकान्त स्याद्वाद के, रूप रहे भगवान।
नैकरूप प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री नैकरूप-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७१०॥
प्रमाण की धरती रही, नय है शिखर समान।
नयोतुंग प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री नयोतुंग-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७११॥
एक आत्मा आपकी, किन्तु नन्त गुणधाम।
नैकात्मा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री नैकात्मा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७१२॥
अनेकान्तमय धर्म है, दिया यही विज्ञान।
नैकधर्मकृत नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री नैकधर्मकृत-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७१३॥
साधारण से लोग जो, तुम्हें सके ना जान।
अविज्ञेय प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अविज्ञेय-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७१४॥

तर्क वितर्क सब शान्त हों, पाकर तेरा ज्ञान।
अप्रतर्क्यात्मा नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अप्रतर्क्यात्मा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७१५॥
ज्ञाता के हर कृत्य के, कृतकृत्य भगवान।
कृतज्ञ प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कृतज्ञ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७१६॥
सुलक्षणों से सहित हो, अद्भुत है पहचान।
कृतलक्षण प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कृतलक्षण-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७१७॥
तीन ज्ञान है गर्भ में, अंतरंग निज ज्ञान।
ज्ञानगर्भ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री ज्ञानगर्भ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७१८॥
गर्भ समय में भी हुए, जिनवर दया निधान।
दयागर्भ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री दयागर्भ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७१९॥
गर्भ समय के पूर्व से, रत्नवृष्टि हो धन्य।
रत्नगर्भ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री रत्नगर्भ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७२०॥
प्रभावशाली लोक में, अतिशय दीप्तिमान।
प्रभास्वर प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्रभास्वर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७२१॥
पद्माकृति माँ गर्भ में, अवतारे भगवान।
पद्मगर्भ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पद्मगर्भ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७२२॥

जगत आपके गर्भ में, झलका ले निज ज्ञान।
जगत्-गर्भ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जगत्-गर्भ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७२३॥

गर्भ समय वर्षा हुई, निर्मल स्वर्ण समान।
हेम गर्भ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री हेमगर्भ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७२४॥

सुन्दर जिनदर्शन रहा, सम्यग्दर्शन यान।
पूज्य सुदर्शन नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुदर्शन-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७२५॥

समवसरण ऐश्वर्य से, सहित रहे धनवान।
लक्ष्मीवान प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री लक्ष्मीवान-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७२६॥

देवों के अध्यक्ष हो, इन्द्रों के भगवान।
त्रिदशाध्यक्ष प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री त्रिदशाध्यक्ष-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७२७॥

दृढ़ होकर व्रत पालते, भय से ना भयवान।
दृढ़ीयान प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री दृढ़ीयान-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७२८॥

स्वामी हो सो आपको, इन कहते इन्सान।
इन प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री इन-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७२९॥

तेज तपस्या की निधि, ऐश्वर्य से सम्पन्न।
ईशिता प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री ईशिता-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७३०॥

भव्यों के मन हर रहे, चित्त चोर भगवान।
पूज्य मनोहर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री मनोहर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७३१॥
सुन्दर तन मन अंग है, सुन्दर है प्रभु नाम।
मनोज्ञांग प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री मनोज्ञांग-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७३२॥
बाधाओं से ना डरें, धैर्यवान भगवान।
धीर प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री धीर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७३३॥
धीर वीर गंभीर हैं, जिनशासन भगवान।
गंभीरशासन नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री गंभीरशासन-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७३४॥
आप धर्मस्तम्भ हो, करो मोक्ष निर्माण।
धर्मयूप प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मयूप-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७३५॥
दयाजगत पर कर करो, दया यज्ञ भगवान।
दयायाग प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री दयायाग-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७३६॥
श्रेष्ठ धर्म रथ की धुरा, थामे हो भगवान।
धर्मनेमि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मनेमि-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७३७॥
मुनियों के ईश्वर रहे, मुनिसुव्रत दो दान।
पूज्य मुनीश्वर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री मुनीश्वर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७३८॥

धर्मचक्र हथियार ले, करते काम तमाम।
धर्मचक्रायुध नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मचक्रायुध-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७३९॥
क्रीड़ा परमानन्द में, करते हो दिन रैन।
पूज्य देव प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री देव-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७४०॥
आप शुभाशुभ कर्म को, नष्ट करो भगवान।
पूज्य कर्महा नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कर्महा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७४१॥
करो धर्म की घोषणा, जिससे सुख आसान।
धर्मघोषण नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मघोषण-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७४२॥
जिनवाणी को लांघना, कार्य असम्भव मान।
अमोघवाक् प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अमोघवाक्-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७४३॥
जिन आज्ञा निष्फल नहीं, किन्तु करे कल्याण।
अमोघाज्ञ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अमोघाज्ञ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७४४॥
सभी तरह मल रहित हो, निर्मल दो स्थान।
निर्मल प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री निर्मल-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७४५॥
जिनशासक ना व्यर्थ हो,किन्तु मोक्ष दे दान।
अमोघशासन नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अमोघशासन-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७४६॥

शान्त राग रुचि रूप हो, रूपवान भगवान।
सुरूप प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सुरूप-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७४७॥

ज्ञानवान अतिशय रहे, क्षीण किया अज्ञान।
सभगप्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सभग-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७४८॥

पर के त्यागी आप हो, देकर चारों दान।
त्यागी प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री त्यागी-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७४९॥

समय रूप जिनधर्म है, ज्ञाता हैं भगवान।
समयज्ञ प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री समयज्ञ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७५०॥

समाधान सिद्धांत के, आतम के हो ध्यान।
पूज्य समाहित नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री समाहित-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७५१॥

आप अचल निश्चल रहे, सुखरमणी के धाम।
सुस्थित प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सुस्थित-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७५२॥

निज में निश्चल स्वस्थ हो, दो निरोग स्थान।
स्वास्थ्यभाक् प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री स्वास्थ्यभाक्-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७५३॥

आतम में स्थित रहो, करते स्वस्थ जहान।
स्वस्थ्य प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री स्वस्थ्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७५४॥

कर्म धूल से रहित हो, नीरज हो भगवान।
नीरजस्क प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री नीरजस्क-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७५५॥

तुमरा स्वामी कोई न, तुम सबके भगवान।
निरुद्धव प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री निरुद्धव-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७५६॥

कर्मलेप से रहित हो, जल में कमल समान।
अलेप प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अलेप-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७५७॥

कर्म कलंकों से रहित, शुद्धातम भगवान।
निष्कलंकात्मा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री निष्कलंकात्मा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७५८॥

बीत गया है राग से, वीतराग विज्ञान।
वीतराग प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री वीतराग-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७५९॥

इच्छा आशा से रहित, निस्पृह हो भगवान।
पूज्य गतस्पृह नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री गतस्पृह-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७६०॥

इन्द्रियों को वश में किया, बने वीर भगवान।
वश्येन्द्रिय प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री वश्येन्द्रिय-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७६१॥

जग बंधन से मुक्त हो, मुक्त करें भगवान।
विमुक्तात्मा नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विमुक्तात्मा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७६२॥

पतन भाव से रहित हो, देते उच्च स्थान।
निःसपत्न प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री निःसपत्न-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७६३॥
विजित इन्द्रियों को किया, मन पर लगा लगाम।
पूज्य जितेन्द्रिय नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जितेन्द्रिय-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७६४॥
राग द्वेष को शान्त कर, रहते सदा प्रसन्न।
प्रशान्त प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्रशान्त-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७६५॥
अनन्त भव को त्याग कर, पाया अनन्त धाम।
अनन्तधाम प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अनन्तधाम-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७६६॥
मंगलमय मंगल करण, विघ्न अमंगल हान।
मंगल प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री मंगल-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७६७॥
पाप मलों को हर रहे, दो पुण्यों की खान।
मलहा प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री मलहा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७६८॥
अघ पापों से दूर हो, पाप मुक्त भगवान।
अनघ प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अनघ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७६९॥
अन्य कोई भी है नहीं, जग में आप समान।
पूज्य अनीदृग नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अनीदृग-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७७०॥

सबके उपमा योग्य हो, चंदा सूर्य समान।
उपमाभूत प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री उपमाभूत-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७७१॥

महाभाग्यशाली रहे, प्रबल पुण्य वरदान।
दिष्टि प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री दिष्टि-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७७२॥

आप स्तुति योग्य हो, भाग्योदय भगवान।
पूज्य दैव प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री दैव-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७७३॥

इन्द्रिय वचनों से तुम्हें, कोई सके न जान।
पूज्य अगोचर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अगोचर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७७४॥

आप देह से हो रहित, पर से रहित महान।
अमूर्त प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अमूर्त-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७७५॥

होकर पुरुषाकार हो, आप हुए भगवान।
मूर्तिमान प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री मूर्तिमान-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७७६॥

अद्वितीय प्रभु आप हो, एक रूप भगवान।
एक प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री एक-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७७७॥

एक नहीं प्रभु आप हो, हो अनेक भगवान।
नैक प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री नैक-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७७८॥

विश्व तत्त्व जानो मगर, करो न उनका ध्यान।
नानैकतत्त्वदृग नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री नानैकतत्त्वदृग-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७७९॥

जिन आगम अध्यात्म से, जाने संत महान।
अध्यात्मगम्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अध्यात्मगम्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७८०॥

तुम्हें जगत के लोग तो, कभी सके ना जान।
अगम्यात्मा नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अगम्यात्मा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७८१॥

जानकार हो योग के, योगीश्वर भगवान।
पूज्य योगवित् नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री योगवित्-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७८२॥

संत योगियों से रहे, वंदित भी भगवान।
योगिवंदित नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री योगिवंदित-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७८३॥

व्याप्त रहे सर्वत्र में, पाकर केवलज्ञान।
सर्वत्रग प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वत्रग-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७८४॥

विद्यमान रहते सदा, करके आतम ध्यान।
सदाभावी प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सदाभावी-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७८५॥

तीन काल त्रयलोक को, देख रहे भगवान।
त्रिकाल-विषयार्थदृक् नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिकाल-विषयार्थदृक्-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७८६॥

शाश्वत सुखकर्ता तुम्हीं, हरते दुख तूफान।
शंकर प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री शंकर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७८७॥

यथार्थ सुख दर्शा रहे, बता रहे दे ज्ञान।
शंवद प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री शंवद-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७८८॥

चंचल मन को दे सजा, सजा दिया निज ज्ञान।
पूज्य दांत प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री दांत-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७८९॥

इन्द्रियों के व्यापार का, दमन किए भगवान।
पूज्य दमी प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री दमी-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७९०॥

क्षमा धर्म में हो निपुण, समता के भगवान।
क्षान्तिपरायण नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री क्षान्तिपरायण-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७९१॥

अधिपति हो संसार के, ध्यानी के हो ध्यान।
पूज्य अधिप प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अधिप-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७९२॥

डूबो परमानन्द में, सुखी-सुखी भगवान।
परमानन्द प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री परमानन्द-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७९३॥

निज पर के ज्ञाता तुम्हीं, हो विशुद्ध भगवान।
परात्मज्ञ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री परात्मज्ञ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७९४॥

जग में सबसे श्रेष्ठ हो, पर से हो अति भिन्न।
पूज्य परात्पर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री परात्पर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७९५॥
त्रैलोकों को हो प्रिय, हो सुन्दर छविमान।
त्रिजगद्वल्लभ नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री त्रिजगद्वल्लभ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७९६॥
पूज्यों के भी पूज्य हो, परम पूज्य भगवान।
पूज्य अभ्यर्च्य नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अभ्यर्च्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७९७॥
त्रय जग का मंगल करो, मंगलमय भगवान।
त्रिजगन्-मंगलोदय तुम्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री त्रिजगन्-मंगलोदय-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७९८॥
इन्द्र पूजते पद कमल, कमलासन भगवान।
त्रिजगत्पतिपूज्यांघ्रि को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री त्रिजगत्पतिपूज्यांघ्रि-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७९९॥
तीन लोक के हो शिखर, लोकाग्र विराजमान।
लोकाग्र शिखामणि नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री लोकाग्रशिखामणि-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८००॥
भूत भविष्यत् आज के, ज्ञाता-दृष्टाराम।
त्रिकालदर्शि नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री त्रिकालदर्शि-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८०१॥
तीन लोक के ईश हो, हम पर दो कुछ ध्यान।
लोकेश प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री लोकेश-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८०२॥

रक्षक हो इस लोक के, हमें शरण दो दान।
पूज्य लोकधाता तुम्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री लोकधाता-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८०३॥
अपने व्रत सुव्रत किए, दृढ़ व्रत किए महान।
दृढ़व्रत प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री दृढ़व्रत-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८०४॥
जग में सर्वोत्कृष्ट हो, लोक शिरोमणि धाम।
सर्वलोकातिग् नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सर्वलोकातिग्-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८०५॥
तुम तो पूजा योग्य हो, पूज्य न आप समान।
पूज्य पूज्यप्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पूज्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८०६॥
निज गजरथ के सारथी, हम सब के हो प्राण।
सर्वलौकैकसारथि, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सर्वलौकैकसारथि-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८०७॥
तुम सबसे प्राचीन हो, रहे सनातन धाम।
पुराण प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पुराण-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८०८॥
समवसरण में शोभते, तृप्त पुरुष भगवान।
पूज्य पुरुष भगवान को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पुरुष-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८०९॥
हुआ न कोई पूर्व में, ना हो आप समान।
पूज्य पूर्व प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पूर्व-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८१०॥

जिनवाणी विस्तार के, अंग पूर्व दो ज्ञान।
कृतपूर्वांगविस्तर तुम्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री कृतपूर्वांगविस्तर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८११॥

सब देवों में मुख्य हो, आदि देव भगवान।
आदिदेव प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री आदिदेव-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८१२॥

सभी पुराणों में प्रथम, है जिनेन्द्र का ज्ञान।
पुराणाद्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री पुराणाद्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८१३॥

तीर्थंकर हो तुम प्रथम, प्रथम देव भगवान।
परम पूज्य पुरुदेव को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री पुरुदेव-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८१४॥

सबसे पहले देव हो, देवों के भगवान।
अधिदेवता नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अधिदेवता-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८१५॥

वर्तमान के समय के, युग के हो भगवान।
परम पूज्य युगमुख्य को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री युगमुख्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८१६॥

इस युग में सबसे बड़े, तुम्ही ज्येष्ठ भगवान।
परम पूज्य युगज्येष्ठ को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री युगज्येष्ठ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८१७॥

कर्मभूमि आरंभ में, दिया धर्म का ज्ञान।
युगादिस्तिथिदेशक को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री युगादिस्तिथिदेशक-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८१८॥

कल्याणी काया रही, चमके स्वर्ण समान।
कल्याणवर्ग प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री कल्याणवर्ग-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८१९॥

प्रभु कल्याण स्वरूप हो, कल्याणों के धाम।
परम पूज्य कल्याण को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री कल्याण-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८२०॥

सुनो प्रार्थना भक्त की, करो जगत कल्याण।
पूज्य कल्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री कल्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८२१॥

मंगल स्वरूप आप हो, धारो गुण कल्याण।
कल्याणलक्षण नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री कल्याणलक्षण-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८२२॥

मंगलमय प्रकृति रही, स्वभाव है कल्याण।
कल्याणप्रकृति नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री कल्याणप्रकृति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८२३॥

कल्याणी है आत्मा, रोशन करे जहान।
दीप्तकल्याणात्मा तुम्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री दीप्तकल्याणात्मा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८२४॥

कल्मष से अति दूर हो, पाप रहित भगवान।
पूज्य विकल्मष नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विकल्मष-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८२५॥

कर्म कलंकों से रहित, करते काम तमाम।
विकलंक प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विकलंक-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८२६॥

कलाकार संसार है, कलातीत भगवान।
कलातीत प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कलातीत-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८२७॥
नाश किया हर पाप को, पुण्य निवास स्थान।
कलिलघ्न प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कलिलघ्न-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८२८॥
धरो बहत्तर जग कला, करो आत्म कल्याण।
पूज्य कलाधर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कलाधर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८२९॥
नाम कर्म के देव जो, उनके भी भगवान।
देवदेव प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री देवदेव-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८३०॥
आप जगत के नाथ हो, दीनानाथ महान।
जगन्नाथ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जगन्नाथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८३१॥
तीन लोक के बन्धु हो, हितकारी भगवान।
जगद्बंधु प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जगद्बन्धु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८३२॥
तीन लोक के हो विभु, जगदीश्वर भगवान।
जगद्विभु प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जगद्विभु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८३३॥
हितकारी हो जगत के, सबका रखते ध्यान।
जगत्-हितैषी प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जगत्-हितैषी-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८३४॥

ज्ञाता हो त्रयलोक के, करते आतम ध्यान।
परम पूज्य लोकज्ञ को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री लोकज्ञ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८३५॥
सभी जगह तो व्याप्त हो, पाकर केवलज्ञान।
सर्वग प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सर्वग-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८३६॥
जग के तुम अग्रज रहे, जन्मे मुख्य स्थान।
जगदग्रज प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जगदग्रज-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८३७॥
सकल चराचर के गुरु, सबको देते ज्ञान।
पूज्य चराचरगुरु तुम्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री चराचरगुरु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८३८॥
मन में स्थापित रहे, ऐसा है अरमान।
गोप्य प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री गोप्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८३९॥
गुप्त स्वरूपी आप हो, आतम के भगवान।
गूढ़ात्मा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री गूढ़ात्मा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८४०॥
गूढतत्व को जानते, दिए गूढ़ निज ज्ञान।
गूढ़गोचर प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री गूढ़गोचर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८४१॥
जन्म लिए तत्काल में, ऐसे बाल समान।
सद्योजात प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सद्योजात-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८४२॥

आप प्रकाश स्वरूप हो, आतम सूर्य समान।
प्रकाशात्मा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री प्रकाशात्मा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८४३॥

उज्ज्वल देदीप्यमान हो, जलती आग समान।
ज्वलज्ज्वलनसप्रभ नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री ज्वलज्ज्वलनसप्रभ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८४४॥

अन्धकार से दूर हो, तेजस सूर्य समान।
आदित्यवर्ण प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री आदित्यवर्ण-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८४५॥

आप सुनहरे से रहे, कंचन कान्तिमान।
भर्माभ प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री भर्माभ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८४६॥

दाता परमानन्द के, सुन्दर कान्तिमान।
सुप्रभ प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सुप्रभ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८४७॥

कंचन सी काया रही, कान्ति कनक समान।
कनकप्रभ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री कनकप्रभ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८४८॥

परमौदारिक देह में, सुवर्ण वर्ण सम जान।
सुवर्णवर्ण प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णवर्ण-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८४९॥

चेतन से उज्ज्वल रहे, स्फटिकमणि समान।
रुक्माभ प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री रुक्माभ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८५०॥

आप करोड़ों सूर्य सम, उज्ज्वल हो भगवान।
सूर्यकोटिसमप्रभ तुम्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सूर्यकोटिसमप्रभ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८५१॥
सूर्योदय सम आप हो, उज्ज्वल स्वर्ण समान।
तपनीयनिभ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री तपनीयनिभ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८५२॥
उच्चदेह को धारते, सचमुच मेरु समान।
पूज्य तुंग प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री तुंग-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८५३॥
बालभानु सम शोभते, स्वामी उदीयमान।
बालार्काभ प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री बालार्काभ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८५४॥
शीतल सौम्य सुशान्त हो, फिर भी अग्नि समान।
पूज्य अनलप्रभ नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अनलप्रभ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८५५॥
शाम नहीं पर शाम के, तुम हो मेघ समान।
सन्ध्याभ्रबभ्रु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सन्ध्याभ्रबभ्रु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८५६॥
आप अचेतन हो नहीं, फिर स्वर्ण समान।
हेमाभ प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री हेमाभ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८५७॥
ज्ञानचेतना में रमो, तपते स्वर्ण समान।
तप्तचामीकरच्छवि को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री तप्तचामीकरच्छवि-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८५८॥

उज्ज्वल उज्ज्वल देह में, चमको स्वर्ण समान।
निष्टप्तकनकच्छाय को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री निष्टप्तकनकच्छाय-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८५९॥

कंचन कान्तिमान हो, श्री जिनवर भगवान।
कनत्कांचनसन्निभ को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री कनत्कांचनसन्निभ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८६०॥

सोने जैसा रंग है, सोने जैसा ज्ञान।
हिरण्यवर्ण प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री हिरण्यवर्ण-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८६१॥

तन आभा है सुनहरी, चेतन सिद्ध समान।
स्वर्णाभ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री स्वर्णाभ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८६२॥

आत्म कुंभ है स्वर्ण सम, नीर भरा सुख ज्ञान।
शातकुंभनिभप्रभ तुम्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री शातकुंभनिभप्रभ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८६३॥

चेतन सिद्धों से रहे, आभा स्वर्ण समान।
द्युम्नाभ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री द्युम्नाभ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८६४॥

अभी-अभी उत्पन्न सम, दमको स्वर्ण समान।
जातरूपाभ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री जातरूपाभ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८६५॥

तपता सोना चमकता, जाम्बुनद है नाम।
तप्तजाम्बुनद्युति, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री तप्तजाम्बुनद्युति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८६६॥

तपे हुए धुलते हुए, सुन्दर स्वर्ण समान।
सुधौतकलधौतश्री नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सुधौतकलधौतश्री-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८६७॥

दीप्यमान हो दीप सम, स्व-पर प्रकाशक ज्ञान।
प्रदीप्त प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री प्रदीप्त-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८६८॥

हाटक कहते स्वर्ण को, उसके तेज समान।
हाटकद्युति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री हाटकद्युति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८६९॥

शिष्ट जनों के इष्ट हो, इष्टों के हो प्राण।
शिष्टेष्ट प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री शिष्टेष्ट-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८७०॥

पालो पोषो जगत को, हृष्ट-पुष्ट भगवान।
पुष्टिद प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्टिद-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८७१॥

पुष्ट हो पोषित करो, आप महा बलवान।
पूज्य पुष्ट प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्ट-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८७२॥

दर्शन दो स्पष्ट तुम, दो स्पष्ट मुकाम।
स्पष्ट प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री स्पष्ट-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८७३॥

शब्द वाक्य स्पष्ट हैं, स्पष्ट अक्षर ज्ञान।
स्पष्टाक्षर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री स्पष्टाक्षर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८७४॥

सबसे आप समर्थ हो, सक्षम हो भगवान।
परम पूज्य क्षम नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री क्षम-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८७५॥
कर्म शत्रु को घातते, हरो विघ्न के काम।
शत्रुघ्न प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री शत्रुघ्न-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८७६॥
इस दुनियाँ में आपका, कोई न शत्रु समान।
अप्रतिघ प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अप्रतिघ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८७७॥
जग से तुम कृतकृत्य हो, सफल किए हर काम।
अमोघ प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अमोघ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८७८॥
दिए धर्म उपदेश को, जिनशासक भगवान।
प्रशास्ता प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्रशास्ता-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८७९॥
संरक्षक हो विश्व के, रक्षक हो भगवान।
पूज्य शासिता नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री शासिता-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८८०॥
आप स्वयं उत्पन्न हो, दो जीवन का ज्ञान।
पूज्य स्वभू प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री स्वभू-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८८१॥
कामादिक को नष्ट कर, शान्त हुए भगवान।
शान्तिनिष्ट प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री शान्तिनिष्ट-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८८२॥

ऋषि मुनि यति अनगार के, आप ज्येष्ठ भगवान।
मुनिज्येष्ठ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री मुनिज्येष्ठ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८८३॥
सुख की शाश्वत धार के, आप रहे उत्थान।
शिवताति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री शिवताति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८८४॥
दाता हो कल्याण के, मोक्ष महल दो दान।
शिवप्रद प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री शिवप्रद-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८८५॥
शान्ति प्रदाता शान्ति दो, शान्तिनाथ भगवान।
शान्तिद प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री शान्तिद-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८८६॥
विघ्न उपद्रव शान्त कर, शान्त करो मन प्राण।
शान्तिकृत प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री शान्तिकृत-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८८७॥
कर्मों को क्षय कर हुए, शान्तिमूर्ति भगवान।
शान्तिप्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री शान्ति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८८८॥
निखर रहे चैतन्य से, कान्तियुक्त भगवान।
कान्तिमान प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कान्तिमान-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८८९॥
ऋद्धि-सिद्धि दो भक्त को, मनवांछित फलदान ।
कामितप्रद प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कामितप्रद-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८९०॥

श्रेयस के भण्डार हो, सुखसागर कल्याण।
श्रेयोनिधि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयोनिधि-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८९१॥

धर्मवृक्ष की नींव हो, मोक्षमहल के धाम।
अधिष्ठान प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अधिष्ठान-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८९२॥

कौन बनाए आप को, आप स्वयं भगवान।
अप्रतिष्ट प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अप्रतिष्ट-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८९३॥

पूज्य प्रतिष्ठित आप हो, सभी जगह भगवान।
प्रतिष्ठित प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री प्रतिष्ठित-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८९४॥

अतिशय स्थिर आप हो, डिग न सको भगवान।
सुस्थिर प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सुस्थिर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८९५॥

पद विहार से हो रहित, जब करते निज ध्यान।
स्थावर प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री स्थावर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८९६॥

निश्चल हो चारित्र में, श्रद्धालय के धाम।
स्थाणु प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री स्थाणु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८९७॥

लोक व्याप्त विस्तार है, विस्तृत हो भगवान।
प्रथियान् प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री प्रथियान्-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८९८॥

अतिशय आप प्रसिद्ध हो, सबसे कीर्तिमान।
पूज्य प्रथित प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री प्रथित-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८९९॥

बहुत बड़े प्रभु आप हो, कोई न आप समान।
परम पूज्य प्रथु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री प्रथु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९००॥

वस्त्र दिशाओं के धरे, रहते शिशु समान।
दिग्वासा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री दिग्वासा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९०१॥

वायु करधनी धार के, करो वात रसपान।
वातरशन प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री वातरशन-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९०२॥

निर्ग्रंथों के ईश हो, मुनियों के भगवान।
निर्ग्रन्थेश प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री निर्ग्रन्थेश-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९०३॥

दिशा वस्त्र भी त्याग के, करो सिद्ध निज ध्यान।
पूज्य निरम्बर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री निरम्बर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९०४॥

अंतरंग वहिरंग के, तजे काम धन धाम।
निश्किंचन प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री निश्किंचन-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९०५॥

मूर्च्छा-आशा से रहित, स्वयं पूर्ण भगवान।
निराशंस प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री निराशंस-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९०६॥

ज्ञान नयन को धारते, वीतराग विज्ञान।
ज्ञानचक्षु प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानचक्षु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९०७॥

पूर्ण रूप निर्मोह हो, मोहो सबको ध्यान।
पूज्य अमोमुह नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अमोमुह-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९०८॥

आत्म तेज के पुंज हो, तेजस्वी भगवान।
तेजोराशि नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री तेजोराशि-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९०९॥

अनन्त ओजस्वी रहे, करो पराक्रम ध्यान।
अनन्तौजा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तौजा-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९१०॥

सागर हो तुम ज्ञान के, किन्तु न लवण समान।
ज्ञानाब्धि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानाब्धि-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९११॥

सागर हो निज शील के, पूर्ण भ्रम विज्ञान।
शीलसागर प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री शीलसागर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९१२॥

तेज स्वरूपी आप हो, हरो अन्ध अज्ञान।
तेजोमय प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री तेजोमय-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९१३॥

अनन्त ज्योति धारण करो, मिट न सके प्रभु ज्ञान।
अमितज्योति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अमितज्योति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९१४॥

ज्योतिर्मय निर्ग्रन्थ हो, मूर्तिमान भगवान।
ज्योतिमूर्ति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री ज्योतिमूर्ति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९१५॥

ज्ञानप्रकाशी आप हो, हरो तिमिर अज्ञान।
पूज्य तमोपह नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री तमोपह-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९१६॥

तीन लोक के शीश के, तुम हो मुकुट समान।
जगच्चूड़ामणि नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री जगच्चूड़ामणि-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९१७॥

तेजस्वी हो ज्ञान से, निज-पर प्रकाशवान।
दीप्त प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री दीप्त-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९१८॥

अनन्तसुखी सम्पन्न हो, शाश्वत सुख दो दान।
शंवान् प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री शंवान्-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९१९॥

विघ्नविनाशक आप हो, अन्तराय के हान।
विघ्नविनायक नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विघ्नविनायक-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९२०॥

कल्मष पाप विनाश के, शुद्ध हुए भगवान।
कलिघ्न प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री कलिघ्न-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९२१॥

कर्मशत्रु का हंत कर, हो अरिहन्त महान।
कर्मशत्रुघ्न प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री कर्मशत्रुघ्न-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९२२॥

लोकालोक निहार के, देते सबमें ज्ञान।
लोकालोक-प्रकाशक को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री लोकालोकप्रकाशक-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९२३॥
निद्रा विजयी आप हो, मोह नींद ना जान।
अनिद्रालु प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अनिद्रालु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९२४॥
सभी प्रमादों से रहित, निज का कर संधान।
अतन्द्रालु प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अतन्द्रालु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९२५॥
निजस्वरूप की सिद्धि को, जाग्रत हो सावधान।
जागरूक प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जागरूक-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९२६॥
ज्ञान स्वरूपी आप हो, आतम के विज्ञान।
पूज्य प्रमामय नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्रमामय-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९२७॥
मोक्षलक्ष्मी के पति, अविनाशी अभिराम।
लक्ष्मीपति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री लक्ष्मीपति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९२८॥
जगत प्रकाशित कर रहे, पाकर आतमज्ञान।
जगज्ज्योति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जगज्ज्योति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९२९॥
धर्म रूप साम्राज्य के, राजा हो भगवान।
धर्मराज प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मराज-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९३०॥

प्रजा हितैषी आप हो, रखते सबका ध्यान।
पूज्य प्रजाहित नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री प्रजाहित-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९३१॥

इच्छा रखते मोक्ष की, रखते रुचि निर्माण।
मुमुक्षु प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री मुमुक्षु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९३२॥

बंध मोक्ष जानो तुम्हीं, दिए भेद विज्ञान।
बंधमोक्षज्ञ नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री बन्धमोक्षज्ञ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९३३॥

पंच इन्द्रियों को जय किए, हुए स्वतंत्र भगवान।
जिताक्ष प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री जिताक्ष-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९३४॥

कामदेव को जीत कर, हुए ब्रह्म-विज्ञान।
जितमन्मथ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री जितमन्मथ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९३५॥

शान्त रसिक के नृत्य में, नाच रहे भगवान।
प्रशान्तरसशैलूष को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री प्रशान्तरसशैलूष-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९३६॥

भव्यों के नायक तुम्हीं, मूलनायक भगवान।
भव्यपेटकनायक तुम्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री भव्यपेटकनायक-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९३७॥

कर्त्ता हो जिनधर्म के, धर्म प्रकाशक ज्ञान।
मूलकर्त्ता प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री मूलकर्त्ता-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९३८॥

अखिलविश्व की ज्योति हो, अनन्त ज्योति भगवान।
अखिलज्योति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अखिलज्योति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९३९॥
राग-द्वेष भव कर्म का, मल का करके हान।
मलघ्न प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री मलघ्न-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९४०॥
मूल हेतु हो मोक्ष के, मुक्ति के सोपान।
मूलकारण प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री मूलकारण-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९४१॥
सम्यक् वक्ता आप हो, देते सम्यग्ज्ञान।
आप्त प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री आप्त-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९४२॥
वाणी के ईश्वर रहे, हरो वचन संग्राम।
वागीश्वर प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री वागीश्वर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९४३॥
प्रभु कल्याण स्वरूप हो, दो क्षायिक श्रद्धान।
श्रेयान् प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री श्रेयान्-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९४४॥
वाणी कल्याणी रही, देती है सुख दान।
श्रायसोक्ति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री श्रायसोक्ति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९४५॥
वाणी में संदेह ना, सार्थक वचन प्रमाण।
निरुक्तवाक् प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री निरुक्तवाक्-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९४६॥

उत्तम वक्ता हो प्रखर, वाणी रही प्रधान।
प्रवक्ता प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री प्रवक्ता-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९४७॥

सभी तरह के जो वचन, उनके हो भगवान।
वचसामीश प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री वचसामीश-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९४८॥

कामदेव को जीत कर, किया काम आसान।
मारजित् प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री मारजित्-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९४९॥

विश्व तत्त्व को जानते, जानो ज्ञानाज्ञान।
विश्वभाववित् नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वभाववित्-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९५०॥

परमौदारिक तन धरो, चरमोत्तम तन धाम।
सुतनु प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सुतनु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९५१॥

ज्ञान शरीरी आप हो, छोड़े तन-मन-प्राण।
तनुनिर्मुक्त प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री तनुनिर्मुक्त-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९५२॥

आतम में तल्लीन हो, धारो सम्यग्ज्ञान।
सुगत प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सुगत-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९५३॥

दुर्नय के हंता तुम्हीं, नाशो मिथ्याज्ञान।
हतदुर्नय प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री हतदुर्नय-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९५४॥

अंतरंग बहिरंग की, श्री लक्ष्मी के धाम।
श्रीश प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री श्रीश-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९५५॥

नाथ आपके पद कमल, पूजें श्री श्रीमान।
श्री श्रितपादाब्ज नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री श्रितपादाब्ज-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९५६॥

आप नहीं भयवान हो, आप रहे भगवान।
वीतभीर प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री वीतभीर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९५७॥

भक्तों के भय दूर कर, अभयदान भगवान।
अभयंकर प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अभयंकर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९५८॥

सारे दोषों को हरो, दोषरहित भगवान।
उत्सन्नदोष प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री उत्सन्नदोष-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९५९॥

विघ्नों के हर्त्ता तुम्हीं, विघ्न रहित भगवान।
निर्विघ्न प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री निर्विघ्न-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९६०॥

निश्चल हो निश्चल करो, श्री निश्चल भगवान।
निश्चल प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री निश्चल-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९६१॥

सबको प्रिय अत्यंत हो, वात्सल्य के धाम।
लोकवत्सल प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री लोकवत्सल-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९६२॥

प्रश्नों के उत्तर रहे, लोकोत्तम भगवान।
लोकोत्तर प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री लोकोत्तर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९६३॥

लोकों के स्वामी रहे, निज का करके ज्ञान।
पूज्य लोकपति नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री लोकपति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९६४॥

देखो तत्त्व यथार्थ को, खोल ज्ञान के नैन।
लोकचक्षु प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री लोकचक्षु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९६५॥

अपार बुद्धि धारते, पाके आतम ज्ञान।
अपारधी प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अपारधी-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९६६॥

इस चंचल संसार में, धारो स्थिर ज्ञान।
धीरधी प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री धीरधी-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९६७॥

जान रहे सन्मार्ग को, मोक्षमार्ग दे दान।
बुद्धसन्मार्ग नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री बुद्धसन्मार्ग-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९६८॥

शुद्ध स्वरूपी आप हो, शुद्धातम के धाम।
पूज्य शुद्ध प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्ध-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९६९॥

सम्यक् वचन यथार्थ हैं, सत्यरूप भगवान।
सुनृतपूतवाक् नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सुनृतपूतवाक्-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९७०॥

बुद्धि पारगामी रहे, प्रज्ञारूप पुराण।
प्रज्ञापारमित नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्रज्ञापारमित-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९७१॥

प्रज्ञा श्रमण अरिहन्त हो, अतिशय बुद्धिमान।
प्राज्ञ प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्राज्ञ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९७२॥

मन विजय शिवमार्ग का, करते सदा प्रयत्न।
परम पूज्य यति नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री यति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९७३॥

वस में कर सब इन्द्रियाँ, हरो पाप अज्ञान।
नियमितेन्द्रिय प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री नियमितेन्द्रिय-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९७४॥

भद्र पुरुष हो पूज्य हो, अरिहन्ता भगवान।
भदन्त प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री भदन्त-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९७५॥

मंगलकारी आप हो, भद्रों के भगवान।
पूज्य भद्रकृत नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री भद्रकृत-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९७६॥

कपट रहित प्रभु आप हो, भद्र रूप परिणाम।
भद्र प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री भद्र-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९७७॥

कल्पलता तरु आप हो, वरद हस्त दो दान।
कल्पवृक्ष प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कल्पवृक्ष-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९७८॥

दिला रहे हर इष्ट को, इच्छित फल वरदान।
वरप्रद प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री वरप्रद-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९७९॥

उखाड़ फेंके आपने, कर्म शत्रु के धाम।
समुन्मूलित-कर्मारि को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री समुन्मूलितकर्मारि-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९८०॥

कर्म काष्ट सुलगा रहे, तुम तो अग्नि समान।
कर्मकाष्ठाशुशुक्षणि को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री कर्मकाष्ठाशुशुक्षणि-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९८१॥

क्रियाकाण्ड में हो कुशल, पाकर सम्यग्ज्ञान।
कर्मण्य प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री कर्मण्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९८२॥

कर्मठ हो चारित्र में, शूरवीर भगवान।
कर्मठ प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री कर्मठ-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९८३॥

सर्वोत्तम उत्कृष्ट हो, साँचे प्रकाशमान।
प्रांशु प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री प्रांशु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९८४॥

उपादेय वा हेय का, रखते साँचा ज्ञान।
हेयादेय-विचक्षण को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री हेयादेयविचक्षण-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९८५॥

निज की अनन्त शक्तियाँ, प्रकटाए भगवान।
अनन्तशक्ति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तशक्ति-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९८६॥

छिन्न-भिन्न के योग्य तो, कभी नहीं भगवान।
अच्छेद्य प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अच्छेद्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९८७॥

जन्म जरा वा मृत्यु के, नाशे तीनों ग्राम।
त्रिपुरारि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिपुरारि-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९८८॥

तीन काल त्रय लोक को, देख रहे भगवान।
त्रिलोचन प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोचन-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९८९॥

तीन नेत्र प्रभु धारते, चेतन दर्शन ज्ञान।
त्रिनेत्र प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिनेत्र-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९९०॥

तीन लोक के नाथ हो, जन्मे ले त्रय ज्ञान।
त्रयम्बक प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री त्रयम्बक-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९९१॥

तीन लोक के तत्त्व को, जान रहे भगवान।
त्र्यक्ष प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री त्र्यक्ष-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९९२॥

चरम चक्षु की बात क्या, नैना केवलज्ञान।
केवलज्ञानवीक्षण तुम्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री केवलज्ञानवीक्षण-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९९३॥

तेरा मेरा सभी का, हो मंगल कल्याण।
समन्तभद्र प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री समन्तभद्र-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९९४॥

कर्म शत्रु को शान्त कर, जग विजयी भगवान।
शान्तारि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तारि-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९९५॥

श्री धार्मिक आचार्य दो, शिक्षा दीक्षा दान।
धर्माचार्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री धर्माचार्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९९६॥

सब पर करते हो दया, दयासिन्धु भगवान।
दयानिधि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री दयानिधि-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९९७॥

सूक्ष्म तत्त्व को देखते, सबको दो विज्ञान।
सूक्ष्मदर्शी प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सूक्ष्मदर्शी-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९९८॥

अनंग विजेता आप हो, तुमसे हारा काम।
जितानंग प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री जितानंग-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९९९॥

करो सभी पर तुम कृपा, कृपासिन्धु भगवान।
कृपालु प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री कृपालु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०००॥

उपदेशक हो धर्म के, देते आत्मिक ध्यान।
पूज्य धर्मदेशक तुम्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मदेशक-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१००१॥

मोक्षरूप शुभ लाभ दो, दो चेतन धन दान।
शुभंयु प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री शुभंयु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१००२॥

सुख को निज आधीन कर, सुख साता दो दान।
सुखसाद्‌भूत प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुखसाद्‌भूत-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१००३॥
पुण्यफला अरिहन्त हो, पुण्य कोश भगवान।
पुण्यराशि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पुण्यराशि-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१००४॥
आमय कहते रोग को, रोग रहित भगवान।
पूज्य अनामय नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अनामय-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१००५॥
रक्षा करके धर्म की, पालो सकल जहान।
धर्मपाल प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मपाल-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१००६॥
जग का पालन कर रहे, मोक्षमार्ग दे दान।
जगत्पाल प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जगत्पाल-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१००७॥
धर्म रूप साम्राज्य के, नायक हैं भगवान।
धर्मसाम्राज्यनायक तुम्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मसाम्राज्यनायक-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१००८॥
वचन अगोचर आप हो, दिए इष्ट फलदान।
अगोचर प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अगोचर-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१००९॥
स्वामी इस संसार के, जगत बन्धु भगवान।
जगद्‌बन्धु प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जगद्‌बन्धु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०१०॥

तन-मन के हर रोग को, दूर करें भगवान।
जगत्-वैद्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जगत्वैद्य-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०११॥

जग की रक्षा कर करो, भक्तों का कल्याण।
जगत्-घाता प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जगत्घाता-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०१२॥

जग का हित करते तुम्हीं, देते हो वरदान।
पूज्य जगत्-हित नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जगत्-हित-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०१३॥

जगत् प्रकाशित आप हो, एक रूप भगवान।
एकप्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री एकप्रभु-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०१४॥

परम शुद्ध उपयोग को, धारो दर्शनज्ञान।
परम पूज्य दोरूप को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री द्विरूप-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०१५॥

रत्नत्रय को धारके, शुद्ध हुए भगवान।
तीनरूप प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री त्रिरूप-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०१६॥

धारो अनन्त रूप में, चतुष्टयों के धाम।
चाररूप प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री चतुःरूप-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०१७॥

कल्याणक के रूप हो, परमेष्ठी भगवान।
पंचरूप प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पंचरूप-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०१८॥

छह द्रव्यों को जानते, यथार्थ रूप भगवान।
परम पूज्य षट्रूप को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री षट्रूप-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०१९॥

सात तत्त्व को जानते, रखो नयों का ज्ञान।
सप्तरूप प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सप्तरूप-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०२१॥

सम्यक्त्वादि आठ गुण, धार रहे भगवान।
आठरूप प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टरूप-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०२१॥

नव नव केवल लब्धियाँ, धार रहे भगवान।
नौरूप प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥।

ॐ ह्रीं श्री नवरूप-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०२२॥

पूज्य महाबल आदि दस, भव धारो भगवान।
परम पूज्य दसरूप को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री दसरूप-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०२३॥

सहस्रनाम के पाठ से, भक्त बने भगवान।
अर्घ्य चढ़ा हम पूजते, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सहस्रनाम-अरिहन्तचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०२४॥

पूर्णार्घ्य (जोगीरासा)

घातिजयि अरिहन्त जिनेश्वर, समवसरण के स्वामी।
दिव्यदेशना के अधिकारी, ध्यानी अंतर्यामी॥
जिन दर्शन से मन न भरे तो, इन्द्र सहस्र नयना से।
सहस्रनाम लेकर प्रभु पूजें, हम पूजें श्रद्धा से॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं चतुर्विंशत्यधिकसहस्रगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये पूर्णार्घ्यं...।

(जाप्य मंत्र)

ॐ ह्लीं श्री अरिहन्तचक्रेभ्यो नमः। अथवा

ॐ ह्लीं णमो अरिहन्ताणं। अथवा **ॐ ह्लीं अर्हं नमः।**

जयमाला

(ज्ञानोदय)

आचार्यों ने नाम आपके, एक हजार आठ गाए।
जो इनको गाए ध्याएगा, स्मरण शक्ति शुद्ध पाए॥
यद्यपि हमने नाम भजे पर, पूर्ण कौन वह कह पाए।
क्योंकि अगोचर तुम वचनों के, फिर भी स्तोता फल पाए॥१॥
अतः आप ही जगत बन्धु हो, जगत वैद्य जग रक्षक हो।
पूज्य आप ही जगत हितैषी, इसीलिए तो नमोऽस्तु हो॥
मुख्य रीति से जगत प्रकाशक, अतः आप ही एक रहे।
दर्शन तथा ज्ञान उपयोगी, नाथ! आप दो रूप रहे॥२॥
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरितमय, तीन रूप प्रभु आप रहे।
अनन्तचतुष्टयों को धारो, चार रूप सो आप रहे॥
परमेष्ठी या कल्याणक के, पाँच रूप भी आप रहे।
षट् द्रव्यों के ज्ञाता हो सो, नाथ! आप छह रूप रहे॥३॥
सात तत्त्व या नय के ज्ञाता, सात रूप भी आप रहे।
सम्यक्त्वादि आठ गुणी सो, आठ रूप भी आप रहे॥
नव केवललब्धि को धारो, नाथ! आप नौ रूप रहे।
धरो महाबल आदि दसों भव, अतः आप दस रूप रहे॥४॥
जो भी सहस्रनाम स्तोत्र का, पाठ जाप चिन्तन करते।
हर कल्याणक पाकर वे तो, निज को निज पावन करते॥
अतः भक्त जो इन्द्रविभूति, तथा पुण्य पाना चाहें।

वो जन सहस्रनाम को पढ़के, चिन्तन मंथन कर ध्याएँ॥५॥
श्री अरिहन्तचक्र विधान में, सहस्रनाम के आश्रय से।
अरिहन्तों की किए अर्चना, मिले शान्ति इस आशय से॥
करुणाभाव जिनेश्वर हो तुम, करुणाधार बहाओ तो।
'विद्या' गुरु के 'सुव्रत' मुनि को, प्रभु अरिहन्त बनाओ तो॥६॥

ॐ ह्रीं श्री णमोअरिहन्ताणं चतुर्विंशत्यधिकसहस्रगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

अरिहन्तचक्र स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, अरिहन्तचक्र जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

महासमुच्चय अर्घ्य

(दोहा)

अरिहन्तों की गुण कथा, कह पाएंगे कौन।
विद्या का वरदान पा, सुव्रत रहे न मौन॥

(रोला)

सुव्रत रहे मौन रचे अरिहन्तचक्र को।
दुनियाँ को कर गौण, हरें दुख पंथ चक्र को॥
कर सम्पूर्ण विधान-यही विश्वास जगाएँ।
होंगे ना हैरान, पुण्य इस तरह कमाएँ॥
गूँगे बोलें बोल, पंगु कर पर्वत सैर।
अंधे नयना खोल, अभुज सागर जल तैरें॥

ऐसा आशीर्वाद मिले, यह अनुष्ठान कर।
अनेकान्त स्याद्वाद, सजाएँ आत्मध्यान कर॥

(सोरठा)

दो हजार चालीस, अर्घ्य चढ़ाके भक्त हम।
पाएँ प्रभु आशीष, होकर प्रभु अनुरक्त हम॥
अरिहन्तों का गान, शक्ति-भक्ति सुख ज्ञान दे।
'सुव्रत' का कल्याण, करवाने वरदान दें॥

ॐ ह्रीं श्री णमो अरिहन्ताणं चत्वारिंशदधिकद्विसहस्त्रगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो महासमुच्चय अर्घ्यं...।

महासमुच्चय जयमाला

(दोहा)

प्रभु अरिहन्त जिनेन्द्र हैं, तीन लोक के नाथ।
जयमाला जिनकी कहें, कर नमोऽस्तु नत माथ॥

(ज्ञानोदय)

तीन लोक के हर प्राणी से, जिन्हें पूज्यता प्राप्त हुई।
राग-द्वेष संसार भ्रमण की, जिनकी राह समाप्त हुई॥
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, जिनकी आतम आप्त हुई।
जिनके समवसरण की छाया, भक्तों पर पर्याप्त हुई॥१॥
फलतः उनको मिली सफलता, समवसरण आसीन हुए।
ऐसे अरिहन्तों की गाथा, गाने में हम लीन हुए॥
पंचमकाल मिला हमको तो, समवसरण ना साध्य मिला।
लेकिन बिम्ब शास्त्र गुरुओं का, शुभ मंगल सान्निध्य मिला॥२॥
यह सान्निध्य प्राप्त कर हमको, वीतरागता पाना है।
राग-द्वेष संसार भ्रमण की, हमको राह मिटाना है॥
जिसके बिन तो स्थावर की, पीड़ा हमने झेली थी।

जिसके बिन तो त्रस काया में, आतम दुख से खेली थी॥३॥
जिसके बिन तो चौरासी के, चक्कर हमने काटे थे।
जिसके बिन तो चउ गतियों के, करते सैर-सपाटे थे॥
जिसके बिन तो मोह दशा में, हमने क्रोध जताया था।
जिसके बिन तो जगह-जगह पर, तिरस्कार भी पाया था॥४॥
इतना सब अपमान सहन कर, सभी तरह के दुख भोगे।
अब तो इनसे बचने स्वामी, समवसरण सुख कब दोगे ॥
समवसरण का सुख पाकर, हम सिद्ध अवस्था पाएंगे।
श्री अरिहन्तचक्र विधान कर, जीवन सफल बनाऐंगे॥५॥
जब तक अर्हत् सिद्ध बनें ना, मोक्षमार्ग के ग्रन्थ पढें।
नवदेवों की करें अर्चना, मुनियों का सत्संग करें॥
दोष नहीं हित-मित-प्रिय बोलें, पिछी कमण्डल ले डोलें।
'विद्या' के मुनि 'सुव्रतसागर', मोक्षमहल के पट खोलें॥६॥

(सोरठा)

अरिहन्तचक्र विधान, कर अरिहन्तों को भजे।
कर नमोऽस्तु गुणगान, अपना शुद्धातम सजे॥

ॐ ह्रीं श्री णमो अरिहन्ताणं चत्वारिंशदधिकद्विसहस्त्रगुणी अरिहन्तचक्रेभ्यो महासमुच्चय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

अरिहन्तचक्र स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, अरिहन्तचक्र जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

आरती

(लय–भक्ति बेकरार है...)

समवसरण सुखकार है, भक्ति अपरम्पार है।
श्री अरिहन्तचक्र विधान की, आरती बारम्बार है॥
णमोकार के प्रथम पूज्य हो, परमेष्ठी अंतर्यामी। परमेष्ठी..
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, समवसरण श्री के स्वामी। समवसरण.
समवसरण सुखकार...
घातीकर्म के परम विजेता, कर्म तिरेसठ नाश किए। कर्म..
प्रभु धारें छ्यालीस मूलगुण, हम दर्शन की आस लिए।प्रभु..
समवसरण सुखकार...
जो पूजे अरिहन्तचक्र वो, पाप हरे यश-धन पाए। पाप...
दीक्षा ले फिर स्वर्ग भोगकर, मुनि अरिहन्त दशा पाए। मुनि...
समवसरण सुखकार...
गंधकुटी में सिंहासन पर, कमलासन के ऊपर हो। कमलासन.
मुक्तिवधू से करें स्वयंवर, पहुँचे लोक शिखर पर हो॥ पहुँचे...
समवसरण सुखकार...
'सुव्रत' चरण शरण में आए, पूजा करें प्रार्थनाएँ। पूजा...
पाप हरो सुख शान्ति करो, प्रभु मंगल करें भावना में॥
समवसरण सुखकार...

❑ ❑ ❑